विशेष रचनाकार : प्रेमचंद - I

एम.ए. (हिंदी) तृतीय सेमेस्टर : पेपर - 5

आलोचनात्मक प्रश्न

1. प्रेमचन्द का जीवन-वृत्त
('कलम का सिपाही' एवं 'प्रेमचन्द घर में' के विशेष संदर्भ में)

प्रश्न 1. अमृतराय रचित जीवनी 'कलम का सिपाही' तथा शिवरानी देवी द्वारा रचित जीवनी 'प्रेमचन्द घर में' को आधार बनाते हुए प्रेमचन्द के जीवन-वृत्त का विवेचन कीजिए।

अथवा

प्रेमचन्द के जीवन-वृत्त पर एक आलोचनात्मक निबन्ध लिखिए।

उत्तर–1. प्रेमचन्द का जीवन–प्रेमचन्द के जीवन-वृत्त के बारे में अनेक विद्वानों ने कुछ सूचनाएँ दी हैं। परन्तु अमृतराय द्वारा लिखित जीवनी **कलम का सिपाही** तथा शिवरानी देवी द्वारा रचित जीवनी **प्रेमचन्द घर में** दो ऐसी प्रमुख जीवनियाँ हैं, जिनके आधार पर प्रेमचन्द का जीवन-परिचय सहज रूप में दिया जा सकता है। अमृतराय प्रेमचन्द का बेटा है और शिवरानी देवी उनकी दूसरी पत्नी है। अतः इन दोनों ने प्रेमचन्द को बहुत समीप से देखा था। वे उनके व्यक्तित्व, स्वभाव, रुचि आदि को अच्छी प्रकार से जानते थे। स्वयं प्रेमचन्द ने एक स्थल पर लिखा है–

"मेरा जीवन सपाट, समतल मैदान है, जिसमें कहीं-कहीं गड्ढे तो हैं पर टीलों, पर्वतों, 'घने जंगलों' गहरी घाटियों और खंडहरों का स्थान नहीं है। जो सज्जन पहाड़ों की सैर के शौकीन हैं उन्हें तो यहाँ निराशा ही होगी।" इसी प्रकार अमृतराय ने **कलम का सिपाही** में प्रेमचन्द के जीवन और व्यक्तित्व के बारे में लिखा है–**"प्रेमचन्द की सरलता सहज है। उसमें कुछ तो इस देश की पुरानी मिट्टी का संस्कार है, कुछ उनका नैसर्गिक शील है, संकोच है, कुछ उनकी गहरी जीवन-दृष्टि और कुछ उनका सच्चा आत्मगौरव हैं, जो किसी तरह के आत्म-प्रदर्शन या विज्ञापन को उसके नजदीक घटिया बना देता है।"**

(2) जन्म एवं परिचय–प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई, 1880 को बनारस के समीप लमही नामक गाँव में हुआ। वे एक साधारण और सामान्य परिवार से थे। उनके दादा का नाम गुरू सहाय राय था, जो कि पेशे से पटवारी थे। उनके पिता का नाम अजायबराय था और वे पोस्टमास्टर थे। उनकी माता का नाम आनन्दी देवी था। वे कायस्थ श्रीवास्तव थे। उनकी तीन बहनें थीं, जिनमें से दो तो मर गईं और तीसरी बहुत दिनों तक जीवित रही। आठ वर्ष की आयु में आनन्दी देवी का देहान्त हो गया, क्योंकि प्रेमचन्द का जन्म तीन बहनों के बाद हुआ था, इसलिए उनको तैतंर कहा जाता था। उनकी माँ तो हमेशा बीमार रहती थी। पिता ने प्रेमचन्द का नाम धनपत राय रखा था। परन्तु चाचा ने उनका नाम मुंशी नवाबराय रखा।

प्रेमचन्द को देखने से लगता था कि वे नितान्त साधारण वेशभूषा धारण करते थे। उनकी धोती उटंगी हुई होती थी और वे साधारण-सा कुर्त्ता पहनते थे। यदि वे किसी के सामने आ जाते तो कोई न विश्वास करता था कि वे हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक मुंशी प्रेमचन्द हैं। जब साधारण लोगों के बीच में वे जाते, तो कोई उनका नाम, हाल-चाल या गाँव पूछ लेता और इसी बीच कोई हंसी की बात आ जाती तो वे जोरदार ठहाका लगाकर हंस पड़ते। कभी-कभी वे शरारती बच्चे के समान लगते थे।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि प्रेमचन्द के पिता अजायबराय डाकखाने में दस रुपए की नौकरी पर डाक मुंशी थे। अवकाश-प्राप्ति के समय उनका वेतन चालीस रुपए तक पहुँच गया था। धनपत अथवा नवाब का बचपन ग्रामीण किसान

के बच्चों के साथ बीता। वे तरह-तरह की शरारतें करते थे। प्रायः खेत में घुसकर गन्ने तोड़कर ... गिराना, गिल्ली-डण्डा खेलना, इमली की गुठलियों और महुए की गुठलियों से खेलना, डाकिया कजाकी के कन्धों पर सवारी क... उनके बाल्यावस्था के रोजमर्रा के काम थे वे जब मौलवी साहब के यहाँ फारसी पढ़ने जाते थे तो तरह-तरह की शरारतें करते... हंसी-मजाक करते थे, मटरगस्ती करते थे। कभी-कभार वे घर से पैसे अथवा खाने-पीने का सामान भी चुरा लेते थे। वे मार खा... थे, पर जल्दी भूल जाते थे। शिवरानी देवी ने उनकी बाल्यावस्था की एक घटना का इस प्रकार उल्लेख किया है–"एक बार ... बात है–कई लड़के मिलकर नाई-नाई का खेल खेल रहे थे। आपने एक लड़के की हजामत बनाते हुए बाँस की कमानी से उस... कान ही काट लिया। उस लड़के की माँ झल्लाई हुई आपकी माँ से उलाहना देने आई। आपने जैसे ही उसकी आवाज सुनी खिड़... के पास दुबक गए। माँ ने दुबकते हुए आपको देख लिया था, पकड़कर चार झापड़ दिए।"

माँ के देहान्त के बाद प्रेमचन्द के पिता की बदली जीमनपुर में हुई। यहाँ पहुँचकर उन्होंने दूसरा विवाह कर लिया, पर... विमाता का व्यवहार धनपत के प्रति अनुकूल नहीं था। इस सम्बन्ध में शिवरानी देवी ने लिखा भी है–"कुछ दिनों के बाद चा... (विमाता) आई। यह शादी दादी को अच्छी नहीं लगी। चाची के साथ उनके भाई विजयबहादुर भी आए। चाची आते ही मालकि... बनी। चाची विजयबहादुर को बहुत मानती थी, मुझे कम। पिताजी डाकखाने से जो भी चीज खाने के लिए लाते, चाची की इ... रहती कि वे उन्हें खुद खाए। वे उनकी लाई हुई चीजों को पिता के सामने रखती तो पिता जी बोलते मैं ये चीजें बच्चों के लि... लाता हूँ। जब चाची न मानती तो पिता जी झल्लाकर बाहर चले जाते।"

इस प्रकार विषम पारिवारिक परिस्थितियों में प्रेमचन्द की बाल्यावस्था समाप्त हुई। जब वे 17 वर्ष के हुए तब उनके पि... अजायबराय का 1897 ई. में देहान्त हो गया।

(3) शिक्षा–पाँच वर्ष की आयु में प्रेमचन्द की विधिवत् पढ़ाई आरम्भ हुई। तेरह वर्ष तक तो वे केवल उर्दू और फ़ार... में ही पढ़ाई करते रहे, बाद में वे हिन्दी भी पढ़ने लगे। अपने बलबूते पर ही उन्होंने शिक्षा को आगे बढ़ाया। गोरखपुर के मिश... स्कूल से उन्होंने आठवीं कक्षा उत्तीर्ण की। बाद में उन्होंने बनारस के **क्वीनस कॉलेज** में नौवीं कक्षा में प्रवेश लिया। प्रेमचन्द ... पुत्र अमृतराय ने अपनी पुस्तक **'कलम का सिपाही'** में लिखा भी है **"पाँव में जूते न थे, देह पर साबित कपड़े न थे। हेडमास्टर ... फीस माफ कर दी थी। इम्तिहान सिर पर था और मैं बाँस के फाटक पर एक लड़के को पढ़ाने जाता था। पढ़ाकर छः बजे छुट्... पाता। वहाँ से मेरा घर देहात में पाँच मील पर था, तेज चलने पर भी आठ बजे से पहले घर न पहुँच सकता था।"** पैसों की तं... के चलते उन्हें पढ़ाई को बीच में ही छोड़ना पड़ा। बड़ी बाधाओं का सामना करते हुए, उन्होंने जैसे-तैसे मैट्रिक की परीक्षा पा... की, लेकिन वे किसी भी पड़ाव पर रुके नहीं और न ही उन्होंने हार मानी। सन् 1919 में उन्होंने पुनः अध्यपन करके बी.ए ... डिग्री प्राप्त की।

स्कूली शिक्षा के साथ-साथ उन्होंने एक स्थानीय बुक सैलर के यहाँ नौकरी करते हुए मौलाना शाह, पंडित रत्नानाथ सरशा... मिर्जा रुसवा, मोहम्मद अली आदि की कथा पुस्तकें पढ़ डालीं। यही नहीं, उन्होंने रोनाल्ड के उपन्यासों का अनुवाद पढ़ा, पुराणों ... उर्दू अनुवाद को पढ़ा और तिलस्में-होशरूबा के कई खंडों को पढ़ डाला। आरम्भ में प्रेमचन्द पुस्तकों के द्वारा कथा की काल्पनि... दुनिया में उलझे रहे, जो कि यथार्थ से बहुत दूर थी। मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद वे एक स्थानीय विद्यालय में शिक्ष... के पद पर नियुक्त हो गए। नौकरी के काल में इन्होंने इंटर के साथ-साथ बी.ए की परीक्षा पूरी की।

(4) विवाह एवं सन्तान–प्रेमचन्द के कुल दो विवाह हुए। उनका प्रथम विवाह पन्द्रह वर्ष की आयु में 1895 ई. में हुआ... पुराने रिवाजों के चलते पिता के दबाव के कारण उनको यह विवाह करना पड़ा। उनकी पत्नी स्वभाव से झगड़ालू और शक्ल ... बदसूरत थी। पिता जी ने सिर्फ अमीर परिवार की लड़की देखकर ही प्रेमचन्द का विवाह कर दिया था। प्रेमचन्द ने शीघ्र ही अपन... इस पत्नी से नाता तोड़ दिया और उससे प्रेमचन्द की कोई सन्तान भी नहीं हुई। 'प्रेमचन्द घर में' शिवरानी देवी ने लिखा भ... है–**"वह बदसूरत तो थी ही, उसके साथ जुबान की भी मीठी न थी। यह इन्सान को और भी दूर कर देता है।"**

प्रेमचन्द ने अपना दूसरा विवाह आर्य समाजी विधि के अनुसार शिवरानी देवी से 1906 ई. में किया जो कि बाल... विधवा थी। शिवरानी देवी के पिता का नाम मुंशी देवी प्रसाद था। वे फतेहपुर जिला मौजा सलीमपुर डाकखाना कनवार ... निवासी थे। जब प्रेमचन्द ने दूसरा विवाह करने का निर्णय लिया तो उन्होंने पत्र में एक विज्ञापन दिया। फलस्वरूप प्रगतिशील... विचारों के चलते प्रेमचन्द ने मुंशी देवी प्रसाद से सम्पर्क किया और इस प्रकार उनका यह दूसरा विवाह सम्पन्न हुआ। शिवरानी... देवी ने प्रेमचन्द घर में लिखा भी है–**"आप मेरे पिता को पसंद आए। उन्होंने आपको वरच्छा और किराए के रुपए दिए। मुझे यह भी मालूम नहीं कि मेरी शादी कहाँ हो रही है। मेरी शादी में आपकी चाची वगैरह किसी की राय नहीं थी।** मगर यह...

आपकी दिलेरी थी। आप समाज का बंधन तोड़ना चाहते थे। यहाँ तक कि आपने अपने घरवालों को भी खबर नहीं दी। मेरी शादी ई। शादी में ही मैं घर आई और चौदह रोज रही। मेरी तबीयत लगती न थी, क्योंकि मेरी माँ मर चुकी थी। एक मेरा भाई पाँच रस का था। इसको मैं उसी तरह प्यार करती थी, जैसे माँ अपने बच्चे को करती। फागुन में मेरी शादी हुई, चैत्र में आप सब ुटी इंस्पैक्टर हो गए।"

प्रेमचन्द के दूसरे विवाह में छोटे भाई महताब के अतिरिक्त और किसी रिश्तेदार ने भाग नहीं लिया। केवल दो-चार उनके त्र थे और कुछ हमजोली थे, जिनमें दयानारायण भी था। कारण यह है कि उस जमाने में विधवा से विवाह करना एक बड़ा ही ान्तिकारी कदम उठाना था और प्रेमचन्द ने यह कदम उठाया। इस विवाह के पश्चात् प्रेमचन्द की तीन संतानें हुईं। कमला देवी का जन्म 1912 में, श्रीपतराय का 1916 ई. में और अमृतराय का जन्म सन् 1921 में हुआ।

(5) प्रेमचन्द का कार्यक्षेत्र एवं लेखन–प्रेमचन्द शिक्षा विभाग में सब-इन्स्पैक्टर थे जिससे अध्यापन का काम भी जुड़ा हुआ था। इसके अतिरिक्त वे लेखन तथा पत्रकारिता में भी रुचि लेने लगे। जब वे नौवीं कक्षा में पढ़ते थे, तो पढ़ाई के साथ-साथ वे ट्यूशन भी देने लग गए थे। इस सन्दर्भ में अमृतराय ने लिखा भी है–"हेडमास्टर ने फीस माफ कर दी थी, इम्तिहान सिर पर था और मैं बाँस के फाटक पर एक लड़के को पढ़ाने जाता था। पढ़ाकर छः बजे छुट्टी पाता। वहाँ से मेरा घर देहात में पाँच मील पर था। तेज चलने पर भी आठ बजे से पहले घर नहीं पहुँच सकता था।" मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद प्रेमचन्द चुनार के एक मिशन स्कूल में 18 रुपए मासिक वेतन पर शिक्षक के पद पर नियुक्त हो गए। 1900 ई. में उनकी नियुक्ति बैराज के जिला स्कूल में हुई, जहाँ से उनका तबादला किताबगढ़ में हुआ। यहाँ से वे 1905 ई. में खानपुर पहुँच गए। इसी समय उन्होंने लेखन कार्य भी शुरू कर दिया। मुंशी दयानारायण द्वारा सम्पादित 'जमाना' नामक उर्दू पत्रिका में वे नवाबराय के नाम से लिखने लगे। 1906 ई. में दूसरा विवाह किए हुए अभी एक महीना ही बीता था कि वे शिक्षा विभाग में सब-इंस्पैक्टर बन गए। लेकिन उनका लेखन कार्य बराबर चलता रहा। सन् 1907-08 में उनका कथा संग्रह 'सोजे-वतन' प्रकाशित हो गया। यद्यपि प्रेमचन्द अपने मूल नाम से हटकर नवाबराय के नाम से लेखन कर रहे थे, परन्तु सरकार को शीघ्र ही यह पता चल गया कि धनपत ही नवाबराय है। सरकार ने राजद्रोह का आरोप लगाते हुए तत्काल धनपत राय को तलब किया। इस कथा संग्रह पर रोक लगा दी गई और उनके लिखने पर भी पाबंदी लगा दी गई। किसी-न-किसी तरह से उनकी नौकरी बच गई। इस सन्दर्भ में शिवरानी देवी ने लिखा भी है–**"मेरे आने से पहले ही आपकी साहित्य सेवा जारी थी। आपका पहला उपन्यास 'कृष्णा' प्रयाग से प्रकाशित हो चुका था। मेरी शादी के साल ही आपका दूसरा उपन्यास 'प्रेमा' निकला, जिसका नाम आगे चलकर 'विभव' हुआ। मेरी शादी के एक वर्ष बाद आपका कहानी संग्रह 'सोजे वतन' प्रकाशित हुआ। उस पर मुकदमा भी चला।"** इस घटना के फलस्वरूप प्रेमचन्द ने अब खुलकर लिखना आरम्भ कर दिया। सन् 1914 ई. में उनका स्थानान्तरण अमीरपुर से बस्ती में हो गया। बीमारी के कारण उन्होंने निरीक्षण का कार्य छोड़ दिया और कम वेतन लेकर शिक्षक के रूप में काम करने लगे। सन् 1916 ई. में प्रेमचन्द को गोरखपुर में स्थानान्तरित कर दिया गया, जहाँ उनका सम्पर्क महावीर प्रसाद पोद्धार से हुआ। वे कोलकाता में हिन्दी पुस्तक एजेंसी नामक प्रकाशन संस्था चलाते थे। इसी संस्था द्वारा उनका पहला कहानी संग्रह 'सत् सरोज' और 'बाजारे हुस्न' का हिन्दी रूपान्तरण 'सेवा सदन' के नाम से प्रकाशित किया गया। आगे चलकर 1919 ई. में उन्होंने जो उर्दू में 'गोशाए आफियतए की रचना की थी, उसका रूपान्तरण 'प्रेमाश्रम' के नाम से प्रकाशित किया गया। गाँधी जी से प्रभावित होने के कारण उन्होंने सन् 1921 में सरकारी नौकरी से त्याग पत्र दे दिया।

(6) आजीविका का प्रश्न–अब प्रेमचन्द के सामने निवास और आजीविका के प्रश्न उत्पन्न हुए। पहले तो वे कुछ दिन महावीर प्रसाद पोद्धार के गाँव मानी राम में रहे। उनके मन में प्रेस लगाने का विचार था, परन्तु उन्होंने कपड़े का कारखाना खोल दिया जिसमें आठ करघे चलते थे। यही नहीं, चरखे की एक दुकान भी खोल दी गई किन्तु यह व्यवसाय प्रेमचन्द को रास नहीं आया। अतः शीघ्र ही इसे बन्द करके वे कानपुर के मारवाड़ी विद्यालय में प्रधानाध्यापक के पद पर नौकरी करने लगे। लेकिन 22 फरवरी, 1922 को विद्यालय के मैनेजर से उनका झगड़ा हो गया।

मारवाड़ी विद्यालय को छोड़ने के बाद 21 मार्च को वे 'मर्यादा' के सम्पादक नियुक्त हुए। 22 जून को उन्होंने यहाँ से भी त्यागपत्र दे दिया और काशी विद्यापीठ में हेडमास्टर के पद पर काम करने लगे। 22 जुलाई, 1922 को यह नौकरी भी चली गई। अब अपने गाँव लमही में घर बनाना आरम्भ कर दिया और 1923 में बनारस में 'सरस्वती' प्रेस की स्थापना की। यह प्रेस भी ठीक से चल नहीं रही थी और प्रेमचन्द को लगातार हानि उठानी पड़ रही थी। इस प्रकार उनका जीवन चलता रहा। अगस्त, 1924 को वे गंगा पुस्तक माला के साहित्यिक सलाहकारण बनकर लखनऊ में काम करने लगे। परन्तु अगस्त, 1925

को चौगाने हस्ती की रचना करने लगे, जो गंगा पुस्तक माला लखनऊ से छपा। अब उन्होंने इसी वर्ष गंगा पुस्तक माला की नौकरी छोड़कर बनारस जाने का फैसला लिया। लगभग दो सालों तक बनारस में रहे और बाद में 15 फरवरी, 1927 में माधुरी के सहकारी सम्पादक बनकर पुनः लखनऊ आ गए। अब बनारस से पत्नी और बच्चे भी लखनऊ उनके पास आकर रहने लगे। 10 जनवरी, 1931 को नवल किशोर प्रेस के मालिक विष्णु नारायण भार्गव का देहान्त हो गया। एक सोची-समझी साजिश के अन्तर्गत प्रेमचन्द का तबादला करके प्रेस के बुक डिपो में लगा दिया गया। अतः अक्तूबर, 1931 को नवल किशोर की नौकरी को उन्होंने त्याग दिया। नवम्बर के आरम्भ में प्रेमचन्द जीवन में पहली बार भ्रमण करने की इच्छा से दिल्ली गए। इसके पश्चात् वे बनारस में रहकर लगभग डेढ़ वर्ष तक हंस जागरण और संस्कृति प्रेस की देखभाल करने लगे। इसके साथ-साथ वे साहित्य रचना भी कर रहे थे। 1 जून, 1934 को उन्हें अजन्ता सिनेटोन कम्पनी के मालिक भवनानी का निमन्त्रण मिला और वे मुम्बई चले गए। इस अवधि में उन्होंने मद्रास, मैसूर, बंगलौर, पूना आदि की यात्राएँ कीं। परन्तु जब सिनेटोन कम्पनी बन्द हो गई, तो वे पुनः बनारस लौट आए। मुम्बई में रहते हुए उन्होंने गोदान लिखना आरम्भ कर दिया था और बनारस लौटने के बाद यह रचना पूरी हुई। अब प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ साहित्यकारों में स्थान पा चुके थे।

(7) रोग ग्रस्त जीवन एवं देहान्त–प्रेमचन्द बाल्यावस्था से ही रोगग्रस्त जीवन व्यतीत कर रहे थे। जीवन के काफी लम्बे भाग तक वे पेट के रोगों विशेषकर पेचिश के साथ समय काट रहे थे। अमीरपुर में रहते हुए उन्हें यह रोग लग गया था। आजीवन वे इस रोग से ग्रस्त रहे। इस रोग ने उनके व्यक्तित्व को भी प्रभावित किया। इस बारे में शिवरानी देवी ने लिखा भी है–"**इसके बाद वही आपका हाजमा खराब हुआ। हाजमे की खराबी की वजह से आपने वहाँ से तबादला करवा लिया। सोचा था कोई अच्छी जगह देंगे। मगर दी नेपाल की तराई बस्ती। यहाँ भी हाजमा खराब रहा। चार-छः महीना रहने के बाद मेरे पिता ने बुलाया और एक महीना प्रयाग में ही रहकर दवा कराई। मैं भी साथ थी। वहाँ से बिना अच्छे हुए ही आप फिर बस्ती चले आए।**" 16 जून, 1936 को लू लग जाने के कारण वे गम्भीर रूप से बीमार पड़ गए। उन्हें उलटियाँ होने लगी और पेट की नसें फूल गईं। खूनी दस्त आने लगे। उस दिन तो न वे भरपेट खाना खा सके। इधर प्रेमचन्द के प्रिय साहित्यकार मैक्सिम गोर्की की मृत्यु शजून को हो गई थी। आज के काल में जो शोक सभा हुई, उसमें प्रेमचन्द अपने द्वारा लिखा हुआ भाषण शोक सभा में नहीं पढ़ सके। 26 जुलाई, 1936 को वे भयंकर रूप से बीमार पड़ गए और इलाज कराने के लिए लखनऊ गए। परन्तु वहाँ से अधिक रोगग्रस्त होकर वापिस आ गए। 8 अक्तूबर, 1936 को इनका स्वर्गवास हो गया। इस सन्दर्भ में शिवरानी देवी ने लिखा भी है–"दूसरे दिन फिर आपको बेहोशी हुई। बहुत जोर का पाखाना भी हुआ। मैं उसे साफ करने के लिए आगे बढ़ रही थी कि भाई ने मेरा हाथ पकड़कर कहा-बहन वे अब नहीं रहे। कहाँ जाती हो?"

मैं खुलकर रो पड़ी और तभी से आज तक रो रही हूँ। अब मुझे किसका डर रहा। पाठको, आगे अब मुझसे लिखा नहीं जा रहा है। अब मेरी सारी जिंदगी रोने के लिए ही बच रही है।"

❖ ❖ ❖

2. प्रेमचन्द का कृतित्व और लेखकीय जीवन की विकार्स-रेखा

प्रश्न 2. प्रेमचन्द के कृतित्व और लेखकीय जीवन की विकास-रेखा पर संक्षिप्त निबन्ध लिखिए।

अथवा

प्रेमचन्द के कृतित्व का विवेचन करते हुए उनके लेखकीय जीवन की विकास-रेखा को रेखांकित कीजिए।

उत्तर– प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य के एक महानतम् साहित्यकार थे। उन्होंने केवल गद्य साहित्य में ही रचनाएँ लिखी हैं। परन्तु गद्य के क्षेत्र में उन्होंने न केवल सृजनात्मक साहित्य की रचना की है, बल्कि विचारक साहित्य भी लिखा है। मुख्य रूप से उन्होंने उपन्यासों और कहानियों की रचना की है, लेकिन गौण रूप से उन्होंने नाटकों और बाल कथाओं को भी लिखा है। यही नहीं, उन्होंने अपने अनेक लेखों तथा सम्पादकीय टिप्पणियों द्वारा साहित्य सम्बन्धी विवेचन किया है। इससे स्पष्ट होता है कि वे कथाकार होने के साथ-साथ एक सफल निबन्धकार और नाकटकार भी थे। यही नहीं, उन्होंने लगभग 125 पुस्तकों पर समीक्षाएँ भी लिखी हैं। यद्यपि उन्होंने जीवनी साहित्य भी लिखा है, परन्तु पत्रकारिता क्षेत्र में भी उनका विशेष योगदान रहा है। उन्होंने दो पत्रों का सम्पादन भी किया है। आरम्भ में वे उर्दू में उपन्यास और कहानियाँ लिखते थे, परन्तु बाद में वे हिन्दी में अपनी रचनाएँ लिखने लगे। उनके लेखकीय जीवन का निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत विवेचन किया जा सकता है–

1. उपन्यास साहित्य की रचना–प्रेमचन्द ने सेवा सदन (1918) के साथ हिन्दी जगत में प्रवेश किया। इससे पहले वे असरारे मआबिद (देव स्थान रहस्य) (1903-05), हम खुर्मा व हम सवाब (1906) किशना (1906), जलवए ईसार (1912) आदि उपन्यास लिख चुके थे। इसके बाद उन्होंने स्वयं हम खुर्मा व हम सवाब का हिन्दी में 1907 में अनुवाद किया जिसका नाम रखा प्रेमा अर्थात् दो सखियों का विवाह। जलवए ईसार का हिन्दी अनुवाद 'वरदान' के नाम से सन् 1921 में किया गया। परन्तु प्रेमचन्द को हिन्दी साहित्य में प्रतिष्ठा दिलाने वाला पहला उपन्यास सेवा सदन ही था जो कि पहले उर्दू में 'बाजारे हुस्न' के नाम से लिखा गया था।

इस प्रकार कुछ विद्वानों का मत है कि प्रेमचन्द का प्रथम उपन्यास 'सेवा सदन' को ही माना जाना चाहिए। प्रेमाश्रम (1922) और रंगभूमि (1925) बड़े आकार के दो उपन्यास प्रकाश में आए। पहले ये उर्दू में क्रमशः गोशए आफियत तथा चौगाने हस्ती के नाम से लिखे गए थे। प्रेमचन्द ने अपने उर्दू उपन्यासों का स्वयं हिन्दी में अनुवाद किया। कायाकल्प (1926) प्रेमचन्द का प्रथम उपन्यास था, जो मूल रूप में हिन्दी में लिखा गया था। सेवा सदन उपन्यास की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें संस्कृत भाषा के शब्दों का प्रयोग बिल्कुल नहीं हुआ। प्रेमचन्द की भाषा देवकी नन्दन खत्री की कथा भाषा के समान है, लेकिन फिर भी प्रेमचन्द ने इसे औपन्यासिक भाषा में बदल दिया। क्योंकि प्रेमचन्द उर्दू साहित्यकार भी थे, अतः उन्होंने अपने उपन्यासों में संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ-साथ तद्भव, उर्दू तथा अंग्रेजी के शब्दों का भी खुलकर प्रयोग किया। 'सेवा सदन' के बाद प्रेमचन्द के उपन्यासों का विवरण इस प्रकार है–

प्रेमाश्रम (1922), रंगभूमि (1925), कायाकल्प (1926), निर्मला (1927), गबन (1931), गोदान (1936), मंगलसूत्र (अधूरा उपन्यास) (1948)। इसी अवधि में उन्होंने अपने उर्दू उपन्यास जलवए ईसार का हिन्दी अनुवाद 'वरदान' (1921) शीर्षक से किया और प्रतिज्ञा (1929) शीर्षक से प्रेमा (1907) का हिन्दी रूपान्तरण भी लिखा।

2. प्रेमचन्द के उपन्यासों का विवेचन–प्रेमचन्द के उपन्यासों की प्रमुख विशेषता यह है कि उन्होंने पूर्ववर्ती उपन्यासकारों के समान पाठकों को सम्बोधित करना बन्द कर दिया। वे उपन्यासों में पाठकों के साथ ही रहते थे। अपने पूर्व उपन्यास साहित्य में उन्होंने कहीं पर भी यह जाहिर नहीं किया कि वे प्रत्यक्ष रूप से पाठकों के साथ हैं। जहाँ तक कथा प्रस्तुति की दृश्यात्मक तथा परिदृश्यात्मक प्रविधि का प्रश्न है, गोदान में यह कला चरम सीमा तक पहुँच गई है। पूर्ववर्ती उपन्यासों में पात्रों के वार्तालाप तक ही दृश्यात्मक प्रविधि सीमित थी, परन्तु गोदान में सघन नाटकीय प्रभाव है। यहीं पर किस्सा गोई का विकसित रूप देखने को मिलता है, क्योंकि इसमें परिदृश्यात्मक प्रविधि प्रस्तुत की गई है। पाठक यह अनुभव करता है कि वह किसी अन्य स्थान पर अवस्थित होकर पाठकों के कार्य व्यापार को न केवल देख रहा है बल्कि अनुभव भी कर रहा है। पाठक उपन्यास में व्यक्त किए गए विचारों को तत्काल ग्रहण कर लेता है। पाठकों की संवेदनाएँ पाठक के हृदय को छू लेती हैं। जहाँ आरम्भिक उपन्यासों में किस्सा गोई के रूप में दिखाई देते हैं, वहीं गोदान में वे किस्सा गोई से सर्वथा अलग हो गए हैं। यद्यपि प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों को चरित्र प्रधान नहीं माना परन्तु उपन्यास की परिभाषा देते हुए वे लिखते हैं–"मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्त्व है।" इस छोटी-सी परिभाषा में अत्यन्त व्यापक और विस्तृत अर्थ विद्यमान है। कारण यह है कि मानव चरित्र की ग्रंथियों को सुलझाना कोई सरल कार्य नहीं है बल्कि इन ग्रंथियों को सुलझाते-सुलझाते उपन्यास भी सीमाहीन हो जाता है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में यथार्थ के साथ कल्पना का संयोग किया है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रेमचन्द भले ही कलावादी नहीं थे, लेकिन वे कला की अवहेलना नहीं कर सके। इसे हम आदर्श और यथार्थ के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते हैं। 'साहित्य का उद्देश्य' नामक निबन्ध में, लिखते भी हैं–"यथार्थवाद यदि हमारी आँखें खोल देता है तो आदर्शवाद हमें उठाकर किसी मनोरम स्थान में पहुँचा देता है। इसलिए वही उपन्यास उच्चकोटि के समझे जाते हैं जहाँ यथार्थ और आदर्श का समावेश हो गया हो।" उर्दू के उपन्यासों की रचना के बाद प्रेमचन्द ने शीघ्र ही यह अनुभव प्राप्त कर लिया था कि संगठित कथानक ही उपन्यास का एकमात्र लक्ष्य नहीं हो सकता। इसी कसौटी के आधार पर उन्होंने 'सेवा सदन' की रचना की थी। इस उपन्यास के बाद उन्होंने कथानक को शिथिल करने का प्रयोग आरम्भ किया। प्रेमाश्रम में इसकी झलक मिल जाती है। परन्तु रंगभूमि, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि तथा गोदान में कथानक को शिथिल करने का स्पष्ट प्रयास देखा जा सकता है। उदाहरण के रूप में गोदान उपन्यास का कथानक असम्बद्ध है। इसमें ग्राम और नगर की दोनों कथाएँ समान्तर रूप से आगे बढ़ती हैं और उपन्यासकार ने इन दोनों कथाओं को कहीं जोड़ने का प्रयास नहीं किया, लेकिन ऐसा करते समय प्रेमचन्द ने न तो विषय को विकृत किया है और न ही पात्रों को। साथ ही उपन्यास की संरचना की उपेक्षा भी नहीं की गई। उन्होंने पात्रों के स्वगत अलाप अतीत का स्मरण, दृश्यों की पात्रों के मन प्रभाव के रूप में प्रस्तुति, उपचेतन के छाया दृश्य आदि के प्रयोग से कथानक को रोचक बना दिया है।

3. प्रेमचन्द के उपन्यासों की भाषा शैली–जहाँ तक प्रेमचन्द के उपन्यासों की भाषा का प्रश्न है, उनकी भाषा सहज, सरल और बोधगम्य है। प्रेमचन्द पूर्व उपन्यासों में दो प्रकार की भाषा शैलियाँ प्रचलित थीं। पहली भाषा-शैली संस्कृत गद्य काव्य का अनुकरण करती हुई दिखाई देती है और दूसरी सामान्य बोलचाल की भाषा थी। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में बोलचाल की गद्य शैली का ही प्रयोग किया। उनकी भाषा जन-साधारण की भाषा थी, जिसे उन्होंने तराशकर हीरे के समान चमकदार बनाया। उन्होंने अपनी भाषा में ऐसे शब्दों, मुहावरों तथा लहजे का प्रयोग किया जो देवकी नन्दन खत्री की भाषा से सर्वथा अलग और मैलिक है। सच्चाई तो यह है कि प्रेमचन्द पहले उर्दू में ही कहानियाँ और उपन्यास लिखते थे। इसीलिए उनकी भाषा का जुड़ाव आम जनता की भाषा से था। उनकी भाषा में मौलिकता, ताजगी और सादगी थी। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों और उपन्यासों को सजीव बनाने के लिए एक ऐसी भाषा का प्रयोग किया, जो शिक्षित और अशिक्षित सभी को अच्छी लगती है। उनकी भाषा पात्रानुकूल और प्रसंगानुकूल थी। जिन विद्वानों ने प्रेमचन्द पर यह आरोप लगाया है कि उन्होंने औसत ग्रामीण या नगर निवासियों की भाषा का प्रयोग किया है, वे सर्वथा गलत हैं। उनकी भाषा सृजनात्मक संभावनाओं से भरी हुई थी। उनकी भाषा में प्रत्येक शब्द के अर्थ में सामंजस्य दिखाई देता है। वे अभिधा, लक्षणा तथा व्यंजना शब्द शक्तियों का प्रयोग करते हुए दिखाई देते हैं। अनेक स्थलों पर उन्होंने लोक प्रचलित मुहावरों का सफल प्रयोग किया है।

प्रेमचन्द का कहानी साहित्य–प्रेमचन्द ने 300 से लेकर 400 कहानियों की रचना की है। इनमें कुछ तो उर्दू की कहानियाँ हैं। अधिकांश हिन्दी भाषा में लिखित कहानियाँ हैं।

(क) प्रेमचन्द की उर्दू कहानियों का विवेचन–सन् 1908 से लेकर सन् 1915 के बीच उन्होंने 40 कहानियाँ उर्दू में लिखीं, जिनके तीन संकलन **सोजे वतन** (1908), **प्रेम पचीसी भाग-1** (1914) और **भाग-2** (1918) में प्रकाशित हुए। उद्देश्य की दृष्टि से ये दो प्रकार की कहानियाँ कही जा सकती हैं। सोजे वतन की कहानियाँ देश-प्रेम की कहानियाँ हैं। यही कारण है कि ब्रिटिश सरकार ने इस संकलन को जब्त कर लिया था, परन्तु **विक्रमादित्य का तेगा, रानी सारन्धा, राजा हरदोल, आल्हा, राजहट, बांका जमींदार,** कहानियों में देश प्रेम की भावना को अप्रत्यक्ष रूप से अभिव्यक्त किया गया है। इन कहानियों में अतीत भारत के राजपुरुषों की वीरता, त्याग, आत्मबलिदान, सत्यनिष्ठा आदि गुणों के माध्यम से भारतवासियों को आलस्य त्यागकर जगाने का प्रयास किया गया है।

दूसरी कोटि की कहानियों में मध्यवर्गीय परिवारों की परिस्थितियों, धार्मिक संकीर्णताओं, पति-पत्नी के सम्बन्धों, मानवीय मूल्यों तथा पाखण्डों आदि का वर्णन किया गया है। **ममता, बड़े घर की बेटी, अमावस की रात, मनावन, अंधेर, खून सफेद** कुछ ऐसी ही कहानियाँ हैं। इनमें सिर्फ **एक आवाज** ऐसी कहानी है, जिसमें दलित संवेदना को व्यक्त किया गया है। **'शिकारी राजकुमार'** में कहानीकार ने समाज के अत्याचारियों, पाखण्डियों तथा रिश्वतखोरों के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द की है। प्रेमचन्द ने इन कहानियों के पात्रों का हृदय-परिवर्तन दिखाकर मानवीय मूल्यों में अपनी आस्था व्यक्त की है। इन कहानियों में जहाँ एक ओर कथा तत्व की बहुलता है वहाँ दूसरी ओर संयोग का सहारा लेकर घटनाओं को विकसित किया गया है। इसका मतलब यह है कि इनमें कार्य-कारण की ओर ध्यान नहीं दिया गया। इससे यह भी पता चलता है कि आरंभिक काल में कहानीकार अपरिपक्व था,

(ख) हिन्दी कहानियों का विवेचन–प्रेमचन्द की प्रथम हिन्दी भाषा में लिखित कहानी सौत है, जिसका प्रकाशन सन् 1915 में हुआ। यहाँ कहानी-कला में गुणात्मक परिवर्तन देखने को मिलता है। इसमें सपत्नियों के ईर्ष्या का वर्णन मनोवैज्ञानिक धरातल पर किया गया है। सन् 1916 से 1929 के मध्यकाल में प्रेमचन्द ने जो कहानियाँ लिखी हैं, उनमें राजनीतिक स्वर के स्थान पर विषयगत विविधता, सामाजिक चेतना तथा मनोवैज्ञानिक अन्तर्दृष्टि का सफल अंकन हुआ है। इस काल में प्रेमचन्द ने लगभग 200 कहानियाँ लिखीं जिनमें समकालीन तथा राजनीतिक समस्याओं का उद्घाटन किया गया है। 15 फरवरी, 1921 में प्रेमचन्द ने सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। फलस्वरूप अब वे औपनिवेशिक शासन की सेवा से मुक्त हो चके थे। सन् 1921 से पूर्व लिखित कहानियों में राजनैतिक स्वर अत्यधिक मन्द था। सन् 1921 के पहले की कहानियों में ग्रामीण जोवन के परिवारिक सम्बन्धों, मूल्य बोध तथा आदर्शवादिता की भावना को व्यक्त करने का प्रयास किया गया है। **ईश्वरीय न्याय, सज्जनता का दण्ड, पंच परमेश्वर, घमण्ड का पुतला, दो भाई, महातीर्थ, दुर्गा का मन्दिर, बेटी का धन, बैंक का दिवाला, आत्मा-राम, गृहदाह, बूढ़ी काकी, विध्वंस** आदि कहानियाँ 1916 से 1920 की अवधि में लिखी गई थीं।

(ग) देश-प्रेम तथा स्वाधीनता संग्राम का उद्घाटन–यह एक कटु सत्य है कि सन् 1921 के बाद प्रेमचन्द खुलकर देश प्रेम तथा स्वाधीनता संग्राम को आधार बनाकर कहानियाँ लिखने लगे। अजीब होली, लाल डाँट, दुस्साहस, आदर्श, विरोध, त्यागी का प्रेम, लाल फीता, सुहाग की साड़ी, हार की जीत, सप्त रक्षा, अधिकार, चिंता, चकमा, बोड़म, सत्याग्रह, इस्तीफा, माँ आदि कुछ इसी प्रकार की कहानियाँ हैं जिनमें प्रेमचन्द न केवल देश प्रेम की आवाज को बुलंद किया है, बल्कि स्वाधीनता आंदोलन का भी समर्थन किया है।

(घ) नारी जाति से सम्बद्ध कहानियाँ–प्रेमचन्द आरम्भ से ही नारी जाति की दयनीय स्थिति से अवगत और क्रोधित थे। अपने 'सेवा सदन' उपन्यास में लेखक इस समस्या के प्रति अपने विचार व्यक्त कर चुके थे। सन् 1923-25 में महिला पत्रिका 'चाँद' में उनकी लगभग डेढ़ दर्जन कहानियाँ प्रकाशित हुई। बाद में प्रेम प्रबोध के नाम से यह संग्रह प्रकाशित हुआ। इन कहानियों में परीक्षा, तैंतार, नैराश्य, निर्वासन, उद्धार, स्त्री और पुरुष, नरक का मार्ग, स्वर्ग की देवी, आँच की कसर, शूद्रा, धिक्कार आदि कहानियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन कहानियों में प्रेमचन्द ने नारी जाति की दयनीय स्थिति के सजीव चित्र अंकित किए हैं। परन्तु यह दुख की बात है कि प्रेमचन्द ने अपनी इन कहानियों में कहीं पर भी नारी विद्रोह की सूचना तक नहीं दी। इससे स्पष्ट होता है कि प्रेमचन्द नारी की दशा से व्यथित तो थे, लेकिन वे परम्परागत नारी व्यवस्था को स्वीकार करते थे।

प्रेमचन्द साम्प्रदायिक भेदभाव से मुक्त होने के कारण हिन्दुओं और मुसलमानों में एकता की स्थापना करना चाहते थे। नमक का दारोगा, पंच परमेश्वर, दफ्तरी, ढिकरी के रुपए, तांगेवाले की बड़ आदि ही कुछ ऐसी कहानियाँ हैं। प्रेमचन्द शुद्धि आन्दोलन के कट्टर विरोधी थे। चाहे कट्टरपंथी हिन्दू करे या मुस्लिम कट्टर पंथी। मंत्र, अहिंसा परमोधर्म; तथा जिहाद कुछ ऐसी ही कहानियाँ हैं। इसके बाद प्रेमचन्द ने ऐतिहासिक परिवेश और घटनाओं को आधार बनाकर भी कुछ कहानियाँ लिखी हैं, जिनमें **परीक्षा** (1923) तथा **शतरंज के खिलाड़ी** (1924) कुछ श्रेष्ठ कहानियाँ हैं। इसी प्रकार **धोखा, जुगनू की चमक, वफा का खंजर, राजे भक्त, फातिहा** आदि कुछ और कहानियाँ हैं जोकि ऐतिहासिक प्रसंगों पर आधारित हैं।

(ङ) समकालीन जीवन से सम्बद्ध कहानियाँ–सन् 1921 से 1929 के काल की कहानियों में **विध्वंस, गुप्त धन, मूठ, लोकमत का सम्मान, गृहदाह, बैर का** अन्त, निमन्त्रण, **शंखनाद, बाबा जी का भोग**, कजाकी मन्दिर, रामलीला, **सुजान** भक्त, **प्रेम की होली, मंत्र, सवा सेर गेहूँ, घास वाली, अलग्योझा** ऐसी ही कुछ उल्लेखनीय कहानियाँ हैं, जिनमें सामाजिक चेतना का खुलकर-अंकन किया गया है। मन्दिर तथा घास वाली कहानियों में दलितों के शोषण की ओर संकेत किया गया है। बाबा जी का भोग तथा सवा सेर गेहूँ कहानियों में धार्मिक शोषण का अंकन हुआ है।

(च) संवेदना और शिल्प पर आधारित कहानियाँ–सन् 1930 से 1936 के काल में प्रेमचन्द ने जो कहानियाँ लिखी हैं, वे हिन्दी कहानी साहित्य में विशेष महत्त्व रखती हैं। इस काल तक आते-आते प्रेमचन्द की कहानी का कथ्य और शिल्प सफलता की चोटियों को स्पष्ट करने लगता है। कथ्य की दृष्टि से भी इन कहानियों में समकालीन जीवन के विभिन्न पक्षों का उद्घाटन किया गया है। **जुलूस, पत्नी से पति, समरयात्रा, महकू, आहुति, शराब की दुकान, कौम का खादिम, होली का उपहार, जेल, आखिरी तोहफा, तवांग, कातिल** आदि कुछ ऐसी ही कहानियाँ हैं, जिनका प्रकाशन सन् 1930 से सन् 1931 में हुआ। इस काल में प्रेमचन्द ने देश प्रेम की भावना को लेकर भी कुछ कहानियां लिखीं। इनमें कुत्सा तथा अनुभव कहानियों का उल्लेख किया जा सकता है। अब प्रेमचन्द आदर्शवाद को त्यागकर यथार्थवाद की ओर मुड़ते दिखाई देते हैं। **पूस की रात, सद्गति, ठाकुर का कुआँ, ईदगाह, नशा, दूध का दाम, कफन,** लाटरी, **जुर्माना** आदि कहानियाँ हिन्दी कहानी साहित्य की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कहानियाँ हैं। इन कहानियों में आदर्श के स्थान पर यथार्थ का उद्घाटन किया गया है। साथ ही इनमें सामाजिक रूढ़ियों का खण्डन भी किया गया है। अगले चरण में प्रेमचन्द ने ग्रामीण मध्यवर्गीय जीवन का प्रमाणिक चित्र प्रस्तुत करते हुए मालिकों तथा मजदूरों के संघर्ष को रेखांकित किया है। दो कबरे, सुभागी, प्रेम का उदय, मृतक भोज, आखिरी टिला, स्वामिनी, नेउर, लेखक, दो बैलों की कथा, बेटों वाली विधवा, कुसुम, सौत, झाँकी, गुल्ली-डण्डा, ज्योति, कायर, बड़े भाई साहब, तथ्य आदि कुछ इसी प्रकार की कहानियाँ हैं।

5. प्रेमचन्द का नाटक साहित्य–प्रेमचन्द को उपन्यास साहित्य और कहानी साहित्य के लेखन से विशेष ख्याति मिली, लेकिन यह भी एक कटु सत्य है कि प्रेमचन्द ने 13 वर्ष की आयु में नाटक लिखने का प्रयास किया। इनका पहला नाटक **संग्राम** सन् 1923 को प्रकाशित हुआ। इस नाटक में जमींदार ठाकुर सबल सिंह और गाँव के किसान हलधर की पत्नी राजेश्वरी के प्रेम की कहानी है। सबल सिंह राजेश्वरी के पति हलधर को एक षडयंत्र करके जेल भिजवा देता है। इसी प्रकार राजेश्वरी बदले की भावना से जमींदार का प्रस्ताव मान लेती है और उसकी अलग हवेली में रहने लगती है। अब सबल सिंह का छोटा भाई राजेश्वरी पर आसक्त हो जाता है। फलस्वरूप सबल सिंह अपने छोटे भाई की हत्या का षड्यंत्र करता है। हलधर जब जेल से छूटकर आता है तो वह जमींदार और पत्नी दोनों से बदला लेने के लिए डाकू बन जाता है। कुल मिलाकर इसमें हलधर और उसकी पत्नी का पुनर्मिलन दिखाया गया है। इस नाटक में न केवल घटनाओं की बहुलता है, बल्कि सहयोगों की भरमार है। इसे सफल नाटक नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इसमें नाटकीय तनाव की भी कमी है। दूसरा नाटक 'कर्बला' का प्रकाशन 1924 में हुआ था, जोकि इस्लाम के इतिहास की क्रूर और करूण घटना पर आधारित है। लेखक इस नाटक के द्वारा हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच सद्भाव उत्पन्न करना चाहता था। इसमें लेखक ने यह तर्क दिया है कि कर्बला के युद्ध में हिन्दू योद्धाओं ने हजरत हुसैन

का पक्ष लेते हुए अपने प्राणों का बलिदान किया था, परन्तु न तो इस नाटक को हिन्दुओं ने पसन्द किया और न ही मुसलमानों ने, बल्कि मुस्लिम मित्रों के सख्त इतराज के फलस्वरूप दया नारायण निगम ने अपने पत्र 'जमाना' में कर्बला को प्रकाशित करने से मना कर दिया। कर्बला की भाषा पूर्णतया उर्दू थी, लेकिन यह नागरी लिपि में लिखा गया था। अतः इसे न तो हिन्दी पाठकों ने अधिक महत्त्व दिया और न ही उर्दू पाठकों ने। साथ ही यह रंगमंच को ध्यान में रखकर ही लिखा गया। दयानारायण निगम ने भी स्वीकार किया कि यह मात्र पाठ्य नाटक है।

'प्रेम की वेदी' नामक नाटक का प्रकाशन 1933 ई. में हुआ। इस नाटक का कथानक निम्न मध्यवर्गीय ईसाई परिवार से जुड़ा हुआ है। इस नाटक में माँ तो विवाह की परम्परागत मान्यताओं को मानती है, लेकिन बेटी का सोचना है कि विवाह करना पुरुष की गुलामी करना है। इस नाटक में मिस जेनी के द्वारा लेखक ने प्रबुद्ध समाज की आधुनिक नारी चेतना को वाणी दी है। परन्तु यह नाटक भी असफल रचना कही जा सकती है। सच्चाई तो यह है कि प्रेमचन्द को सफल नाटककार नहीं कहा जा सकता। एक तो रंगमंच से उनका कोई सम्बन्ध नहीं था, दूसरा उनके पास केवल कथाकार की प्रतिभा थी। भले ही प्रेमचन्द रामलीला में रुचि रखते थे, लेकिन उन्हें रंगमंच का कोई ज्ञान नहीं था। दूसरा कारण यह भी है कि पारसी रंगमंच ने दर्शकों की रुचि को विकृत कर दिया था। अतः प्रेमचन्द के ये नाटक प्रयोग के रूप में लेखन के उदाहरण बनकर रह गए।

6. प्रेमचन्द का जीवनी साहित्य–उर्दू पाठकों को ध्यान में रखते हुए प्रेमचन्द ने निम्नलिखित जीवनियाँ लिखी हैं–

अकबर, रणजीत सिंह, राजा मान सिंह, गेरीबाल्डी, डॉ. सर रामकृष्ण भंडारकर, गोपाल कृष्ण गोखले, राणा प्रताप, बदरुद्दीन तैयब जी, **मौ. अबदुल हलीम, राणा जंग बहादुर, राजा टोडरमल,** रेनॉल्डस, स्वामी विवेकानन्द, सर सैयद अहमद खाँ आदि जिन्हें जमाना के भिन्न-भिन्न अंकों में प्रकाशित किया गया। सन् 1940 में प्रकाशित कलम, तलवार और त्याग (दो भाग) शीर्षक संग्रह में भी इन जीवनियों को शामिल किया गया। इसके अतिरिक्त प्रेमचन्द की **महात्मा शेखसादी** (1917) और **दुर्गादास** (1938) आदि जीवनी-पुस्तकें भी प्रकाशित हुई थीं।

7. प्रेमचन्द का बाल साहित्य–जहाँ तक बाल साहित्य का प्रश्न है, इसमें प्रेमचन्द की आरम्भ से ही रुचि थी। उन्होंने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में **गुब्बारे पर चीता, जुड़वाँ भाई, पागल हाथी, पालतू भालू, वन मानुष की दर्दनाक कहानी,** वनमानुष, खान सामा, बाघ की खाल, मगर का शिकार, बिट्टू, शेर और **लड़का, साँप** आदि कुछ बाल कथाएँ प्रेमचन्द ने लिखी हैं। **जंगल की कहानियाँ** शीर्षक से इन बाल कथाओं का संग्रह 1936 में उपलब्ध होने लगा। इसी प्रकार **कुत्ते की कहानी** नामक बाल कथा स्वतन्त्र पुस्तक के रूप में सन् 1936 में छपी। यही नहीं, उन्होंने रामचर्चा नामक पुस्तक भी लिखी, जोकि उर्दू तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में प्रकाशित हुई। इसके साथ-साथ प्रेमचन्द ने मेरठ से अनुवाद करके बाल नीति कथा का संग्रह सम्पादित किया। 'कीड़े-मकौड़े' शीर्षक से एक पुस्तक का भी सम्पादन किया, जो बच्चों के लिए उपयोगी मानी जाती है।

8. प्रेमचन्द का पत्र साहित्य–प्रेमचन्द का पत्र साहित्य भी विशेष महत्त्व रखता है। आरम्भ में उन्होंने पत्राचार द्वारा उर्दू पत्रिकाओं के सम्पादकों और लेखकों से सम्पर्क किया। पत्र लिखने का उनका यह सिलसिला काफी समय तक चलता रहा। 1962 ई. में अमृतराय ने उनके पत्रों के दो संकलन **चिट्ठी-पतरी-एक तथा चिट्ठी पतरी-दो** नाम से पकाशित किए। चिट्ठी-पतरी। में प्रेमचन्द ने धनपतराय, नवाब राय और प्रेमचन्द के नाम से उर्दू के प्रसिद्ध मासिक पत्र जमाना के सम्पादक मुंशी दयानन्द निगम के नाम 282 पत्र लिखे थे। चिट्ठी पतरी 2 में भी पत्रों की संख्या 282 ही है।

इन पत्रों में प्रेमचन्द ने दयानन्द नारायण निगम के अतिरिक्त हुसैन रामपुरी, भदन्त आनन्द कौसल्यायन, इन्द्रनाथ मदान, इम्तियाज अली ताज, उपेन्द्रनाथ अश्क, उषा देवी मित्रा, केशोराम सब्बरवाल, जैनेन्द्र कुमार, दशरथ प्रसाद द्विवेदी, बनारसीदास चतुर्वेदी, महताब राय, विनोद शंकर व्यास, विष्णु प्रभाकर, शिवपूजन सहाय, श्रीराम वर्मा आदि दर्जनों व्यक्तियों को संबोधित किया। इन पत्रों से प्रेमचन्द के जीवन और व्यक्तित्व के सभी पक्षों का उद्घाटन हुआ। इन पत्रों के सहयोग से ही प्रेमचन्द की जीवनी लिखने में काफी सहायता प्राप्त हुई है।

9. प्रेमचन्द का अनूदित साहित्य–प्रेमचन्द ने न केवल सृजनात्मक साहित्य निर्माण किया, बल्कि अनुवाद कार्य में भी काफी रुचि ली। आरम्भिक दिनों में प्रेमचन्द टॉलस्टॉय कहानियाँ पढ़ते रहते थे। इसके बाद इन्होंने उनकी कहानियों का अनुवाद और रूपान्तरण करना आरम्भ कर दिया। प्रेम प्रभाकर से टॉलस्टॉय की 20 अनूदित कहानियों का संग्रह प्रकाशित किया गया। उन्होंने ऑस्कर वाडल्ड की एक कहानी (Canterville Ghost) का भी अनुवाद किया। आगे चलकर 1920 ई. में प्रेमचन्द ने जार्ज इलियट के उपन्यास साइलस मारनर का हिन्दी में अनुवाद किया था। 1923 ई. में प्रेमचन्द का दूसरा अनूदित उपन्यास अहंकार

के नाम से प्रकाशित हुआ, जोकि फ्रांस के प्रसिद्ध उपन्यासकार अनातोले द्वारा लिखित थाया का रूपान्तरण था। इसी प्रकार प्रेमचन्द ने रतननाथ सरसार द्वारा रचित फसान-ए-आजाद का हिन्दी रूपान्तरण आजाद कथा के नाम से किया। यही नहीं, उन्होंने बेल्जियम के प्रसिद्ध नाटककार मॉरिस मेटरलिंक के नाटक साइटलेस का उर्दू अनुवाद शबेतार के नाम से किया। बाद में इसका हंस में हिन्दी रूपान्तरण भी छपा। आगे चलकर 1930 में प्रेमचन्द ने जॉन गॉल्सवर्दी के तीन नाटकों द सिल्वर बॉक्स, स्ट्राइफ और जस्टिस के हिन्दी अनुवाद चाँदी की डिबिया, हड़ताल और न्याय शीर्षक से किए। इसके पश्चात् मृत्यु से कुछ समय पहले उन्होंने बर्नार्ड शॉ के नाटक बैक टू मैथ्यूसेलह के प्रथम भाग का अनुवाद आरम्भ किया था जोकि हंस के मार्च-अप्रैल 1937 के अंक में प्रकाशित हुआ। इससे पूर्व प्रेमचन्द ने पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा रचित पुस्तक 'फादर्स लेटर्स टू अ डॉटर' का हिन्दी अनुवाद पिता के पत्र पुत्री के नाम शीर्षक से किया।

10. प्रेमचन्द का वैचारिक साहित्य–सृजनात्मक साहित्य के साथ-साथ प्रेमचन्द का वैचारिक साहित्य भी विशेष महत्त्व रखता है। उन्होंने जहाँ एक ओर हिन्दी-उर्दू में दर्जनों लेख लिखे, दूसरी ओर हंस और जागरण पत्रिकाओं के लिए सैंकड़ों सम्पादकीय टिप्पणियाँ भी लिखीं। आगे चलकर अमृतराय ने विविध प्रसंग खण्ड-1, 2 और 3 में इसका संकलन प्रकाशित किया।

(क) साहित्य विषयक निबन्ध और टिप्पणियाँ–साहित्य से सम्बन्धित लेखों में 'उपन्यास 1-2' 'उपन्यास का विषय', 'उपन्यास रचना', कहानीकला-1,2,3, कहानी कैसे लिखनी चाहिए, 'भारत का कहानी साहित्य', साहित्य का उद्देश्य, साहित्य और मनोविज्ञान, साहित्य की नयी प्रवृत्ति, साहित्य की प्रगति, साहित्य में समालोचना, साहित्य समीक्षा, साहित्यिक उदासीनता आदि निबन्ध और टिप्पणियाँ विशेष महत्त्व रखती हैं। उन्होंने भाषा विषयक निबन्ध और टिप्पणियाँ भी लिखी हैं। इनमें उर्दू, हिन्दी और हिन्दुस्तानी, दक्षिण में हिन्दी प्रचार, भारतीय साहित्य की एकता, राष्ट्रभाषा हिन्दी और उसकी समस्याएँ तथा हिन्दी-उर्दू की एकता विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त प्रेमचन्द ने लगभग 125 पुस्तकों पर समीक्षाएँ भी लिखी थीं।

(ख) साहित्येतर विषयक निबन्ध और टिप्पणियाँ–साहित्येतर विषयक निबन्धों में जमाना नामक उर्दू पत्रिका में दौरे-जदीद और दौर-कदीम नामक निबन्ध लिखा, जिसका हिन्दी रूपान्तरण अमृतराय ने पुराना जमाना और नया जमाना के नाम से किया। इसी प्रकार महाजनी सभ्यता एक इसी प्रकार का निबन्ध है, जोकि प्रेमचन्द के प्रगतिशील दृष्टिकोण पर प्रकाश डालता है।

जहाँ तक साहित्येतर विषयक टिप्पणियों का प्रश्न है, इनमें विषयगत विविधता देखी जा सकती है। ब्रिटेन की राजनीति, अंग्रेजी भाषा, भारत में ब्रिटिश शासन, सभ्यता और संस्कृति, अतर्राष्ट्रीय राजनीति, पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति, निः शस्त्रीकरण, राष्ट्र और राष्ट्रीयता, पूँजीवाद, प्रजातन्त्र, अछूत समस्या, प्रान्तीयता, रंगभेद, ग्रामीण जीवन, जाति व्यवस्था, आतंकवाद और हिंसक क्रान्ति, कांग्रेस पार्टी, नारी समस्या, जाति-व्यवस्था न्याय व्यवस्था, पत्रकारिता, परिवार-नियोजन, औपनिवेशक न्याय-व्यवस्था, हिन्दू-धर्म, सभ्यता और संस्कृति, मुस्लिम इतिहास, स्वदेशी, स्वराज्य, देशी रियासतों की स्थिति, साम्प्रदायिकता, शराबबन्दी, स्वाधीनता आन्दोलन आदि विषयों पर प्रेमचन्द ने अपने मौलिक विचार व्यक्त किए हैं।

निष्कर्ष–उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि प्रेमचन्द को प्रतिष्ठित लेखक बनने में एक लम्बे संघर्ष का सामना करना पड़ा। परन्तु आज वे हिन्दी के कथाकारों में सर्वश्रेष्ठ कथाकार कहे जा सकते हैं। स्वयं बांग्ला उपन्यासकार शरतचन्द्र ने उनको उपन्यास सम्राट की उपाधि प्रदान की थी। रूप की दृष्टि से उनके उपन्यास और कहानियाँ विस्तार एवं वैविध्य लिए हुए हैं। शिल्प की दृष्टि से वे एक मंजे हुए कलाकार हैं। प्रेमचन्द की भाषा का विकास सहज रूप में हुआ है। उन्होंने उर्दू से हिन्दुस्तानी और साहित्यिक खड़ी बोली तक यात्रा पूरी की। फिर भी वे शुद्ध अथवा संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के समर्थक नहीं थे। यह कारण है कि उनकी भाषा में तत्सम्, तदभव, उर्दू तथा अंग्रेजी के शब्दों का सुन्दर मिश्रण देखा जा सकता है। आवश्यकतानुसार उन्होंने तद्भव शब्दों का भी खुलकर प्रयोग किया है।

यद्यपि नाटककार के रूप में प्रेमचन्द को विशेष सफलता नहीं मिली, लेकिन उन्होंने जहाँ एक ओर मौलिक नाटकों की रचना की, वहाँ दूसरी ओर कुछ नाटकों का हिन्दी में अनुवाद भी किया। पुनः बच्चों के लिए कहानियाँ लिखकर उन्होंने विशेष ख्याति प्राप्त की। इस प्रकार सर्जनात्मक और वैचारिक साहित्य की रचना करके प्रेमचन्द ने हिन्दी साहित्य को न केवल समृद्ध किया, बल्कि परवर्ती साहित्यकारों का मार्ग-दर्शन भी किया। पत्र-लेखन तथा टिप्पणियाँ लिखने में उनका कोई भी सानी नहीं है।

❖❖❖

3. प्रेमचन्द का जीवन-दर्शन

प्रश्न 3. प्रेमचन्द के जीवन-दर्शन का वर्णन कीजिए।

अथवा

कथाकार तथा निबन्धकार के रूप में प्रेमचन्द के जीवन-दर्शन पर प्रकाश डालिए।

अथवा

यह सिद्ध कीजिए कि कथाकार प्रेमचन्द जीवन-दर्शन ने अपने युग को अत्यधिक प्रभावित किया था।

उत्तर–भले ही प्रेमचन्द को हिन्दी साहित्य का उपन्यास सम्राट कहा जाता है, परन्तु कहानीकार के रूप में भी वे हि साहित्य में मील के पत्थर कहे जाते हैं। यही नहीं, निबन्धकार के रूप में उन्हें पर्याप्त सफलता मिली। प्रेमचन्द ने हिन्दी के क साहित्य को न केवल समृद्ध किया, बल्कि उसे एक नवीन दिशा भी प्रदान की। जब उन्होंने साहित्य में कदम रखा था, तब प्र विश्व युद्ध के बादल उमड़ने लगे थे और जब उनके हाथ से मृत्यु ने लेखनी छीन ली, तब द्वितीय महायुद्ध के बाद मंडराने ल थे। इस काल में पूरे विश्व में अनेक परिवर्तन हुए। हमारा देश भारतवर्ष भी उन परिवर्तनों से प्रभावित हुआ। उनके बारे में ए आलोचक ने उचित ही लिखा है "विराट मानव संस्कृति की धारा में भारतीय जन संस्कृति की गंगा एक दर्जन उपन्यास, लगभ तीन सौ कहानियाँ, निबन्ध तथा उनका एकमात्र नाटक (कर्बला) है। प्रेमचन्द पहले उर्दू में लिखा करते थे, परन्तु बाद में वे अपन उर्दू की रचनाओं का हिन्दी अनुवाद भी पाठकों के समक्ष रखने लगे। स्वयं प्रेमचन्द ने भारतीय जनता से कहा था–यह अन्त नहीं है आगे बढ़ो और आगे बढ़ो। जब तक रणभूमि में विजय न हो, जब तक देश का कायाकल्प न हो, जब तक कर्मभूमि में सब और गोदान के होरी, रमानाथ का तटस्थ होना बन्द न हो और हमारा देश नई तरह का सेवा सदन और एक नई तरह का प्रेमाश्र न बन जाए। भले ही गोदान प्रेमचन्द की प्रौढ़तम रचना कही जाती है, लेकिन नमक का दारोगा, शतरंज के खिलाड़ी, ईदगाह, कफन आदि कहानियाँ प्रत्येक युग को दिशा प्रदान करती रहेंगी। उनके जीवन दर्शन के बारे में एक विद्वान ने लिखा भी है–

"चाहे दर्शन की बहुत सूक्ष्म गहराई.....ऐसी गहराई जो बुद्धि ही चमत्कृत करे, इसमें अधिक न हो, तो भी जीवन के प्रति व्यावहारिक दृष्टिकोण का जो सहज ज्ञान इसमें पाया जाता है वह प्रेमचन्द की विशेषता है, ये विचार, ये सब धारणाएँ, यह सब जीवन दृष्टि प्रेमचन्द ने निजी जीवन अनुभव से प्राप्त की थी। किसी दार्शनिक की पुस्तकों से नहीं। यह सहज अनुभव-सम्पन्नता और सरल व्यावहारिकता इस जीवन दर्शन की सबसे बड़ी विशेषता है।"

प्रेमचन्द के जीवन दर्शन सम्बन्धी निम्नलिखित विचार ध्यातव्य हैं–

(1) अनास्थावादी दृष्टिकोण–प्रेमचन्द ने बचपन से ही संघर्षमय जीवन व्यतीत किया। भाग्य ने कभी भी उनका साथ नहीं दिया। यही कारण है कि उनके मन में ईश्वर के प्रति विश्वास नहीं था। हमारे देश में युगों से यह विचार चलता आ रहा है कि ईश्वर ही सृष्टि का कर्ता-धर्त्ता और संहारक है। वही ईश्वर हमारा भाग्य विधाता है। उसकी इच्छा के बिना पत्ता नहीं हिल सकता। जो वह चाहता है, वही प्राणी करता है। उनका मत है–"किसी सर्वज्ञ ईश्वर में इनका विश्वास न था। यद्यपि वह अपनी नास्तिकता को प्रकट न करते थे, इसलिए कि इस विषय में निश्चित रूप से कोई मत स्थिर करना वह अपने लिए असंभव मानते थे, पर यह धारणा उनके मन में दृढ़ धारणा बन चुकी थी कि प्राणियों के जन्म-मरण, सुख-दुख, पाप-पुण्य में कोई ईश्वरीय विधान नहीं है।" प्रेमचन्द ने अपने गोदान उपन्यास में प्राचीन मान्यताओं के आधार पर ग्रामीण परिवेश का यथार्थ वर्णन किया है। यहाँ का ब्राह्मणवाद वहां के ग्रामीणों को भयभीत किए हुए था। गोदान के नायक होरी की ईश्वर तथा ब्राह्मण में पूरी आस्था थी। उनकी दृष्टि में ईश्वर ही वर्षा करता है। वह मानता है कि भगवान ही छोटा-बड़ा बनाते हैं। यह सब धर्मों का फल देते हैं और अपने बेटे गोबर से कहता भी है–"यह बात नहीं बेटा, छोटे-बड़े सब भगवान के घर से बनकर आते हैं, सम्पत्ति बड़ी तपस्या से मिलती हैं। उन्होंने पूर्वजन्म में जैसे कर्म किए उनका आनन्द भोग रहे हैं। हमने कुछ नहीं सींचा तो भोगे क्या?" प्रेमचन्द ने होरी के इस कथन का उत्तर गोबर के माध्यम से दिया है। गोबर अपने पिता से स्पष्ट कहता है कि वह केवल मन को तसल्ली देने के लिए यह सब कह रहा है अन्यथा संसार में सब बराबर हैं। आज जिसके पास शक्ति है, वह गरीबों को कुचलता है और स्वयं बड़ा बनकर बैठ जाता है। गोबर ही इस अनास्थावादी दृष्टिकोण का प्रतिनिधि पात्र है। उसके अनुसार धनिक वर्ग शोषक हैं और इस वर्ग की दान-पुण्य करने की प्रवृत्ति, भक्ति-भावना आदि सब आडम्बर हैं। वह कहता भी है–**"किसानों के बल पर और मजदूरों के**

बल पर यह पाप का धन कैसे पचे? इसीलिए दान धर्म करना पड़ता है, भगवान का भजन भी इसीलिए होता है। भूखे-नंगे रहकर भगवान का भजन करें तो हम भी देखें। हमें कोई दो जून खाने को दे देता तो हम आठों पहर भगवान का भजन करते रहें। एक बिघे खेत में ही गोड़ना पड़े तो सारी भक्ति भूल जाएँ।"

गोबर की दृष्टि में प्रत्येक शोषण करने वाला व्यक्ति चाहे वह महाजन हो या ब्राह्मण सब एक समान हैं। वह पण्डित दातादीन को भी आड़े हाथों लेता है। परन्तु होरी गोबर के विचारों से सहमत नहीं है। प्रेमचन्द होरी के बारे में लिखते हुए अपना जीवन दर्शन स्पष्ट करते हैं—"मगर होरी के पेट में धर्म की क्रान्ति मची हुई थी। अगर ठाकुर या बनिये के रुपये होते तो उसे ज्यादा चिन्ता न होती, लेकिन ब्राह्मण के रुपये। उसकी एक पाई भी दब गई तो हड्डी तोड़कर निकलेगी। भगवान न करे कि ब्राह्मण का कोप किसी पर न गिरे। वंश में कोई चुल्लू भर पानी देने वाला तथा घर में दीया जलाने वाला भी नहीं रहता.....उसने दौड़कर पण्डित जी के पैर पकड़ लिए।" गोबर पिता के इस व्यवहार को देखकर हैरान रह गया। इस पर गोबर कहता है —"नीति छोड़ने के लिए कौन कह रहा है? और कौन कह रहा है कि ब्राह्मण का पैसा दबा लो? मैं तो यही कता हूँ कि इतना सूद नहीं देंगे। बैंक वाले बारह आने सूद लेते हैं, तुम एक रुपया ले लो।" गोबर के ये विचार मुंशी प्रेमचन्द के विचार हैं। एक उदाहरण सवा सेर गेहूँ नामक कहानी से लिया जा सकता है, जिसमें कहानीकार ने सूद लेने की प्रवृत्ति पर करारा व्यंग्य किया है। यह कहानी महाजनी सभ्यता से जुड़ी हुई एक यथार्थवादी कहानी है। इस कहानी में शोषक वर्ग की शोषण प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला गया है। यहाँ पर भी महाजन कोई बनिया नहीं बल्कि विप्र है। उर्मि किसान शंकर ने विप्र ब्राह्मण से सवा सेर गेहूँ उधार लिया था। शंकर ने सवा सेर गेहूँ के बदले कोई ज्यादा ही खलिहानी उसे दे दी थी। लेकिन विप्र ब्राह्मण ने कहा कि बाकी पन्द्रह रुपए ब्याज के हैं जो तुम्हें चुकाने हैं। यह राशि साल के अन्त तक साठ रुपए हो गयी और अगले साल के अन्त तक एक सौ बीस रुपए हो गई। शंकर ने साल भर मेहनत करके उसके साठ रुपए चुका दिए। इस प्रकार बीस वर्ष तक गुलामी करके शंकर संसार से कूच कर गया। अब विप्र महाजन ने उसके बेटे की गर्दन पकड़ ली। इस प्रकार प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों, कहानियों और निबन्धों में अपने अनास्थावादी दृष्टिकोण को व्यक्त किया है।

(2) बुद्धिवाद के समर्थक–मुंशी प्रेमचन्द के साहित्य को पढ़ने से पता चलता है कि वे एक बौद्धिकता के पक्षधर थे। वे कभी नहीं चाहते थे कि भाग्य अथवा भगवान के भरोसे सब कुछ छोड़ दिया जाए। गोदान में ही हमें ऐसे स्थल प्राप्त हो जाते हैं, जो यह स्पष्ट करते हैं कि प्रेमचन्द भाग्यवाद की अपेक्षा बुद्धिवाद को अधिक महत्त्व देते थे।

(1) गोबर का कथन है कि, "भगवान ने सबको बराबर बनाया है।"

(2) होरी भी धनिया को कहता है, "अगर भगवान की यही इच्छा है कि हम गाँव छोड़कर भाग जाएँ तो हमारा क्या बस।"

(3) भोला खिसियाकर बोला, "भगवान न करें मुझे फिर मुँह देखना पड़े।"

(4) झुनिया रोती हुई कहती है, "भगवान मुझे फिर से जन्म दे तो तुम्हारी ही कोख से दे, यही मेरी अभिलाषा है।"

(5) झिंगुरी सिंह को आज ईश्वर की न्यायपरता पर सन्देह हो गया था। भगवान न जाने कहाँ है कि यह अन्धेरे देखकर भी पापियों को दण्ड नहीं देते।

(6) मालती एक स्थान पर कहती हैं, "ईश्वर न करे मैं असफल हो जाऊँ।"

प्रेमचन्द का विचार था कि मुसीबत आने पर हमेशा अपने विवेक और धैर्य का उपयोग करना चाहिए। हमें यह सोचना चाहिए कि इस समस्या का समाधान कैसे किया जाए। भगवान भरोसे बैठे रहने से कोई लाभ नहीं। गोदान उपन्यास में प्रोफेसर मेहता बुद्धिवाद का समर्थक है। वह अपने विवेक के अनुसार ही कार्य करता है। वह सम्पादक ओंकार का नाट्य करता है—"धन को आप न्याय से बराबर फैला सकते हैं लेकिन बुद्धि को, चरित्र को और आप को, प्रतिभा को और बल को बराबर फैलाना आपकी शक्ति के बाहर है। छोड़े-बड़े का भेद केवल धन से ही नहीं होता, रूप के चौखट पर बड़े-बड़े महीप नाक रगड़ते हैं। यह सामाजिक विषमता नहीं है। आप उसका मिसाल देंगे, वहाँ इसके सिवाय और क्या है कि मिल के मालिक ने राज कर्मचारी का रूप ले लिया है, बुद्धि तब भी राज करती थी, अब भी करती है, हमेशा करेगी।"

गोदान का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पात्र राय साहब हैं। वे भी बुद्धिवाद का समर्थन करते हैं और कहते हैं "बुद्धि अगर स्वार्थ से मुक्त हो तो भी हमें उसकी प्रभुता मानने में कोई आपत्ति नहीं है। समाजवाद का यही आदर्श है।"

रायसाहब को रंगा सियार कहा गया है, लेकिन वे बुद्धि को सभी अधिकार देना चाहते हैं, उसका सम्मान चाहते हैं। बुद्धि की अपेक्षा वे धन को महत्त्व नहीं देते। राय साहब ये भी स्वीकार करते हैं कि बुद्धि के बिना किसी समाज का संचालन नहीं हो सकता। प्रेमचन्द के बुद्धिवादी विचार प्रोफेसर मेहता और रायसाहब के माध्यम से यत्र-तत्र उद्धृत हुए हैं। उनके विचारानुसार जीवन के सभी पक्षों और क्षेत्रों में बुद्धि एक ऐसा आधार है, जो मानव कार्य को सफल बनाता है। जो व्यक्ति बिना बुद्धि के काम करता है, उसे बाद में पछताना पड़ता है। उनकी कहानियों और निबन्धों में भी बुद्धि सम्बन्धी ऐसे विचार उत्पन्न हुए हैं।

(3) प्राकृतिक जीवन के समर्थक–प्रेमचन्द एक बहुपठित और अनुभवी व्यक्ति थे। उन्होंने अपने जीवन में आदि से अन्त तक संघर्ष किया और हमेशा स्वाभाविक जीवन जीने का समर्थन किया। उनका कथन था कि मानव को स्वाभाविक रूप से जीवन-यापन करना चाहिए। उनका यह भी विचार था कि धर्म, ज्ञान, स्वर्ग, मोक्ष, ज्योतिष आदि के चक्कर में पड़ना व्यर्थ है। जीवन में स्वाभाविक आचरण कल्याणकारी सिद्ध होता है। प्रेमचन्द मेहता के माध्यम से गोबिंदी को यही समझाने का प्रयास करते हैं कि उसे स्वाभाविक रूप में आचरण करना चाहिए। एक स्थल पर वे कहते हैं–"मेरे जीवन का क्या आदर्श है?.....मैं प्रकृति का पुजारी हूँ और मनुष्य को उसके प्राकृतिक रूप में देखना चाहता हूँ, जो प्रसन्न होकर हँसता है, दुखी होकर रोता है और क्रोध में आकर मार डालता है.....जीवन मेरे लिए आनन्दमयी क्रीड़ा है.....मैं भूत की चिन्ता नहीं करता, भविष्य की परवाह नहीं करता। मेरे लिए वर्तमान ही सब कुछ है। प्रेमचन्द का उपरोक्त कथन सुख-दुख दोनों को एक स्वाभाविक प्रक्रिया मानते हैं। रोना कमजोरी मानते हैं और हँसने को हल्कापन मानते हैं। उनका यह विचार था कि ईर्ष्या, जलन आदि जीवन के विकार हैं और ये विकार सभी में होते हैं। मनुष्य को न तो भूत पर पश्चाताप करना चाहिए और न ही भविष्य के बारे में सोचना चाहिए। जो पहले हुआ था, वह भी अच्छा था, जो अब हो रहा है वह अच्छा है और जो भविष्य में होगा वह भी अच्छा होगा। प्रेमचन्द के ये विचार श्रीमद्भगवत गीता के दार्शनिक विचारों से मेल खाते हैं। गीता को कथन के समान वे भी हमेशा कर्म करते रहते थे और धर्म के सच्चे पुजारी थे। उनके विचारानुसार मोक्ष और उपासना अहंकार की पराकाष्ठा है, जिससे मानवीयता नष्ट हो जाती है। प्रेमचन्द आनन्द, प्रेम, सुख और शान्ति को ही मोक्ष मानते थे। वे ज्ञान की कटु साधना को निरर्थक मानते थे। वे कहते भी हैं–" ज्ञानी कहता है ओठों पर मुस्कराहट न आए, आँखों में आँसू न आए। मैं कहता हूँ, अगर तुम हँस नहीं सकते और रो नहीं सकते तो तुम मनुष्य नहीं हो, पत्थर हो। वह ज्ञान जो मानवता को पीस डाले, ज्ञान नहीं, कोल्हू है।"

प्रेमचन्द स्वाभाविक जीवन को ही जीवन की सच्ची कसौटी मानते थे। इस स्थिति में ही मानव को मानव का प्रेम प्राप्त हो सकता है। मिस्टर खन्ना एक स्वामी के बारे में राय साहब और मिस मालती को बताते हैं–"वे महात्मा तपस्वी हैं और सिद्ध-पुरुष हैं तथा उनके सिद्धान्त के विषय में कहते हैं कि वे संन्यास और त्याग, मन्दिर और मठ, सम्प्रदाय और पंथ, इन सबको ढोंग कहते हैं, पाखण्ड कहते हैं और बताते हैं कि रूढ़ियों के बन्धनों को तोड़ो और मनुष्य बनो, देवता बनने का ख्याल छोड़ो। देवता बनकर तुम मनुष्य नहीं रह सकते।" प्रेमचन्द स्वयं सरल और निष्कपट प्रकृति के साहित्यकार थे। उन्हें दिखावे और आडम्बर में कोई विश्वास नहीं था। वे किसी धर्म में कोई विश्वास नहीं करते थे और न ही पूजा-पाठ करते थे। उन्होंने धर्म का सामाजिक और व्यक्तिगत रूप स्पष्ट देखा था। इसमें केवल पाखण्ड-ही-पाखण्ड ही था। इसलिए वे परम्परागत रूढ़ियों, धर्म आश्रित विधानों आदि में विश्वास नहीं रखते थे। फिर भी वे सच्ची सेवा, ममता एवं सत्य के पक्षधर थे।

(4) व्यक्तिवादी दृष्टिकोण–प्रेमचन्द व्यक्तिवाद के समर्थक थे। उनका विचार था कि समाज व्यक्ति से ही बनता है। यदि व्यक्ति का विकास होगा, तो समाज का भी विकास होगा। यदि व्यक्ति का विकास नहीं होगा तो समाज का विकास कभी नहीं हो सकता। परन्तु समाज में पूंजीपति वर्ग लगातार विकसित होता जा रहा है और आम व्यक्ति विकास से कोसों दूर है। जिसके फलस्वरूप समाज में विषमता उत्पन्न हो जाती है। गोदान के राय साहब जमींदार होकर भी शोषक हैं और धनवान का जीवन व्यतीत करते हैं और अपने वर्ग की निन्दा भी करते हैं। उनकी इस प्रवृत्ति को देखकर मेहता कहता भी है–"मैं कहता हूँ कि हमारा सारा जीवन हमारे सिद्धान्तों के अनुकूल हो। आप कृषकों के शुभेच्छु हैं। उन्हें तरह-तरह की रियायतें देना चाहते हैं। जमींदारों के अधिकार छीन लेना चाहते हैं, तो आप खुद शरू कर दें। मुझे उन लोगों से जरा भी हमदर्दी नहीं है जो बातें तो करते हैं कम्युनिस्टों सी थी, मगर जीवन रईसों का सा जीते हैं।"

प्रेमचन्द ने अपना व्यक्तिवादी दृष्टिकोण गोदान में ही व्यक्त किया है। वे सरल जीवन के पक्षधर थे और बाह्य दिखावा उनके जीवन में कोई महत्त्व नहीं रखता था। उनका विचार था कि मनुष्य जैसा जीवन जीना चाहता है, उसे वैसा जीवन जीने दिया जाए। वे प्रोफेसर मेहता के माध्यम से कहते हैं कि अगर कोई मांस खाना अच्छा समझता है, तो खुलकर खाए, बुरा समझते हैं तो मत खाए। मांस खाना या न खाना, उसे अच्छा समझना या न समझना यह व्यक्तिगत विषय है। प्रेमचन्द व्यक्तिवादी होते हुए भी समाजवाद के पश्रधर थे। वे समाज कल्याण में भी विश्वास करते थे, गाँधीवादी विचारधारा से भी प्रभावित थे। उन्होंने व्यक्ति और उसकी स्वतंत्र चेतना को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। प्रेमचन्द जिस समाजवाद के समर्थक थे, उसमें साम्यवाद की भावना नहीं थी। वे इस तथ्य से पूरी तरह अवगत थे कि भारत जैसे देश में सबको समान सुविधाएँ प्रदान नहीं की जा सकतीं। एक स्थल पर वे लिखते भी हैं "जिन औजारों से लोहार काम करता है, सुनार उन्ही औजारों से काम नहीं कर सकता। क्या आप चाहते हैं कि आप भी उसी दिशा में फले-फूलें जिनमें बबूल और ताड़? मेरे लिए धन उन सुविधाओं का नाम है जिनमें मैं अपना जीवन सार्थक कर सकूँ। धन मेरे लिए बढ़ने और फलने-फूलने वाली चीज नहीं है, केवल साधन हैं।"

व्यक्तिवाद के बारे में प्रेमचन्द के विचार स्पष्ट थे। इसके साथ-साथ उनका यह भी मत था कि समाज में कभी भी [illegible] या समरसता स्थापित नहीं हो सकती। समरसता की स्थापना करना मात्र आदर्शवाद दृष्टिकोण है। आदर्शवाद यथार्थवाद नहीं बन सकता। वे हमेशा शोषण का विरोध करते थे। महाजनी और जमींदारी शोषण के विरुद्ध उन्होंने अनेक कहानियाँ भी लिखी हैं, परन्तु फिर भी उनका विचार था कि समाज में अमीर-गरीब, छोटे-बड़े हमेशा रहेंगे। सभी लोगों को एक समान नहीं बनाया जा सकता। वे कहते भी हैं "मैं इस बात का समर्थक हूँ कि संसार में छोटे-बड़े हमेशा रहेंगे और उन्हें हमेशा रहना चाहिए। इसे मिटाने की चेष्टा मानव-जाति के सर्वनाश का कारण होगा। सामाजिक विषमता सदा रही है और आगे भी रहेगी। व्यक्ति निश्चय ही समाज की मूल इकाई है, जब समाज की इकाई-इकाई में अन्तर है तो समाज में अन्तर अवश्य रहेगा। इसे मिटाकर मानवता स्थापित करना अप्राकृतिक भी होगा। प्रत्येक व्यक्ति के विचार, भाव, बुद्धि एवं आकार भिन्न है। इसलिए प्रेमचन्द भी व्यक्तिवाद के समर्थक हैं।"

(5) मानवतावादी दृष्टिकोण–प्रेमचन्द के जीवन दर्शन की एक अन्य प्रमुख प्रवृत्ति है–उनका मानवतावादी दृष्टिकोण। वे हमेशा मानवतावादी चेतना के पक्षधर रहे हैं। उनका विचार था कि संसार में मानवतावाद की स्थापना करके ही पृथ्वी के विष को समाप्त किया जा सकता है। गोदान के नायक होरी को जब रायसाहब धनुर्यज्ञ में माली की भूमिका निभाने के लिए कहते हैं, तब वह सोचने लगता है कि शगुन के पैसे कहाँ से लाएगा। उसकी सारी फसल खेतों से उठ गई और उसका बाल-बाल कर्ज में जकड़ा हुआ है। और वह कर्ज में डूबा हुआ है इसीलिए वह बोला से कहता है–"कौन कहता है कि हम-तुम आदमी हैं। हममें आदमियत कहाँ है।" होरी की दृष्टि में वही आदमी है जिसके पास अपार धन है, जमीन है, जायदाद है। ऐसा आदमी ही जीवन के साथ सुख भोग सकता है। इसके विपरीत रायसाहब होरी से अपनी वस्तुस्थिति से परिचित कराते हुए कहते हैं–तुम हमें बड़ा आदमी समझते हो। हमारे नाम बड़े हैं पर दर्शन थोड़े। हमारा धर्म है कि यदि कोई हमारे मुँह की रोटी छीन ले तो हम उसके गले में उँगली डालकर छीन लेते हैं। हमारी ईर्ष्या और वैर आनन्द के लिए है। हमारे स्तर के लोग किस प्रकार परस्पर द्वेष करते हैं, कुभावना व दुर्वासना के शिकार हैं, जिनका वर्णन करना कठिन है। हमारे शोषण की कोई पराकाष्ठा नहीं है।"

प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से प्रेमचन्द ने राय साहब की दोहरी जिन्दगी पर प्रकाश डालते हुए जमींदारों की अमानवीयता की पोल खोलकर रख दी है। भले ही रायसाहब स्वयं को इन्सान नहीं मानते, वे कहते हैं कि दुनिया उन्हें सबसे बड़ा सुखी व्यक्ति मानती है, क्योंकि हमारे पास इलाका, महल, सवारियाँ, नौकर-चाकर, कर्ज, वेश्याएँ आदि हैं। परन्तु हमारी आत्मा में बल नहीं है, अभिमान नहीं है। अतः हम सही अर्थों में आदमी नहीं हैं। प्रेमचन्द का विचार था कि जिस व्यक्ति की आत्मा में बल होता है, स्वाभिमान होता है, वह सही अर्थों में मानव है। रायसाहब स्वीकार करते हैं कि जो आदमी दूसरों की मेहनत पर नहीं पलता और अपनी रोजी-रोटी स्वयं कमाता है, वही मानव कहलाने के योग्य है। वह पुनः कहता है–"लक्षण कह रहे हैं कि बहुत जल्द वह दिन आएगा। वह हमारे उद्धार का दिन होगा। हम परिस्थितियों के शिकार बने हुए हैं। यह परिस्थिति ही हमारा सर्वनाश कर रही है और जब तक सम्पत्ति की यह बेड़ी हमारे पाँवों से न निकलेगी, तब तक यह अभिशाप हमारे सिर पर मंडराता रहेगा। हम मानवता का वह पद न पा सकेंगे जिस पर पहुँचना ही जीवन का अन्तिम लक्ष्य है।"

(6) कर्मशीलता में विश्वास–प्रेमचन्द सच्चे कर्मयोगी साहित्यकार थे। वे जीवन जीने में ही विश्वास करते थे और स्वर्ग-नरक को नहीं मानते थे। उनका विचार था कि मानव अपने कर्मों द्वारा ही जीवन को सुखी बना सकता है। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि हम आत्मा पर विश्वास करें या न करें, निवृत्ति मार्ग पर चलें या प्रवृत्ति मार्ग पर, आदर्श जीवन के लिए सभी रास्ते खुले हुए हैं। ये सभी रास्ते मानव की मात्र कल्पना हैं, मतलब तो है अपने कर्मों से जीवन को सुखी बनाना। प्रेमचन्द का कथन है कि यदि हम ईश्वर से डरते हैं तो निश्चय से अशिव का त्याग करते हैं। भगवान हमें स्वर्ग या नरक नहीं देता, यह तो केवल हमारी कल्पना है। हमारा प्रमुख लक्ष्य तो जीवन को सुधारना होना चाहिए। गोदान में मेहता एक स्थल पर कहता है–"आत्मावाद और अनात्मवाद की खूब छानबीन कर देने पर वह इसी तत्त्व पर पहुँच जाते हैं कि प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों के बीच जो सेवा मार्ग है चाहे उसे कर्मयोग कहो, वही जीवन को सार्थक कर सकता है, वही जीवन को ऊँचा और पवित्र बना सकता है।" प्रेमचन्द जिस ईश्वर की कल्पना करते हैं, उसमें ईश्वर का कोई स्थान नहीं है। वे तो केवल मानव जाति की एकता को मानते हैं। यही कारण है कि समाज की एकता में उनका अटूट विश्वास था जिसके लिए वे ईश्वर को आवश्यक नहीं मानते। वे तो यह भी स्वीकार नहीं करते थे कि व्यक्ति में एक आत्मा है और वह ईश्वर का अंश है। वे द्वैतवाद और अद्वैतवाद को भी नहीं मानते थे। उनका

कहानी के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी कहानी साहित्य में नवीन परम्परा और नवीन युग का सूत्रपात हुआ। ... लगभग 20 वर्षों में उन्होंने लगभग 300 से अधिक कहानियों की रचना की और हिन्दी कहानियों का एक युग पूरा अपने नाम कर लिया। निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत हिन्दी कहानियों के विकास में प्रेमचन्द का मूल्यांकन किया जा सकता है—

1. कथानक—प्रेमचन्द ने समाज के विभिन्न पक्षों के अन्तर्गत अपनी कहानियों के कथानकों का चयन किया। प्रेमचन्द पूर्व युग में जो हिन्दी कहानियाँ लिखी जा रही थीं, उनका आधार या तो संस्कृत साहित्य था या बांग्ला नाटक। उन कहानियों की कथावस्तु आदर्श भावना और उपदेशात्मकता थी। एकाध कहानी का आधार ऐतिहासिक भी था। प्रेमचन्द ने रानी सारन्धा तथा राजा हरदौल जैसी कहानियों के लिए ऐतिहासिक कथानक चुना। 'शतरंज के खिलाड़ी' में राजनीतिक और सांस्कृतिक कथानक लिया गया। 'खून सफेद' और 'ठाकुर का कुआँ' जैसी कहानियों में अस्पृश्यता और हरिजन समस्या को कथानक आधार बनाया। 'कफन' तथा 'सवा सेर गेहूँ' जैसी कहानियों में समाज के निम्न वर्ग के शोषण को उभारा। 'बड़े घर की बेटी' जैसी कहानियाँ पारिवारिक समस्याओं से जुड़ी हुई थीं। इस प्रकार 'मन्त्र', 'नमक का दारोगा' आदि कुछ कहानियाँ समाज से सम्बन्धित थीं। 'सुहाग की साड़ी' राजनीतिक आन्दोलन से सम्बन्धित कहानी कही जा सकती है। प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों के लिए विभिन्न रूपों में कथानक को चुना है। उदाहरण के रूप में निर्वासित, कौशल, परीक्षा, गुरु मन्त्र आदि कहानियों की कथावस्तु संक्षिप्त है। कुछ कहानियों के कथानक घटनाओं पर आधारित हैं, परन्तु उल्लेखनीय बात यह है कि प्रेमचन्द की कहानियों के कथानक पूर्णतया मौलिक हैं और उनमें रोचकता भी है। 'कफन', 'बूढ़ी काकी', 'बड़े घर की बेटी', 'नमक का दारोगा', 'ईदगाह' आदि कहानियाँ वस्तुगत विविधता के कारण अत्यधिक रोचक और परिपूर्ण बन पड़ी हैं।

प्रेमचन्द की कहानियों में यथासम्भव घटनात्मक योजना परस्पर सम्बन्धित दिखाई देती है। कहीं तो वे चित्रांकन द्वारा कहानी के कथानक आरम्भ करते हैं तो कहीं वर्णन द्वारा। कहीं-कहीं वे घटना के द्वारा भी कथानक का आरम्भ कर देते हैं। उदाहरण के लिए तैंतर कहानी का आरम्भ इस प्रकार है—"आखिर वही हुआ जिसकी आशंका थी, जिसकी चिन्ता में घर के सभी लोग और विशेषतया प्रसूता पड़ी हुई थी। तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हुआ। कहीं-कहीं वार्तालाप द्वारा ही वे कथानक आरम्भ कर देते हैं। 'निर्वासन' नामक कहानी में ऐसा ही हुआ है। इतिवृत्तात्मकता द्वारा 'सवा सेर गेहूँ' का आरम्भ किया गया है। प्रेमचन्द ने आदर्शवाद से प्रभावित अपनी कहानियों को चरम सीमा तक पहुँचाने के बाद उपसंहार भी दिया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कथानक की दृष्टि से प्रेमचन्द ने अपनी विविध प्रकार की कहानियों के द्वारा परवर्ती कहानियों को अत्यधिक प्रभावित किया है। भले ही उनकी कुछ आरम्भिक कहानियाँ आदर्शवाद से जुड़ी हुई हों, लेकिन उनकी बाद की कहानियों में यथार्थ देखा जा सकता है।

2. पात्र और चरित्र-चित्रण—कहानी के तत्त्वों में कथानक के पश्चात् पात्र चरित्र-चित्रण को प्रमुख स्थान दिया जाता है। एक सफल कहानीकार अपनी कहानी में विभिन्न पात्रों की योजना करता है, लेकिन यह भी ध्यान रखता है कि कहानी में पात्रों की संख्या अधिक नहीं होनी चाहिए। वह पात्रों की योजना करके विभिन्न परिस्थितियों में मानवीय चरित्र का उद्घाटन करता है। इसके साथ-साथ वह पात्रों के माध्यम से मानव के चरित्र, विभिन्न परिस्थितियों से प्रभावित उसके जीवन तथा उसके अन्तःकरण के पहलुओं का उद्घाटन करता है। प्रेमचन्द पूर्व कहानियों के पात्र पौराणिक, काल्पनिक अथवा ऐतिहासिक होते थे। प्रेमचन्द ने पहली बार अपनी कहानियों में समाज के शोषित तथा अभावग्रस्त परिवार के पात्रों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। उन्हें नायक बनाकर पात्र चरित्र-चित्रण के प्राचीन मिथक को तोड़ दिया लेकिन हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि उनकी कहानियों में पात्र योजना अनेक रूपों में देखी जा सकती है। 'बड़े घर की बेटी' उनकी आरम्भिक कहानियों में से एक महत्त्वपूर्ण कहानी है, जिसकी नायिका आदर्शवादी और परम्परावादी है। उच्च कुल की आनन्दी अपने अनपढ़ और असभ्य देवर से मार खाकर भी घर को बिखरने से बचा लेती है। परन्तु प्रेमचन्द की बाद की कहानियों में नारी पात्र पुरुषों के शोषण और अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाते हैं। ये नारी पात्र अपने अधिकारों के प्रति सचेत दिखाई देते हैं। उदाहरण के रूप में 'कुसुम' कहानी की नारी पात्र कुसुम को लिया जा सकता है जो कि एक परम्परावादी आदर्श पत्नी है, लेकिन जब उसका पति लम्बे काल तक उसका शोषण करता हुआ उसकी उपेक्षा करता है, तब वह क्रोधित होकर कहती है—"ऐसे देवता का रूठे रहना ही अच्छा है। जो आदमी इतना स्वार्थी, इतना दम्भी, इतना नीच है, उसके साथ निर्वाह न होगा।"

इसी प्रकार प्रेमचन्द की कुछ ऐसी कहानियाँ भी हैं जिनके पुरुष पात्र आदर्शवाद के पुतले दिखाई देते हैं लेकिन आगे की कहानियों के पुरुष पात्र यथार्थवादी चित्रित किए गए है। उत्कर्ष काल की कहानियों में पुरुष पात्रों को अत्यन्त सरल, स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रित किया गया है। इस सन्दर्भ में 'पूस की रात' कहानी का उल्लेख किया जा सकता है। इस कहानी का पात्र वस्त्रहीन हल्कू किसान जाड़े में कांपता हुआ अपने कुत्ते जबरे को अपनी गोद में लेकर सो जाता है, ताकि उसके शरीर से कुछ गर्मी प्राप्त कर सके। यहाँ संक्षेप में हम कह सकते हैं कि प्रेमचन्द के अधिकांश पात्र कथानक के अनुकूल हैं। उनमें स्वाभाविकता, सजीवता, यथार्थता और सहृदयता है। उनके चरित्र-चित्रण में भी मौलिकता है। उनके कुछ पात्र अन्तर्द्वन्द्वग्रस्त भी हैं।

प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों के पात्रों का चरित्र-चित्रण करते समय अनेक विधियों को अपनाया है। उदाहरण के रूप में कथात्मक विधि, आत्म-कथात्मक विधि, विश्लेषणात्मक विधि, विवरणात्मक विधि, परिचयात्मक विधि, मनोवैज्ञानिक विधि, संवेदनात्मक विधि तथा अभिनयात्मक विधि आदि का उल्लेख किया जा सकता है। पुनः उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों से पात्रों का चयन किया है। संक्षेप में कह सकते हैं कि प्रेमचन्द ने हिन्दी कहानियों के विकास में एक महत्त्वपूर्ण योगदान देते हुए पात्रों के चरित्र-चित्रण की पुरानी परम्परा को तोड़ दिया है और अपनी कहानियों में मध्य तथा सर्वहारा वर्ग के पात्रों को स्थान दिया है और उनका चरित्र-चित्रण यथार्थ के धरातल पर किया है।

3. कथोपकथन अथवा संवाद—संवाद योजना कहानी का तीसरा महत्त्वपूर्ण तत्त्व माना गया है। सैद्धान्तिक रूप में कहानी के सभी तत्त्व परस्पर जुड़े हुए होते हैं परन्तु कथा साहित्य में संवाद को विशेष महत्त्व दिया जाता है। संवाद कहानी में मुख्यतया तीन काम करते हैं। एक तो ये कथानक को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं, दूसरा संवाद पात्रों के चरित्र पर प्रकाश भी डालते हैं और तीसरा संवाद कहानी के उद्देश्य का भी कुछ-कुछ आभास देते हैं। प्रेमचन्द की कहानियों के संवाद बड़े सजीव, रोचक और संक्षिप्त हैं। ये पात्रों के चरित्र पर समुचित प्रकाश डालते हैं। उदाहरण के रूप में 'गुल्ली-डण्डा' प्रेमचन्द की एक उल्लेखनीय कहानी है। इससे एक उदाहरण देखिए—**"हाँ मेरा दाँव दिए बिना कहीं नहीं जा सकते।"**

"मैं तुम्हारा गुलाम हूँ।
हाँ मेरे गुलाम हो।
मैं घर जाता हूँ, देखूँ तुम मेरा क्या कर लेते हो?
घर कैसे जाओगे, कोई दिल्लगी है। दाँव दिया है, लेंगे।"

प्रेमचन्द की कहानियों में संवाद संक्षिप्त होने के साथ-साथ स्वाभाविक उपयुक्त, अनुकूल, सुसम्बद्ध तथा मार्मिक हैं। 'रामलीला', प्रेमचन्द की एक उल्लेखनीय कहानी है। इसमें चौधरी तथा वेश्या अमीना बाई का संवाद देखिए जो कि दोनों पात्रों के स्वभाव को स्पष्ट करता है—

चौधरी-तुम तो दिल्लगी करती हो और यहाँ काफिया तंग हो रहा है।

अमीना—तो आप भी मुझसे उस्तादी करते हो। यहाँ आप जैसे कइयों को रोज उगँलियों पर नचाती हूँ।

चौधरी—आखिर मंशा क्या है?

अमीना—जो कुछ मैं वसूल करूँ। उसमें से आधा मेरा और आधा आपका। लाइए हाथ मारिए.....अच्छा तो पहले सौ रुपए गिन दीजिए। पीछे से आप अलसेट करने लगेंगे।

चौधरी—वाह! वह भी लोगी और यह भी।

'शतरंज के खिलाड़ी' में संवादों की सुन्दर योजना की गई है। इन संवादों के द्वारा हम पात्रों के हृदयगत भावों को अच्छी प्रकार से जान सकते हैं। कुछ स्थलों पर इस कहानी के संवाद अत्यन्त संक्षिप्त, चुटीले और प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं। विशेषकर मीर साहब और मिर्जा साहब के संवादों में नाटकीयता का समावेश हुआ है। एक उदाहरण देखिए—

मीर—उसमें क्या रखूँ? हाथ से मुहरा छोड़ा कब था?

मिरजा—मुहरा आप कयामत तक न छोड़े तो क्या चाल ही न होगी? फरजी मिटते देखा धांधली करने लगे।

मीर—धांधली आप करते हैं। हार-जीत तकदीर से होती है, धांधली करने से कोई नहीं जीतता।

मिरजा—तो इस बाजी में आपकी मात हो गई।

मीर—मुझे क्यों मात होने लगी?

मिरजा— तो आप मुहरा उसी घर में रख दीजिए जहाँ पहले रखा था।

मीर— वहाँ क्यों रखूँ? नहीं रखता।

इसी प्रकार 'सद्गति' कहानी में लेखक ने बड़े संवादों का प्रयोग किया है लेकिन फिर भी भाषा के प्रवाह के फलस्वरूप बड़े संवाद खटकते नहीं। इस कहानी की संवाद योजना का एक छोटा-सा उदाहरण देखिए–

पण्डित जी ने इस प्रस्ताव को व्यावहारिक क्षेत्र से दूर समझकर पूछा-रोटियाँ हैं?

पण्डिताइन-दो-चार बच जाएँगी।

पण्डित-दो चार रोटियों में क्या होगा? चमार है, कम से कम सेर भर चढ़ा जाएगा।

पण्डिताइन कानों पर हाथ रखकर बोली–अरे बाप रे। सेर भर। तो फिर रहने दो।

संक्षेप में कह सकते हैं कि प्रेमचन्द ने संवादों के उत्कृष्ट प्रयोग द्वारा हिन्दी कहानियों को सजीवता प्रदान की है। प्रेमचन्द के बाद ही हिन्दी कहानियों में कथोपकथन को विशेष महत्त्व दिया जाने लगा।

4. देशकाल एवं वातावरण–देशकाल अथवा वातावरण कहानी का एक अन्य महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। इस तत्त्व द्वारा कहानी में समय, स्थान तथा वातावरण की सजीवता में उचित संगति होती है। प्रेमचन्द पूर्व कहानियों में इस तत्व की कमी खलती थी। प्रेमचन्द ने प्रायः ग्रामीण समाज, राजनीतिक घटनाओं तथा धार्मिक वातावरण का अधिक वर्णन किया है। अतः प्रत्येक कहानी में उन्होंने कहानी के विषय के अनुकूल ही देशकाल और वातावरण प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों में चित्रित वातावरण औचित्य का निर्वाह करता है। उसमें न केवल वास्तविकता है, बल्कि रोचकता भी है। 'ईदगाह' प्रेमचन्द की एक महत्त्वपूर्ण कहानी है। प्रेमचन्द ने इस कहानी में विषयानुकूल ही वातावरण का चित्रण किया है। निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पता चल जाएगा कि कहानी के वातावरण में कितनी वास्तविकता है–**"रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद ईद आयी है। कितना मनोहर कितना सुहावन प्रभात है। वृक्षों पर कुछ अजीब रौनक है। आसमान पर कुछ लालिमा है। आज सूर्य को देखो कितना प्यारा, कितना शीतल है मानों संसार को ईद की बधाई दे रहा है। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। किसी के कुर्ते में बटन नहीं है। पड़ोस के घर से सुई तागा लाने दौड़ा जा रहा है। किसी के जूते कड़े हो गए हैं, उनमें तेल डालने के लिए तेली के घर भागा जा रहा है।"**

इसी प्रकार 'पूस की रात' मुंशी प्रेमचन्द द्वारा रचित एक ग्रामीण जीवन के यथार्थ की कहानी है। इस कहानी में ग्रामीण परिवेश सजीव हो उठा है। हल्कू और मुन्नी की गरीबी, सहना की निष्ठुरता, जबरे कुत्ते की स्वामीभक्ति, ऋण भुगतान की समस्या आदि का यथार्थ वर्णन करने के लिए यह कहानी सजीव वातावरण प्रस्तुत करती है। एक उदाहरण देखिए–**"यह रांड पछुआ न जाने कहाँ से बरफ लिये आ रही है।..... रात ने शीत को हवा से धधकाना शुरू किया। हल्कू उठा और दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर को छिपा लिया फिर भी ठण्ड कम न हुई। ऐसा जान पड़ता था, सारा रक्त जम गया है धमनियों में रक्त की जगह हिम बह रही है।"**

इसी प्रकार 'शतरंज के खिलाड़ी' में लेखक ने तत्कालीन धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिस्थितियों पर समुचित प्रकाश डाला है। इस कहानी में लेखक ने तत्कालीन राजा, नवाब आदि की विलासिता और उनसे प्रभावित प्रजा के वातावरण को प्रस्तुत किया है। **"वाजिदअली शाह का समय था। लखनऊ विलासिता के रंगों में डूबा हुआ था। छोटे-बड़े, अमीर गरीब सभी विलासिता में डूबे हुए थे। कोई नृत्य और गान की मजलिस सजाता था, तो कोई अफीम की पिनक से ही मजे लेता था। जीवन के प्रत्येक विभाग में आमोद-प्रमोद का प्राधान्य था। शासन विभाग में, साहित्य क्षेत्र में, सामाजिक व्यवस्था में, कला-कौशल में, उद्योग-धंधों में, आचार-व्यवहार में सर्वत्र विलासिता विद्यमान थी। कर्मचारी विषयवासना में, कविगण प्रेम और विरह के वर्णन में, कारीगर कला वस्तु तथा चिकन बनाने में, व्यवसायी सुरमें, इत्र, मिस्सी और उबटन का रोजगार करने में लिप्त थे।"**

5. भाषा शैली–भाषा-शैली कहानी का पाँचवाँ प्रमुख तत्त्व है। आरम्भ में प्रेमचन्द ने उर्दू भाषा में लिखना शुरू किया था। बाद में वे हिन्दी में लिखने लगे, इसलिए उनकी आरम्भिक कहानियों की भाषा सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली है जिसमें उर्दू भाषा के शब्दों का अधिक प्रयोग मिलता है, लेकिन फिर भी उन्होंने सहज, सरल तथा पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। प्रेमचन्द पूर्व काल में संस्कृतनिष्ठ हिन्दी भाषा में साहित्य की रचना हो रही थी, लेकिन प्रेमचन्द ने आम लोगों की भाषा में ही साहित्य की रचना की और पाठकों में अपार लोकप्रियता अर्जित की। प्रेमचन्द की कहानियों में कथावस्तु और पात्र-योजना बहु रूपी है, इसीलिए वे कहानियों की भाषा में कुशल संयोजन कर लेते हैं। उनकी कहानियों की भाषा में प्रवाहमयता, आलंकारिकता, चित्रात्मकता, भावात्मकता, व्यंग्यात्मकता, नाटकीयता आदि गुण देखे जा सकते हैं। 'पूस की रात' में एक स्थल पर लेखक ने चित्रात्मक भाषा का प्रयोग किया है–**"यह राँड पछुआ न जाने कहाँ से बरफ लिये आ रही है।.....रात ने शीत को हवा से धधकाना शुरू किया। हल्कू उठा और दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर को छिपा लिया, फिर भी ठण्ड कम न हुई। ऐसा जान पड़ता था, सारा रक्त जम गया है धमनियों में रक्त की जगह हिम बह रही है।"**

7. पत्रकारिता के संबंधा में प्रेमचन्द का योगदान

प्रश्न 7. हिन्दी पत्रकारिता के संबंध में प्रेमचन्द के योगदान पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिए।

अथवा

एक महान कथाकार होते हुए भी प्रेमचन्द ने हिन्दी पत्रकारिता में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है विवेचन कीजिए।

उत्तर—पत्रकारिता समाज की गतिविधियों का दर्पण है। मानव सामाजिक प्राणी होने के कारण जिस समाज में रहता है उसके बारे में अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करना चाहता है। समाज में कब, कहाँ, कैसे, क्यों हो रहा है, इसे जानने का एकमात्र साधन पत्रकारिता है। एक आलोचक के अनुसार, "पत्रकारिता वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने मस्तिष्क में उस दुनिया के बारे में समस्त सूचनाएँ संकलित करते हैं, जिन्हें हम स्वतः कभी नहीं जान सकते। यही कारण है कि पत्रकारिता को लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ भी कहा गया है।"

हिन्दी साहित्य में पत्रकारिता का आरंभ 1832 में प्रकाशित बुद्धि प्रकाश में हुआ। आगे चलकर 1829 में राजा राममोहन राय ने बंगदूत नामक साप्ताहिक पत्र का सम्पादन किया। यह पत्र हिन्दी, बांग्ला, फारसी और अंग्रेजी में प्रकाशित होता था। सन् 1854 में कलकत्ता में सुधा दर्पण नामक हिन्दी के दैनिक समाचार पत्र का प्रकाशन हुआ। आगे चलकर भारतेन्दु युग में तो असंख्यक पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित होने लगीं। प्रेमचन्द भले ही हिन्दी साहित्य में उपन्यास, कहानियाँ और निबन्ध लिखते रहे लेकिन 30 वर्षों तक उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। जब प्रेमचन्द ने लिखना शुरू किया, उस समय हिन्दी पत्रकारिता अपनी किशोरावस्था में थी, जिसे एक ठोस लेखनी के द्वारा विकसित करने की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। इसी युग में भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन काफी सक्रिय हो चुका था। इसी काल में कुछ चन्द पत्रकारों ने अपने साहस का परिचय दिया और उन्होंने लोगों में विवेक जगाने के लिए पत्रकारिता का सहारा लिया। उन पत्रकारों में प्रेमचन्द का भी नाम महत्त्वपूर्ण माना जाता है। प्रेमचन्द की पत्रकारिता निष्पक्ष, साहसिक और जनमत निर्माण में सक्षम कही जा सकती है।

1. पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रथम कदम—1905 ई. में प्रेमचन्द पहली बार कानपुर में आकर रहने लगे। उनका सम्बन्ध दया नारायण निगम से हुआ जो जमाना पत्रिका का प्रकाशन कर रहे थे। 1906 ई. में जमाना के सम्पादकीय विभाग में प्रेमचन्द भी शामिल हो गए। आगे चलकर सन् 1908 ई. में इंडियन प्रेस, इलाहाबाद से एक उर्दू रिसाला निकालने का निर्णय हुआ। इसका सम्पादक बनने के लिए नवाबराय (प्रेमचन्द) से अनुरोध किया गया, उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़कर सम्पादक बनना स्वीकार कर लिया। लगभग इसी समय दयानारायण निगम ने उसके सामने अवध अखबार में काम करने का प्रस्ताव रखा, परन्तु नवाबराय ने मना कर दिया। आगे चलकर 1912 ई. में निगम साहब ने एक साप्ताहिक अखबार निकालने का जब प्रस्ताव प्रस्तुत किया तो प्रेमचन्द ने उनकी सहायता करने का आश्वासन दे दिया और इस अखबार का नाम रफ्तारे जमाना रखने का सुझाव दिया। आगे चलकर उन्होंने उर्दू पत्र देश का संवाददाता बनना भी स्वीकार कर लिया। आगे चलकर उन्होंने दया नारायण निगम को एक पत्र लिखा, जिसमें माहवार रसाला निकालने की अपनी इच्छा प्रकट की। उपरोक्त विवेचन से पता चलता है कि प्रेमचन्द की रुचि पत्रकारिता और प्रेस की ओर अग्रसर हो चुकी थी, लेकिन फिर भी 1917 ई. तक उनके मन में कोई प्रेस खोलने का विचार नहीं था। यही कारण है कि 19 जनवरी, 1918 को उन्होंने निगम साहब को पुनः एक पत्र में लिखा—"मैं खुद Publisher बनने का दर्दे सिर नहीं चाहता लेकिन यह भी संभव है कि उनकी अवचेतना में कहीं न कहीं Publisher बनने की इच्छा थी। उन्होंने 6 जुलाई, 1918 को निगम साहब को एक और पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने अच्छे अखबार का सम्पादक बनने की इच्छा व्यक्त की।"

2. प्रेस की स्थापना का प्रयास—प्रेमचन्द का सौतेला भाई महताब राय प्रेस का काम सीखकर महावीर प्रसाद पोद्दार के कलकत्ता स्थित प्रेस में मैनेजर के पद पर काम करने लगा। अब प्रेमचन्द का मन भी प्रेस खोलने के लिए कुलबुलाने लगा। 11 मार्च, 1920 को उन्होंने पुनः निगम साहब को पत्र लिखा जिसमें उन्होंने यह इच्छा प्रकट की कि वे कानपुर में प्रेस लगाकर एक अखबार निकालना चाहते हैं। इसी समय महताब राय ने प्रेमचन्द को सूचित किया कि कलकत्ता में एक बिकाऊ प्रेस है जिसे खरीदकर कानपुर में लगाया जा सकता है, परन्तु दोनों भाइयों में साझेदारी को लेकर कुछ गलतफहमियाँ पैदा हो गईं और यह प्रस्ताव रद्द हो गया। इसके पश्चात् दयानारायण निगम के साथ मिलकर कानपुर के 'लाइट प्रेस' को खरीदने का विचार बना परन्तु यह भी क्रियान्वित न हो सका। आगे चलकर फरवरी, 1921 में प्रेमचन्द ने सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया और गोरखपुर में साप्ताहिक अखबार निकालने और प्रेस खोलने का विचार बनाया। वे चाहते थे कि प्रेस में उर्दू, हिन्दी तथा अंग्रेजी तीनों भाषाओं पर काम हो। प्रेमचन्द के मन में प्रेस लगाने की इच्छा काफी बलवती होती जा रही थी परन्तु वे प्रेस लगाने का इरादा करते और उनका प्रयास असफल हो जाता। अब प्रेमचन्द ने बड़े भाई मुंशी बदलेव प्रसाद, छोटे भाई महताब राय, रघुपति सहाय फिराक तथा दया नारायण निगम को साझेदार बनाकर प्रेस लगाने का पक्का इरादा कर लिया। कलकत्ता से प्रेस का कुछ सामान मंगवाया गया, टाईप का ऑर्डर भी दे दिया गया और वुडराफ एंड कम्पनी जर्मनी को मशीन का ऑर्डर भी दे दिया। इस प्रकार अपने भाई महताब राय को मैनेजर बनने के लिए प्रेरित किया। फलस्वरूप सरस्वती प्रेस की स्थापना की गई जिसका उद्घाटन 20 जुलाई, 1923 को पंडित छविनाथ मिश्र ने चक्का घुमाकर किया।

3. प्रेस और प्रकाशन में असफलता—परन्तु प्रेमचन्द को प्रेस और प्रकाशन से जो आय की उम्मीद थी, वह पूरी न हो सकी। धीरे-धीरे प्रेस में घाटा होने लगा। उन्होंने निगम साहब को सूचना दी "मेरे प्रेस की हालत अच्छी नहीं, साल भर हो गए नफा और सूद तो दर किनार कोई 600 रुपए का घाटा है।" आगे चलकर स्थिति इतनी खराब हो गई कि जिन लोगों ने पैसा दिया था वे वापस मांगने लगे। कई लोगों ने प्रेस को तोड़ देने की सलाह भी दी, परन्तु प्रेमचन्द को मंजूर न था। वे कम-से-कम दो साल तक और प्रेस को चलाना चाहते थे। वे अपने बेटों को भी थोड़ा बहुत पढ़ाकर इसी व्यवसाय में लगाना चाहते थे। निगम साहब से उनका पत्र व्यवहार चलता रहता था। उन्होंने बताया कि मेरा वक्त खराब चल रहा है। साल भर और बीतने के बाद भी कोई सुधार न हुआ। दूसरी ओर प्रेमचन्द और उनके भाई महताब राय में भी संबंध कुछ-कुछ खराब हो गए। प्रेमचन्द ने महताब राय को ही नुकसान के लिए दोषी माना और प्रेस बन्द करने का निर्णय लिया, परन्तु प्रेस फिर भी चलता रहा। इसी बीच महताब राय प्रेस के प्रबन्धन से अलग हो गए। अब प्रेमचन्द ने प्रवासी लाल वर्मा को प्रेस का भार सौंप दिया और उसके साथ कुछ शर्तें भी तय कर ली। धीरे-धीरे प्रेस में सुधार होने लगा। 10 मार्च, 1930 को सरस्वती प्रेस से प्रकाशित हंस पत्रिका का प्रथम अंक निकला। इस पत्रिका में ही कर्मभूमि उपन्यास का धारावाहिक प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया। लेकिन इससे पुनः प्रेस की हालत खराब होने लगी। इसी बीच प्रेस आर्डिनेन्स ने सरस्वती प्रेस से जब एक हजार रुपए की जमानत मांगी तो यह पत्रिका और प्रेस दोनों कुछ समय के लिए बन्द हो गए। जब नवम्बर में जमानत का प्रतिबन्ध उठ गया तब सरस्वती प्रेस और हंस पुनः चलने लगे। लेकिन प्रेस अभी भी घाटे में जा रही थी। प्रेमचन्द ने प्रेस को काम देने के लिए जागरण नामक पत्रिका को अपने हाथ में ले लिया। जब सन् 1932 में जमानत की आज्ञा वापिस हो गई तो जागरण का प्रथम अंक प्रकाशित हुआ, लेकिन पुनः 1 दिसम्बर को जागरण और सरस्वती प्रेस पर जमानत देने की आज्ञा जारी हो गई लेकिन जल्दी ही यह समाप्त हो गई। प्रेमचन्द ने यह निर्णय लिया कि वह इस प्रेस को और सारे व्यापार को बेच देगा। इस संबंध में इलाहाबाद के लीडर प्रेस से पत्राचार भी हुआ लेकिन लीडर प्रेस ने कोई सकारात्मक उत्तर नहीं दिया। अब प्रेमचन्द यह मानने लग गए कि उसकी सारी मुसीबतों की जड़ यह प्रेस ही है। इस संबंध में उन्होंने जनरल कुमार को एक पत्र भी लिखा। आगे चलकर प्रेमचन्द को अज्ञेय ने एक प्रस्ताव भेजा कि सरस्वती प्रेस, हंस और जागरण को मिलकर चलाया जाए। तब प्रेमचन्द ने उनको उत्तर दिया—"अगर पाँच हजार रुपए और वात्स्यायन जी तुम आ मिलो तो बहुत बड़ा काम हो जाए। मैं हर तरह से तैयार हूँ परन्तु यह बात आगे बढ़ न सकी।" अन्ततः 23 अप्रैल, 1935 को यह प्रस्ताव श्रीपत राय ने रखा कि प्रेस को इलाहाबाद ले जाया जाए। प्रेमचन्द ने भी इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया लेकिन उनके जीवन काल में यह काम नहीं हो पाया और इसी समस्या को मन में लिए हुए उन्होंने बाकी जीवन व्यतीत किया।

सरस्वती प्रेस और प्रकाशन की असफलता का मुख्य कारण पूंजी और प्रबन्धन की कमी थी। न तो प्रेमचन्द ही इस बात को समझ पाए और न ही उनके सहयोगी। सहयोगी चाहते थे कि उन्हें जल्दी-से-जल्दी लाभ प्राप्त हो। जब व्यवसाय ही ठीक से नहीं चल रहा था तो उन्हें लाभ कैसे मिलता। महताब राय में वह योग्यता न थी कि वह प्रेस का अच्छी तरह से प्रबन्ध करता और

व्यवसाय को चलाता। स्वयं प्रेमचन्द को इस व्यवसाय का कोई ज्ञान नहीं था। वे नौकरी की ओर अधिक ध्यान देते थे और प्रेस की तरफ कम। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि प्रेस को न तो उचित काम मिल पाता था और न ही अच्छी छपाई हो पाती थी। बम्बई से लौटकर जब वे वापस आए तो उन्होंने प्रेस की ओर कुछ ध्यान देना शुरू किया। गोदान उपन्यास भी इसी प्रेस से प्रकाशित हुआ। यही नहीं, इन्द्र बसावड़ा और ऊषा देवी मित्रा की पुस्तकें भी इसी प्रेस से प्रकाशित हुई, लेकिन इससे भी कोई लाभ न हुआ। प्रेस और प्रकाशन दोनों की बुरी दशा थी और प्रेमचन्द जी का स्वर्गवास हो गया। उनके देहान्त के पश्चात् श्रीपत राय ने इस कार्य को अपने हाथ में ले लिया और उन्होंने अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की।

4. पत्रकारिता के विकास में योगदान—भले ही प्रेमचन्द ने अपने इस प्रेस और व्यवसाय से कोई लाभ न उठाया हो परन्तु पत्रकारिता के विकास के लिए वे निरन्तर कटिबद्ध रहे और वे निरन्तर प्रयास करते रहे कि पत्रकारिता का विकास होता रहे। 1 मार्च, 1930 में उन्होंने हंस नामक पत्र का सम्पादन और प्रकाशन शुरू किया। इस पत्र का नामकरण जयशंकर प्रसाद ने किया था। इस अवसर पर प्रेमचन्द ने लिखा था—"हंस का जन्म उस शुभ अवसर पर हो रहा है, जब भारत पराधीनता की बेड़ियों से निकलने के लिए तड़पने लगा है। स्वाधीनता मन की एक वृत्ति है और वृत्ति का जागना ही स्वाधीन हो जाना है। हम भी मिट्टी का दीपक लेकर खड़े होते हैं। हमारी चेष्टा होगी, स्वाधीनता का संघर्ष शीघ्र सफल हो। 'हंस' मानसरोवर की शान्ति छोड़कर आजादी की जंग में योग देने आया है। हंस की लगन कच्ची न होगी। हमें संघ शक्ति पर विश्वास है। साहित्य और समाज में वह उन गुणों का परिचय देगा, जो परम्परा से उसे प्रदान कर दिए गए हैं।"

'हंस' प्रेमचन्द काल की एक महत्त्वपूर्ण पत्रिका थी। इसमें प्रेमचन्द की लगभग एक दर्जन कहानियाँ छपीं। ये वे कहानियाँ हैं, जो कहानी कला की दृष्टि से सर्वोतम मानी जाती हैं। प्रेमचन्द **'हंस वाणी'** से सम्पादकीय लिखते थे, जो लगभग 237 हैं। हंस में प्रेमचन्द के 16 लेख प्रकाशित हुए जो **'नीर-क्षीर'** शीर्षक के अन्तर्गत दिए जाते थे। इसके साथ-साथ सवा सौ पुस्तकों की समीक्षाएं भी इसी शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित हुईं। **'हंस'** के **'स्वदेशांक', 'अभिनन्दनांथ'** तथा **'काशी अंक'** तीन विशेषांक थे जोकि अक्टूबर-नवम्बर 1932, अप्रैल 1933 तथा अक्टूबर-नवम्बर 1933 को प्रकाशित हुए। ब्रिटिश सरकार दो बार 1932 तथा 1936 में 'हंस' की जमानत भी मांगी थी। तत्पश्चात् इस पत्र की उपयोगिता के फलस्वरूप महात्मा गांधी की प्रेरणा से 'हंस' को भारतीय साहित्य का मुखपत्र बताया गया और मुंशी प्रेमचन्द तथा कन्हैया लाल मुंशी को इसका सम्पादक बनाया गया। **भारतीय साहित्य परिषद** के मुखपत्र के रूप में 'हंस' का प्रथम अंक अक्टूबर 1935 में प्रकाशित हुआ। सन् 1936 में 'हंस' में सेठ गोविन्ददास का एक नाटक छपा जिससे सरकार ने पुनः इस पत्रिका की जमानत मांग ली। महात्मा गांधी ने जमानत देने से इंकार कर दिया। तब प्रेमचन्द ने जमानत दी और हंस का प्रकाशित होना जारी रहा। परन्तु अक्टूबर, 1936 में प्रेमचन्द का निधन हो गया। फलस्वरूप प्रेमचन्द की पत्नी शिवरानी के सम्पादकत्व में **'हंस'** प्रकाशित होने लगा। मई, 1937 में **'हंस'** का प्रकाशन **'प्रेमचन्द स्मृति अंक'** के रूप में हुआ। बाद में श्रीपत राय और अमृतराय दोनों इस पत्र का सम्पादन करने लगे।

5. 'जागरण और 'जमाना' के प्रकाशन में योगदान—प्रेमचन्द की पत्रकारिता **'हंस'** के साथ ही समाप्त नहीं हो जाती। उन्होंने साप्ताहिक पत्रिका **'जागरण'** का भी संपादन प्रकाशन किया। विनोद शंकर व्यास ने इस पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया था, लेकिन आर्थिक हानि के फलस्वरूप इसे प्रेमचन्द को सौंप दिया। प्रेमचन्द के सम्पादन काल में 'जागरण' का प्रथम अंक 22 अगस्त, 1932 को प्रकाशित हुआ और 28 मई, 1934 तक यह प्रक्रिया चलती रही। बाद में सम्पूर्णानन्द इसका सम्पादन करने लगे। उनके काल में 'जागरण' के 13 अंक प्रकाशित हुए और बाद में यह पत्रिका बन्द हो गई। यहाँ इस तथ्य का उल्लेख करना आवश्यक होगा कि प्रेमचन्द ने सन् 1905 में 'स्वदेशी' पत्रिका में लिखना आरंभ किया था। अपने पहले लेख में उन्होंने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग को कैसे बढ़ाया जाए। उनका यह लेख आंज भी विशेष महत्व रखता है, क्योंकि 'स्वदेशी' के आधार पर जिन नेताओं ने देश की सत्ता की सभ्यता को सम्भाला, वे आज स्वदेशी की चर्चा तक नहीं करते। उन्हें तो केवल सत्ता से ही लगाव है। आज न तो स्वदेशीवाद की कोई चर्चा करता है और न ही समाजवाद की। पूंजीपति और नेता फल-फूल रहे हैं तथा अमीर और गरीब के बीच की खाई और अधिक चौड़ी होती जा रही है। निम्न मध्य वर्ग और मध्य वर्ग अपने अस्तित्व को बचाने में जुटे हुए हैं।

यदि गहराई से देखा जाए तो पत्रकार के रूप में प्रेमचन्द की चर्चा बहुत कम हुई है, परन्तु यह भी एक सच्चाई है कि तीन दशक तक वे पत्रकारिता के क्षेत्र में संघर्ष करते रहे। उपर्युक्त उल्लिखित पत्रों के अतिरिक्त स्वदेश, आज, मर्यादा आदि पत्रों आदि पत्रों से भी वे जुड़े रहे। असहयोग आन्दोलन के काल में वे एक प्रमुख स्तम्भकार थे। भले ही उन्होंने सक्रिय रूप से राजनीति में भाग नहीं लिया हो, परन्तु पत्रकारिता के माध्यम से स्वतन्त्रता आन्दोलन में उनका विशेष योगदान रहां। यही नहीं वे ब्रिटिश

सरकार के अत्याचारों पर लगातार सम्पादकीय टिप्पणियाँ लिखते रहे। वे जहाँ एक ओर स्वराज का समर्थन करने थे वहाँ दूसरी ओर साम्राज्यवादी शोषण के विरुद्ध आवाज उठाते रहे। केवल यह भली प्रकार प्रेमचन्द ही जानते थे कि जिस दिन से भारतीय बाजार में विलायती माल भर गया उस दिन से भारत का गौरव लुट गया। स्वराज मिलकर रहेगा (1931), दमन की सीमा (अप्रैल 1932), काले कानूनों का व्यवहार (जनवरी 1933), शक्कर पर एक्साइज ड्यूटी (जुलाई 1933), कोढ़ पर खाज (जून 1935) शीर्षकों से उनके द्वारा लिखी गई टिप्पणियाँ उपनिवेशवाद का विरोध करती हुई दिखाई देती हैं।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के प्रथम चरण में राष्ट्रवादी चिंतन अपने यौवन पर था। फलस्वरूप ब्रिटिश सरकार ने 1910 के प्रेस एक्ट की धाराओं को पुनर्जीवित कर दिया और सन् 1930 में न्यू इंडियन प्रेस आर्डिनेस का तीव्र विरोध करते हुए लिखा–"स्वेच्छाचारी सरकारों की बुनियाद पशुबल पर होती है। वह हर एक अवसर पर अपना पशुबल दिखाने को तैयार रहती है। ..... यह बिल्कुल नया आविष्कार है और इसके लिए इंग्लैंड और भारत दोनों ही सरकारों की जितनी प्रशंसा की जाए, वह थोड़ी ही है। अब न कानून की जरूरत है, न व्यवस्था की, काउंसिलें और असेम्बलियाँ सब व्यर्थ, अदालतें और महकमें सब फिजूल। डंडा क्या नहीं कर सकता, वह अजेय है, सर्वशक्तिमान है।"

वस्तुतः पत्रकारिता प्रेमचन्द के लिए मात्र मिशन था। उन्होंने इसे व्यवसाय नहीं बनाया। प्रेमचन्द पूंजी के घाटे के बावजूद पत्रकारिता से पीछे नहीं हटे। वे पत्रकारिता के आधारभूत के नियमों से पूर्णतया अवगत थे। यदि उन्हें पत्रकारिता के द्वारा पैसा कमाना होता तो वे ब्रिटिश सरकार से समझौता करके हंस नामक पत्रिका भी चला सकते थे परन्तु पत्रकारिता प्रेमचन्द के लिए स्वराज प्राप्त करने का साधन था। उन्होंने अपने पत्रों में सत्य और केवल सत्य का ही उद्घाटन किया। उन्होंने कभी भी सनसनीखेज खबरों और व्यवसायिक हितों को महत्त्व नहीं दिया। आधुनिक संसाधनों से पालित और पोषित पत्रकारिता को प्रेमचन्द जैसे महान पत्रकार से कुछ शिक्षा अवश्य ग्रहण करनी चाहिए परन्तु आज की पत्रकारिता मात्र राजनैतिक और आकर्षक लाभ कमाने में संलग्न है। उसे लोगों के हितों का कोई ध्यान नहीं है।

❖ ❖ ❖

8. प्रेमचन्द की भाषा-शैली

प्रश्न 8. प्रेमचन्द की भाषा-शैली का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

अथवा

प्रेमचन्द साहित्य की भाषा-शैली प्रांजल, प्रौढ़ और साहित्यिक खड़ी बोली है। इस कथन की समीक्षा कीजिए।

उत्तर–प्रेमचन्द अपने समय के एक महान साहित्यकार थे। उन्हें युग-निर्माता साहित्यकार भी कहा जाता है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों, कहानियों और निबन्धों में अपने युग की समस्याओं और मानव-जीवन की व्यथा-कथा का यथार्थ वर्णन किया है। तदर्थ उन्होंने सजीव, सार्थक तथा प्रभावशाली भाषा-शैली को अपनाया है। प्रेमचन्द पहले उर्दू में लिखते थे, लेकिन बाद में वे खड़ी बोली हिन्दी में लिखने लग गए। दूसरा, उनका पूरा साहित्य समाज के उपेक्षितों, अभावग्रस्तों तथा समाज के हाशिये पर खड़े हुए लोगों से जुड़ा हुआ है। इसलिए उन्होंने जनसाधारण की बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। भाषा प्रयोग के बारे में उनका हृदय बड़ा ही उदार रहा। यही कारण है कि प्रेमचन्द की भाषा में हिन्दी के तद्भव, तत्सम शब्दों के साथ-साथ उर्दू तथा अंग्रेजी के शब्दों का भी खुलकर प्रयोग किया गया है। यही नहीं, उन्होंने अपनी उर्दू मिश्रित भाषा को हिन्दुस्तानी भाषा का नाम दिया है। वे चाहते थे कि भारतीय भाषा और संस्कृति समन्वयात्मक हो और हमारी हिन्दी देश के विभिन्न भाषाओं के मध्य विचार-विनिमय की भाषा बने जिसे आज हम सम्पर्क भाषा कहते हैं। डॉ. राजेश्वर गुरू ने उनकी भाषा में उचित ही लिखा है–**"प्रेमचन्द की अपनी भाषा ऐसी ही थी जो देश के बड़े भू-भाग की जनता आसानी से समझ सकती थी। वास्तव में सरल, सजीव, मुहावरेदार, गद्य-शैली के जनक प्रेमचन्द जी का स्थान हिन्दी साहित्य में लोकप्रिय उपन्यासकार, कहानीकार, निबन्धकार के रूप में सर्वोच्च है। एक-एक शब्द का जितना सार्थक प्रयोग उन्होंने किया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।"** किसी भी साहित्यकार की भाषा-शैली तभी सफल कही जाएगी जब उसमें सहज, सरल तथा साहित्यिक शब्दों का प्रयोग किया जाएगा। साथ ही उसमें मुहावरों, लोकोक्तियों तथा लक्षणा-व्यंजना आदि का प्रयोग भी होगा। पुनः भाषा हमेशा पात्रानुकूल और प्रसंगानुकूल होनी चाहिए। प्रेमचन्द के कथा साहित्य और निबन्ध साहित्य में ये सभी विशेषताएँ देखी जा सकती हैं। निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर उनकी भाषा का मूल्यांकन हो सकता है–

1. सहज, सरल तथा स्पष्ट भाषा का प्रयोग—प्रेमचन्द का कथन था कि साहित्य की भाषा ऐसी होनी चाहिए जो सरल हो। जो भाषा कुछ व्यक्तियों तक ही सीमित रहती है, वह कभी भी सफल भाषा नहीं कही जा सकती। भाषा को सर्वसुलभ बनाने के लिए व्यापकता और उदारता की आवश्यकता पड़ती है। वह किसी वर्ग या स्थान की भाषा नहीं होनी चाहिए। इसलिए प्रेमचन्द ने समन्वयात्मक भाषा का प्रयोग किया है। उनकी भाषा में विभिन्न बोलियों, देशज तथा विदेशज शब्दों का सुन्दर मिश्रण देखा जा सकता है। पुनः उनकी भाषा पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल और भावानुकूल है।

प्रेमचन्द ने जिस साहित्य की रचना की, वह सर्वसाधारण की भाषा है, आम जनता की भाषा है। यहाँ हम 'परीक्षा' नामक कहानी से उनकी भाषा का एक उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। **"किसान बार-बार जोर लगाता और बार-बार झुंझलाकर बैलों को मारता, लेकिन गाड़ी उभरने का नाम न लेती। बेचारा इधर-उधर निराश होकर ताकता, मगर वहाँ कोई सहायक नजर न आता। गाड़ी को अकेले छोड़कर कहीं जा भी नहीं सकता। बड़ी आपत्ति में फँसा हुआ था। इसी बीच में, खिलाड़ी हाथों में डंडे लिए घूमते-घूमते उधर से निकले। किसान ने उनकी तरफ सहमी हुई आँखों से देखा; परन्तु किसी से मदद माँगने का साहस न हुआ।** प्रस्तुत भाषा में सहज, सरल और स्पष्ट शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसमें छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग हुआ है और यह भाषा पात्रानुकूल भी है। उनकी अन्य रचनाओं में भी चाहे उपन्यास हों, कहानी या निबन्ध सर्वत्र सहज, सरल और स्पष्ट भाषा का ही प्रयोग किया गया है।

2. पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग—प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों और कहानियों में पात्रानुकूल भाषा का ही प्रयोग किया है। उनका प्रत्येक पात्र अपनी योग्यता, मनोदशा तथा वातावरण के अनुकूल ही भाषा का प्रयोग करता है। यदि कोई मुसलमान पात्र है तो वह हमेशा उर्दू भाषा ही बोलता है। यदि कोई शुद्ध शिक्षित हिन्दू पात्र है तो वह साहित्यिक भाषा का ही प्रयोग करता है। पुनः उनकी भाषा में सहजता और स्वाभाविकता की विशेषता भी देखी जा सकती है। उनकी भाषा की यह प्रमुख विशेषता है। उदाहरण के रूप में 'निर्मला' उपन्यास में छोटा बच्चा सूर्यमन अपनी माँ कल्याणी से तोतली भाषा में बात करता है—**"तुम तली गई मुधे अतेले डल लगता ता। तुम त्यों तली गई।"** "उस दिन" कहानी में ऐसे अनेक स्थल मिल जाते हैं जहाँ एक अनपढ़ गरीब पात्र अपनी ग्रामीण भाषा का प्रयोग करता है। 'ठाकुर का कुँआ' नामक कहानी से एक उदाहरण देखिए—जिसमें जोखू नाम का एक गरीब दलित पात्र अपनी पत्नी गंगी से कहता है कि वह ठाकुर के कुँए से पानी भरने न जाएं—"हाथ-पाँव तुड़वा आयी और कुछ न होगा। बैठ चुपके से। ब्राह्मण देवता आशीर्वाद देंगे। ठाकुर लाठी मारेंगे, साहू जी एक के पाँच लेंगे। गरीबों का दर्द कौन समझता है। हम तो मर भी जाते हैं, तो कोई दुआर पर झांकने नहीं आता, कंधा देना तो बड़ी बात है। ऐसे लोग कुएँ से पानी भरने देंगे?" इसी प्रकार एक मुसलमान पात्र की भाषा का एक उदाहरण देखिए—अबुल वफा ने फर्माया, "मगर अब खुदा के फजल से हमको भी अपने नफे-नुकसान का एहसास होने लगा। यह हमारी तादाद घटाने की संजीदा कोशिश है।"

3. व्यवहारिक भाषा का प्रयोग—अन्यत्र यह स्पष्ट किया जा चुका है कि प्रेमचन्द के उपन्यास और कहानियाँ वास्तव जीवन से जुड़ी हुई रचनाएँ हैं। यही कारण है कि लेखक ने अपने साहित्य में मानवीय जीवन का ही वर्णन किया है और अपनी अभिव्यक्तियों को अपनी रचनाओं में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। विशेषकर उनके कहानी साहित्य में विभिन्न वर्गों के पात्रों का चित्रण देखा जा सकता है। उनकी भाषा वकील, मुंशी, किसान, मजदूर, जमींदार, दलित पात्रों तथा उनके परिवार जनों से जुड़ी हुई है। वे यथास्थान उर्दू, अंग्रेजी और देशज शब्दों का भी प्रयोग करते दिखाई देते हैं। कुछ स्थलों पर तो वे नीति वाक्यों का प्रयोग करते हैं तथा कुछ स्थलों पर मुहावरों, लोकोक्तियों तथा सूक्तियों का। इसके साथ-साथ वे सहज, सरल तथा सामान्य बोलचाल के शब्दों का भी प्रयोग करते हैं। फलस्वरूप उनकी भाषा व्यावहारिक भाषा बन गई है। 'नमक का दारोगा' से एक उदाहरण लीजिए—**"किंतु अदालत में पहुंचने की देर थी। पंडित अलोपीदीन इस अगाध धन के सिंह थे। अधिकारी वर्ग उनके भक्त, उनके सेवक, वकील-मुख्तार वर्ग उनके आज्ञापालक और अर्दली, चपरासी तथा चौकीदार तो उनके बिना मोल के गुलाम थे। उन्हें देखते ही लोग चारों तरफ से दौड़े। सभी लोग विस्मित हो रहे थे। इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया, बल्कि इसलिए कि वह कानून के पंजे में कैसे आए? ऐसा मनुष्य जिसके पास असाध्य साधन करने वाला धन और अनन्य वाचालता हो, वह क्यों कानून के पंजे में आए।"**

4. व्यंग्य प्रधान भाषा का प्रयोग—प्रेमचन्द ने अपने कथा साहित्य में समाज में व्याप्त कुरीतियों, रूढ़ियों, धार्मिक आडम्बरों, अंग्रेजी सरकार की शोषणपूर्ण आर्थिक नीतियों, जमींदारों तथा महाजनों द्वारा किए जा रहे शोषण तथा दलितों और किसानों की व्यथा का अनेक स्थलों पर व्यंग्यपूर्ण चित्रण किया है। जब-जब वे किसी वर्ग विशेष पर व्यंग्य करते हैं तो वह उसकी रूढ़ियों और आडम्बरों का पर्दाफाश कर देते हैं। 'सद्गति' प्रेमचन्द की एक उल्लेखनीय कहानी है जिसमें लेखक पंडित घासीराम के बाह्य आडंबरों तथा दलितों के किए गए शोषण पर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं—**"पं. घासीराम ईश्वर के परम भक्त थे। नींद खुलते ही**

ोपासन में लग जाते। मुँह-हाथ धोते आठ बज जाते, तब असली पूजा शुरू होती, ... द आधे घंटे तक चंदन रगड़ते, फिर आईने के सामने एक तिनके से माथे पर तिलक लगाते। चंदन की दो ... ल रोरी की बिंदी होती थी। फिर छाती पर, बाँहों पर चंदन की गोल-गोल मुद्रिकाएँ बनाते। फिर ठाकुर जी की मूर्ति निकालकर नहलाते, चंदन लगाते, फूल चढ़ाते, आरती करते, घंटी बजाते। दस बजते-बजते वह पूजन से उठते और भांग छानकर बाहर ते। तब तक दो-चार जजमान द्वार पर आ जाते। ईशोपासन का तत्काल फल मिल जाता। वही उनकी खेती थी।"

'शतरंज के खिलाड़ी' मुंशी प्रेमचन्द की एक सुप्रसिद्ध यथार्थवादी कहानी है। इसे व्यंग्य प्रधान कहानी भी कहा जा सकता । इस कहानी में लेखक ने नवाबों की विलासप्रियता, उसके परिवार पर प्रभावों तथा समाज पर करारा व्यंग्य किया है। यह हानी वाजिद अलीशाह के काल से जुड़ी हुई है। कहानीकार ने इस कहानी में लिखा है कि लखनऊ के नवाब वाजिद अलीशाह ी कंपनी की सेना ने गिरफ्तार कर लिया और उसकी सेना, नगर के निवासियों और छोटे-मोटे नवाबों की तरफ से तनिक भी तिक्रिया नहीं हुई। एक उदाहरण देखिए—**"शहर में न कोई हलचल थी, न मार-काट। एक बूँद खून भी नहीं गिरा था। आज तक कसी स्वाधीन देश के राजा की पराजय इतनी शांति से इस तरह खून बहे बिना न हुई होगी। यह वह अहिंसा न थी, जिस पर वगण प्रसन्न होते हैं। यह वह कायरपन था, जिस पर बड़े-बड़े कायर भी आँसू बहाते हैं। अवध के विशाल देश का नवाब बंदी ला जाता था और लखनऊ ऐश की नींद में मस्त था। वह राजनीतिक अधः पतन की चरम सीमा थी।"**

5. मिश्रित शब्दों का प्रयोग—प्रेमचन्द ने अपनी भाषा में संस्कृत के तत्सम, तद्भव तथा देशज शब्दों के अतिरिक्त अरबी, फ़ारसी तथा अंग्रेजी शब्दों का खुलकर प्रयोग किया है। इसका कारण यह है कि भाषा के बारे में प्रेमचन्द का दृष्टिकोण बड़ा उदार था। वे अपनी भाषा के माध्यम से विभिन्न सम्प्रदायों में समन्वयात्मकता उत्पन्न करना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने खड़ी बोली हिन्दी को हिन्दुस्तानी भाषा कहना अधिक उचित समझा। उनकी भाषा में प्रयुक्त कुछ शब्दों के उदाहरण यहाँ दिए जा रहे हैं—

(क) अरबी-फारसी के शब्द—तकदीर, ईमान, मुवक्किल, दावा, इंतजार, मुरव्वत, मोहब्बत, नसीब, मसला, गुलाम, दारोगा, नमक हलाली, मुकदमा, नौबत, ओहदा, ईदगाह, अल्लाह, सहसवार, खैरियत, मालिक, खानसामा, ईनाम-इकराम।

(ख) संस्कृत के तत्सम शब्द—पवित्र आत्मा, मुद्रिका, मूर्ति, निशा, सद्वृत्ति, दुर्भावना, साहित्य, नश्वरता, शृंगार, उद्देश्य, लक्ष्य, उद्योग, अध्यात्म, वृद्धि, अनुभूति अन्तःपुर, प्रतिष्ठा, आनन्द, संसर्ग, असाध्य, नर-पिशाच, इंदु, पराभूत आदि।

(ग) तद्भव शब्द—मजूर, जेहल, ब्राह्मण, नक्शा, मूरख, दबैल, बड़प्पन, झोंपड़ा, खराब होना।

(घ) अंग्रेजी के शब्द—कोर्ट, पुलिसमैन, क्लब, डॉक्टर, क्लर्क, डिसमिस, स्टेशन मास्टर, हेड क्लर्क, फिलॉस्फी आदि।

5. युग्म शब्द—खर्चा-वर्चा, गुड़की-झिड़की, पानी-वानी, रूखा-सूखा, गांठ-सांठ, गप-शप, नाच-तमाशा, पान-पत्ता, खरी-खोटी, नौकरी-चाकरी, लेना-देना, आपा-धापी आदि।

6. अलंकृत भाषा का प्रयोग—प्रेमचन्द के उपन्यासों और कहानियों की एक अन्य विशेषता यह है कि उनमें अलंकारों का सहज और स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। वे प्रायः उपमा, उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त, रूपक आदि अलंकारों का सफल प्रयोग करते हैं जिससे उनकी भाषा रोचक बन गई है। एक उदाहरण देखिए—

"लालसा का आवरण हट जाता है और वास्तविकता अपने नग्न रूप में सामने खड़ी होती है, उसके बाद सन्ध्या आती है, शीतल और शान्त। जब हम थके हुए पथिकों की भांति दिनभर की यात्रा का वृत्तान्त कहते और सुनते हैं, तब तटस्थ भाव से मानों हम किसी ऊँचे शिखर पर जा बैठते है जहाँ नीचे के जनरव हम तक नहीं पहुँचता।"

7. मुहावरों, लोकोक्तियों तथा सूक्तियों का प्रयोग—प्रेमचन्द ने अपने निबन्धों तथा कहानियों में असंख्य मुहावरों, लोकोक्तियों तथा सूक्तियों का प्रयोग किया है। ऐसे कुछ उदाहरण दिए जा सकते हैं—जैसे—आड़े हाथों लेना, ताने से छेदना, रुलाने का सुअवसर हाथ से न जाने देना, लिखा जो-जो बख्शीश सो-सो, नाटन खेती बहुरियन घर आदि के नाम गिनवाए जा सकते हैं। उन्होंने जी खट्टा होना, दूसरों की तालियों पर नाचना, मुँह फैलाना, पंजों से छुड़ाना, दम मारना, आँखों में अंधेरा छा जाना, हिम्मत जवाब देना, दूध से मक्खी की तरह निकाल फेंकना आदि मुहावरों का भी सुन्दर प्रयोग किया है।

इसी प्रकार कुछ सूक्तियों के भी उदाहरण देखिए—

(i) कली प्रभात समीर ही के स्पर्श से खिलती है।

(ii) तानों से सीख मिलने के बदले उल्टा और जी जलने लगता है।

(iii) सोने की गठरी किसे प्यारी नहीं होती।

(iv) खुशी से हँसने वाले बहुतेरे मिल जाते हैं, रंज में जो साथ दे वही हमारा सच्चा मित्र है।

8. विविध प्रकार की शैलियों का प्रयोग–प्रेमचन्द ने विषय के अनुकूल ही शैलियों का साहित्यकार की अपनी होती है। कहने का ढंग, तरीका और सलीका सबका अलग-अलग होता है। प्रेमचन्द में भी शैलीगत विविधता देखी जा सकती है। यद्यपि उनके उपन्यासों में सभी प्रकार की शैलियों के प्रयोग देखे जा सकते हैं, लेकिन कहानियों तथा उपन्यासों में बहुत कम शैलियों के प्रयोग हुए हैं। फिर भी कुछ उदाहरण देखे जा सकते हैं–

(i) **वर्णनात्मक शैली**–इस शैली में साहित्यकार अपनी रचना में किसी विषय अथवा वस्तु का केवल वर्णन करता है। यह वर्णन पाठक को अत्यधिक प्रभावित करता है। विशेषकर कथा साहित्य में वर्णनात्मक शैली का ही अधिक प्रयोग किया गया है। प्रेमचन्द की कहानी 'परीक्षा' से वर्णनात्मक शैली का एक उदाहरण देखिए–**"किसान बार-बार जोर लगाता और बार-बार झुंझला कर बैलों को मारता, लेकिन गाड़ी उभरने का नाम न लेती। बेचारा इधर-उधर निराश होकर ताकता, मगर वहाँ कोई सहायक नजर न आता। गाड़ी को अकेले छोड़कर कहीं जा भी नहीं सकता। बड़ी आपत्ति में फँसा हुआ था। इसी बीच में खिलाड़ी हाथों में डंडे लिए घूमते-घूमते उधर से निकले। किसान ने उनकी तरफ सहमी हुई आँखों से देखा; परन्तु किसी से मदद मांगने का साहस न हुआ। खिलाड़ियों ने भी उसकी ओर देखा मगर बंद आँखों से, जिनमें सहानुभूति न थी। उनमें स्वार्थ था, मद था, मगर उदारता और वात्सल्य का नाम भी न था।"**

(ii) विश्लेषणात्मक शैली–इस शैली में पात्र विशेष की मानसिकता तथा सोच का विश्लेषण किया जाता है। 'नमक का दारोगा' नामक कहानी में जो वंशीधर नमक का दारोगा के पद पर नियुक्त हो जाता है उसका पिता अपने बेटे को घर की दुर्दशा से अवगत कराता है और उसे उपदेश देता है कि तुम जिस पद पर लगे हो उसमें रिश्वत देने अथवा कमाई का अवसर अधिक होता है। वह अपने पुत्र वंशीधर को कहता है–**"नौकरी के ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते फिर लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है, जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी बरकत होती है, तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ।"**

(iii) भावात्मक शैली–भावात्मक शैली के प्रयोग से लेखक अपने कथ्य को ग्राह्य बना देता है। प्रेमचन्द के साहित्य में अनेक स्थल ऐसे हैं जहाँ उन्होंने भावात्मक शैली का प्रयोग किया है। इस शैली में लेखक अपने पात्रों की कोमल भावनाओं, कामनाओं तथा संवेदनाओं का बड़ा ही सजीव चित्रण करता है। 'ईदगाह' प्रेमचन्द की एक उल्लेखनीय कहानी है जिसका प्रमुख पात्र पंचवर्षीय बालक हामिद घर से तीन पैसे लेकर अन्य बालकों के साथ ईदगाह का मेला देखने जाता है। मेले में अपनी भूख तथा इच्छाओं पर नियन्त्रण करके अपनी बूढ़ी दादी के लिए एक चिमटा लेकर आता है। पहले तो हामिद की दादी यह सब देखकर क्रोधित हो उठती है परन्तु फिर हामिद को देखकर उसका क्रोध शान्त हो जाता है। यहाँ कहानीकार प्रेमचन्द ने बूढ़ी अमीना की स्थिति का चित्रण भावपूर्ण शैली में किया है–"बुढ़िया का क्रोध तुरन्त स्नेह में बदल गया और स्नेह भी वह नहीं जो पुगल्भ होता है और अपनी सारी कसक शब्दों में बिखेर देता है। यह मूल स्नेह था, खूब ठोस, रस और स्वाद से भरा हुआ। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है। दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा। इतना जब्त इससे हुआ कैसे? वहाँ भी इसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्गद् हो गया और इससे अब एक बड़ी विचित्र बात हुई। हामिद के इस चिमटे से भी विचित्र। बच्चे हामिद ने बूढ़े व्यक्ति का पार्ट खेला था। बुढ़िया अमीना बालिका अमीना बन गई। वह रोने लगी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें गिरती जाती थी।"

(iv) विचारात्मक एवं चिंतनपरक शैली का प्रयोग–प्रेमचन्द गंभीर प्रवृत्ति के साहित्यकार थे। वे तत्कालीन समाज की विसंगतियों और कुरीतियों से पूर्णतया अवगत थे। इसीलिए उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों में पात्रों के संवादों द्वारा इन विसंगतियों के प्रति चिन्ता व्यक्त की है। 'सवा सेर गेहूँ' प्रेमचन्द की एक उल्लेखनीय कहानी है। इसका प्रमुख पात्र शंकर ने सात वर्ष पूर्व विप्र महाजन से सवा सेर गेहूँ उधार लिया था। यद्यपि उसने सारी गेहूँ विप्र महाजन को लौटा दी थी लेकिन फिर भी साहू का ब्याज बढ़ता ही जा रहा था। विप्र साहू ने कहा कि तुमने मुझे साठ रुपए लौटाने हैं, शंकर ने अपनी चिलम पटक दी, हुक्का तोड़ दिया, तंबाकू की हांडी भी चूर-चूर कर डाली और गर्मी-सर्दी में काम करके साठ रुपए जमा किए और विप्र ब्राह्मण को लौटा दिए परन्तु ब्राह्मण ने कहा अभी भी कर्जा बाकी है। यहाँ प्रेमचन्द ने विचारात्मक एवं चिन्तनपरक शैली का प्रयोग करते हुए शंकर की दयनीय स्थिति पर प्रकाश डाला है–**"इस निर्णय की कहीं अपील न थी : मंजूर की जमानत कौन करता? कहीं शरण न थी, भागकर कहाँ जाता? दूसरे दिन से उसने विप्र जी के यहाँ काम करना शुरू कर दिया। सवा सेर गेहूँ की बदौलत उम्र भर के**

लिए गुलामी ... उस अभागे को अब अगर किसी विचार से संतोष होता था, तो वह यह था कि वह मेरे पूर्वजन्म का संस्कार है। स्त्री को वे काम करने पड़ते थे, जो उसने कभी न किए थे। बच्चे दानों को तरसते थे, लेकिन शंकर चुपचाप देखने के सिवा और कुछ न कर सकता था। वह गेहूँ के दाने किसी देवता के शाप की भांति आजीवन उसके सिर से न उतरे।"

(v) **संवादात्मक शैली**—प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में संवादात्मक शैली का भी सुन्दर और सफल प्रयोग किया है। संवादों के माध्यम से वे अपने कथ्य को अत्यन्त रोचक और आकर्षक बना देते हैं। उन्होंने कहानियों के अतिरिक्त उपन्यासों तथा अपने एकमात्र नाटक कर्बला में भी संवादों का सफल प्रयोग किया है। 'बड़े घर की बेटी' कहानी से एक उदाहरण देखिए—

श्रीकंठ ठाकुर बेनी माधव का बड़ा बेटा है और बी. ए. पास करके शहर में नौकरी करता है। छोटा बेटा अनपढ़ और कसरती युवक था। श्रीकंठ का विवाह एक बड़े ऊँचे कुल की लड़की आनन्दी से हुआ जिसके साथ बिहार सिंह ने बदतमीजी की थी। घर में थोड़ा घी होने की बात सुनकर वह भड़क उठा और उसने अपनी एक खड़ाऊँ उठाकर आनन्दी को मारी जिससे उसकी उंगली पर काफी चोट आ गई। जब श्रीकण्ठ छुट्टी के दिन घर आया तो उसे सारी स्थिति का पता चल गया। अतः वह अपने पिता को कहता है—"श्रीकण्ठ-इसलिए कि मुझे भी अपनी मान-प्रतिष्ठा का कुछ विचार है। आपके घर में अब न्याय और हठ का प्रकोप हो रहा है। जिनको बड़ों का आदर-सम्मान करना चाहिए, वे उनके सिर चढ़ते हैं। मैं दूसरे का नौकर ठहरा, घर पर रहता नहीं। यहाँ मेरे पीछे स्त्रियों पर खड़ाऊँ और जूतों की बौछारें होती हैं। कड़ी बात तक चिन्ता नहीं। कोई एक की दो कह लें, वहाँ तक मैं सह सकता हूँ किन्तु यह कदापि नहीं हो सकता कि मेरे ऊपर लात-घूसे पड़ें और मैं दम न मारूं।"

(vi) चित्रात्मक शैली—प्रेमचन्द के साहित्य की प्रमुख विशेषता यह भी है कि उन्होंने अनेक स्थलों पर चित्रात्मक भाषा का प्रयोग किया है जिससे विभिन्न दृश्यों के चित्र अंकित हो जाते हैं। 'शतरंज के खिलाड़ी' प्रेमचन्द की अमर कहानी है। यह अवध साम्राज्य के सुप्रसिद्ध नवाब वाजिद अली शाह की पृष्ठभूमि में लिखी गई है। अवध की राजधानी लखनऊ थी। इस कहानी में लेखक वाजिद अली शाह के शासन और लखनऊ की विलासिता का सुन्दर चित्र अंकित करते हैं। यथा—"वाजिद अली शाह का समय था। छोटे-बड़े, अमीर-गरीब सभी विलासिता में डूबे हुए थे। कोई नृत्य और गान की मजलिस सजाता था, तो कोई अफीम की पिनक में ही मजे लेता था। जीवन के प्रत्येक विभाग में आमोद-प्रमोद का प्राधान्य था। शासन विभाग में, साहित्य क्षेत्र में, सामाजिक व्यवस्था में, कला-कौशल में, उधोग-धंधों में आहार-व्यवहार में, सर्वत्र विलासिता व्याप्त हो रही थी।"

(vii) व्यंग्यात्मक शैली—प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में समाज में व्याप्त कुरीतियों, रूढ़ियों, धार्मिक आडम्बरों द्वारा गरीबों पर किए गए शोषण तथा अंग्रेजी सरकार के शोषण आदि पर अनेक स्थानों पर व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग किया गया है। शतरंज के खिलाड़ी नामक कहानी में ही कहानीकार प्रेमचन्द लखनऊ की विलासिता पर करारा व्यंग्य करते हुए लिखते हैं—**"बटेर लड़ रहे हैं। तीतरों की लड़ाई के लिए पाली बदी जा रही है। कहीं चौसर बिछी हुई है; पौ-बारह का शोर मचा हुआ है। कहीं शतरंज का घोर संग्राम छिड़ा हुआ है। राजा से लेकर रंक तक इसी धुन में मस्त थे। यहाँ तक कि फकीरों को पैसे मिलते, तो वे रोटियाँ न लेकर अफीम खाते या मदिरा पीते। शतरंज, ताश, गंजीफा खेलने से बुद्धि तीव्र होती है, विचार-शक्ति का विकास होता है, पेचीदा मसलों को सुलझाने की आदत पड़ती है। ये दलीलें जोरों के साथ पेश की जाती थीं।"**

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में भाषा के जिस रूप का प्रयोग किया है, वह सशक्त तथा भावाभिव्यक्ति में सक्षम है। उनकी भाषा—शैली उनके विचारों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने में सफल रही है। उनकी भाषा प्रवाहमयी, प्रभावशाली, पात्रानुकूल तथा प्रसंगानुकूल है। प्रेमचन्द ने विविध शैलियों का सफल प्रयोग करके साहित्य के शैली पक्ष को उन्नत बनाया है। निश्चय से प्रेमचन्द की भाषा-शैली सार्थक, सारगर्भित तथा व्यावहारिक है।

❖❖❖

9. राष्ट्रीय आन्दोलन और प्रेमचन्द

प्रश्न 9. राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रेमचन्द के योगदान पर एक आलोचनात्मक निबन्ध लिखिए।

अथवा

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रेमचन्द ने अपने साहित्य के द्वारा क्या योगदान दिया? स्पष्ट करें।

उत्तर—प्रेमचन्द का युग भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का युग था। राष्ट्रीय आन्दोलन के रंगमंच पर महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, मदन मोहन मालवीय, गोपाल कृष्ण गोखले जैसे बड़े-बड़े नेताओं का अभिनय हो चुका था। इसके साथ-साथ कुछ आन्दोलनकारी

सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, गणेश शंकर विद्यार्थी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। एक सच्चे साहित्यकार ... गतिविधियों की परिस्थितियों से पूर्णतया अवगत थे। वे देशवासियों की दशा और दिशा तथा नेताओं एवं आन्दोलनकारियों को भी अच्छी प्रकार से जानते थे। यही नहीं, प्रेमचन्द में देशभक्ति की भावना भी थी। इसलिए उन्होंने अपने साहित्य में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय आन्दोलन के विविध रूपों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

राष्ट्रीय आन्दोलन तभी चलाया जाता है जब देश की जनता के साथ सत्ता प्राप्त विदेशी सरकार अनाचार, दुराचार, अन्याय और शोषण करती है। जब जनता की सहन करने की शक्ति समाप्त हो जाती है तो देशवासियों को मजबूर होकर राष्ट्रीय आन्दोलन चलाना पड़ता है। अंग्रेजी शासक लम्बे काल से हमारे देश के धन को लूटकर विदेश ले जा रहे थे और हमें गुलाम बनाकर हमारा प्रत्येक दृष्टि से शोषण कर रहे थे। देश प्रेम की दबी हुई चिंगारी ही राष्ट्रीय आन्दोलन के रूप में भयंकर आग का रूप धारण कर लेती है। तत्कालीन साहित्यकार राष्ट्रीय आन्दोलन की चिंगारी को हवा देने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे थे। प्रेमचन्द द्वारा रचित कहानियों का संग्रह 'सोजे वतन' तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने इसलिए जब्त कर लिया, क्योंकि उसमें कहानीकार ने अपनी कहानियों के द्वारा देशवासियों में देश प्रेम की भावना उत्पन्न करने का प्रयास किया था। भले ही सोजे वतन जब्त हो चुकी थी परन्तु प्रेमचन्द ने सरकारी नौकरी करते हुए भी अपने साहित्य में राष्ट्रीय आन्दोलनों को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इस सन्दर्भ में निम्नलिखित विवेचन उपादेय होगा—

1. ब्रिटिश सरकार की साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का उद्घाटन—प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों एवं कहानियों के माध्यम से ब्रिटिश सरकार की नीति का पर्दाफाश किया है। उन्होंने भारतवासियों को न केवल अंग्रेजों की मूल विचारधारा से अवगत कराया बल्कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में खुलकर भाग लेने की भी प्रेरणा दी। इस सन्दर्भ में उनके द्वारा रचित 'रंगभूमि' उपन्यास का उल्लेख कर सकते हैं जिसमें ब्रिटिश सरकार की साम्राज्यवादी नीति पर प्रकाश डाला गया है। एक स्थल पर अंग्रेज जिलाधीश मिस्टर क्लार्क कहता भी है—**"अंग्रेज जाति भारत को अनन्त काल तक अपने साम्राज्य का अंग बनाए रखना चाहती है। कंजरवेटिव हो या लिबरल, रेडिकल हो या लेबर, नेशनलिस्ट हो या सोशलिस्ट, इस विषय में सभी एक ही आदर्श का पालन करते हैं। अंग्रेज जाति कभी त्याग के लिए उच्च सिद्धांतों पर प्राण देने के लिए प्रसिद्ध नहीं रही। सब-के-सब मैं लेबर हूँ। साम्राज्यवादी हैं"**

जहाँ एक ओर विदेशी सरकार अपनी कूटनीति और दमन नीति द्वारा भारतवासियों पर अत्याचार कर रही थी। वहाँ दूसरी ओर वह अपने साम्राज्यवादी हितों की रक्षा करने में संलग्न थी। राष्ट्रवादियों द्वारा जो भी विरोध किया जाता, उसे वह कुचल देती थी। रंगभूमि की पात्र सोफिया मिस्टर क्लार्क से प्रार्थना करती है कि वह विनय को जेल से मुक्त कर दे। परन्तु मिस्टर क्लार्क किसी भी शर्त पर तैयार नहीं होता बल्कि वह सोफिया को कहता भी है—"साम्राज्य के लिए हम बड़े-से-बड़ा नुकसान उठा सकते हैं, बड़ी-से-बड़ी तपस्याएँ कर सकते हैं। हमें अपना राज्य से भी प्रिय है, और जिस व्यक्ति से हमें क्षति की लेश-मात्र भी शंका हो, उसे हम कुचल डालना चाहते हैं, उसका नाश कर देना चाहते हैं, उसके साथ किसी भाँति की रियायत सहानुभूति यहाँ तक कि न्याय का व्यवहार भी नहीं कर सकते।" 'रंगभूमि' का एक और पात्र डॉ. गांगुली है जो ब्रिटिश सरकार की न्यायप्रियता पर पूरा विश्वास करता था। काउंसिल में जब डॉ. गांगुली मिस्टर क्लार्क की आलोचना करता है तो उसे पशु बल से चुप करा दिया जाता है। फलस्वरूप गांगुली का विचार बदल जाता है। वह समझ जाता है कि यह ब्रिटिश सरकार न्यायप्रिय नहीं है, बल्कि भारतवासियों का शोषण करने वाली है। इस अवसर पर गांगुली कहता भी है—**"आज मेरे दिल से यह विश्वास उठ गया, जो गत चालीस वर्षों से जमा हुआ था कि गवर्नमेंट हमारे ऊपर न्यायालय बल से शासन करना चाहती है। आज उस न्यायालय की कलई खुल गई, हमारी आँखों से पर्दा उठ गया और हम गवर्नमेंट को उसके नग्न, आवरणहीन रूप में देख रहे हैं। अब हमें स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि केवल हमको पीसकर तेल निकालने के लिए, हमारा अस्तित्व मिटाने के लिए, हमको अनन्त काल तक चक्की का बैल बनाए रखने के लिए हमारे ऊपर राज किया जा रहा है। अब विदित हो गया कि उद्देश्य सबका एक ही है, केवल साधनों में अंतर है।"** प्रेमचन्द ने अपनी कहानी 'अधिकार चिंता' में अन्योक्ति द्वारा ब्रिटिश सरकार की कूटनीति का पर्दाफाश किया है। इस कहानी में भले ही पशुओं के माध्यम से ब्रिटिश सरकार के रहस्य का उद्घाटन किया गया है परन्तु यह भी सत्य है कि यह सरकार हिन्दुओं और मुसलमानों में फूट डालती थी और उनमें झगड़ा कराती थी। पहले तो स्वयं किसी एक सम्प्रदाय को दूसरे के विरुद्ध भड़काती थी और जब दोनों सम्प्रदाय लड़ने लगते थे तो फिर अपने पौरुष बल द्वारा उन पर अत्याचार करती थी। ब्रिटिश सरकार की एक ही नीति थी—फूट डालो और राज करो।

2. भारतीयों के प्रति अंग्रेजों का अन्यायपूर्ण और शोषणपूर्ण व्यवहार—ब्रिटिश सरकार लम्बे काल से भारतवासियों पर तरह-तरह के अत्याचार कर रही थी। अन्याय, शोषण और क्रूरता इनके मुख्य हथियार थे। जब भारतवासियों ने यह भली प्रकार से समझ लिया कि ब्रिटिश सरकार का प्रमुख लक्ष्य है—भारत के धन को विदेश में ले जाना और यहाँ के निवासियों को कुचलना।

जुलूस निकाला गया और नेताओं ने यह आश्वासन भी दिया कि किसी प्रकार का दंगा-फसाद नहीं होगा तब ब्रिटिश पुलिस घोड़ों को ऐड़ लगाकर जुलूस पर टूट पड़ी। इब्राहिम के सिर पर बैटन से इतना जोर से मारा गया कि वह गिर गया और घोड़ों की टापों के नीचे आ गया। लोगों ने इब्राहिम को निकालने के लिए भरसक प्रयास किया पर उन पर घुड़सवारों ने डंडों से प्रहार किया। अहिंसा नीति अपनाने के कारण सभी लोग चुपचाप अत्याचारों को सहन करते रहे। जब पुलिस से बदला लेने के लिए नगर के लोग वहाँ आने लगे तो अहिंसावादी इब्राहिम ने लोगों को वापस लौट जाने के लिए कहा। अन्ततः एक स्ट्रैचर द्वारा इब्राहिम को वापिस ले जाया गया। तीन दिनों तक चोटों और प्रहारों की पीड़ा सहन करने के बाद इब्राहिम का देहान्त हो गया।

स्वराज्य संबंधी आन्दोलनों को सरकार कुचलने का भरसक प्रयास कर रही थी क्योंकि सरकार भली प्रकार से समझती थी कि लोगों की यह जागृति साम्राज्य के लिए भयानक खतरा है। 'समर-यात्रा' नामक कहानी इस तथ्य को जागृत करती है। इस कहानी में बूढ़ी नोहरी और कोदई पर नायक की बातों का बड़ा प्रभाव पड़ता है। वे लोगों से कहती हैं कि वे स्वतंत्रता संग्राम में खुलकर भाग लें। पुलिस दारोगा को ललकार कर नोहरी कहती भी है—**"क्या लाल पगड़ी बांधकर तुम्हारी जीभ भी ऐंठ गयी है। कोदई क्या तुम्हारा गुलाम है कि कोदैया-कोदैया कर रहे हो? हमारा ही पैसा खाते हो और हमें ही आँखें दिखाते हो।"** इस प्रकार पुलिस दारोगा की बातें सुनकर लोग थोड़े इधर-उधर बिखर गए लेकिन शीघ्र ही इकट्ठे हो गए। तब दारोगा उन पर हण्टरों से प्रहार करने लगा। नोहरी को भी एक हण्टर लगा। कोदई ने उसे गिरने से बचा लिया। जब कोदई गिरफ्तार कर लिया गया तो नोहरी लोगों को स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कहती है—"आज तुमने देख लिया न कि हमारे ऊपर कानून से नहीं, लाठी से राज हो रहा है। हम इतने बेशरम हैं कि इतनी दुर्दशा होने पर भी कुछ नहीं बोलते। हम इतने स्वार्थी, इतने कायर न होते, तो उनकी मजाल थी कि हमें कौड़ों से पीटते। जब तक गुलाम बने रहोगे, उनकी सेवा-टहल करते रहोगे, तुम्हें भूसा-चोकर मिलता रहेगा, लेकिन जिस दिन तुमने कंधा टेढ़ा किया, उसी दिन मार पड़ने लगेगी।" प्रेमचन्द पूर्ण स्वराज्य के पक्षपाती थे, लेकिन स्वराज्य संबंधी उनका दृष्टिकोण पूर्णतया प्रजातांत्रिक था। उन्होंने डोमिनियन स्टेटस का भी विरोध किया क्योंकि इनके जमींदार और अमीर लोग मजदूरों और किसानों को ही दबा रहे थे। वे यह भी जानते थे कि उनके हितों की रक्षा अंग्रेजी शासन से ही हो रही है। यदि स्वराज्य प्राप्ति हो गई तो वे गरीबों और मजदूरों को न तो कुचल पाएंगे और न ही उनका शोषण कर सकेंगे। **'आहुति'** नामक कहानी में प्रेमचन्द ने रूपमणि नामक पात्र के माध्यम से अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए हैं—**"अगर स्वराज्य आने पर भी संपत्ति का यही प्रभुत्व बना रहे और पढ़ा-लिखा समाज यों ही स्वार्थमय बना रहे, तो मैं कहूंगी, ऐसे स्वराज्य का न आना ही अच्छा। अंग्रेजी महाजनों की धनलोलुपता और शिक्षितों का स्वहित ही आज हमें पीसे डाल रहा है। जिन बुराइयों को दूर करने के लिए आज प्राणों को हथेली पर लिए हुए हैं, उन्हीं बुराइयों को क्या प्रजा इसलिए सिर चढ़ाएगी कि वे विदेशी नहीं, स्वदेशी हैं? कम-से कम मेरे लिए तो स्वराज्य का यह अर्थ नहीं कि जॉन की जगह गोविंद बैठ जाएँ। मैं समाज की ऐसी व्यवस्था देखना चाहती हूँ जहाँ कम-से-कम विषमता को आश्रय मिल सके।"**

4. विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार—भारत में लॉर्ड कर्जन की बंग-भंग योजना के बाद राजनीतिक चेतना जागरुक हुई। इसका भारतीय जनता ने पुरजोर विरोध किया। कांग्रेसियों का भी ब्रिटिश सरकार की न्यायप्रियता और उदारता से विश्वास उठ गया। विरोध करने के लिए उन्होंने विदेशी वस्तुओं और विदेशी संस्थाओं का बहिष्कार करना शुरू कर दिया। साथ ही राष्ट्रीय संस्थाओं की स्थापना करने का निर्णय लिया। शीघ्र ही सूरत के अधिवेशन में कांग्रेस के नरम दल और गरम दल दो वर्ग बन गए। नरम दल के लोग स्वदेशी आन्दोलन के पक्ष में थे परन्तु गरम दल के लोग विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने लगे। फलस्वरूप ब्रिटिश सरकार घबरा गई और उसने दमन नीति को अपनाया। प्रेमचन्द ने सुहाग की साड़ी में लिखा भी है—"विदेशी कपड़ों की होलियाँ जलाई जा रही थी। स्वयंसेवकों के जत्थे भिखारियों की भांति द्वारों पर खड़े होकर विलायती कपड़ों की भिक्षा मांगते थे और ऐसा किंचित ही कोई द्वार था जहाँ उन्हें निराश होना पड़ता हो। खद्दर और गाढ़े के दिन फिर गए थे।" इस प्रकार इस कहानी में विदेशी वस्त्रों को जलाने की होली मनाई जा रही थी। इसके विपरीत 'पत्नी से पति' नामक कहानी में सेठ दीनानाथ उस श्रेणी के व्यक्ति है जो विदेशी वस्तुओं का सेवन करने में गर्व अनुभव करते थे। यही नहीं, अपनी पत्नी गोदावरी को भी मजबूर करते हैं कि वह विदेशी वस्तुओं को अपनाए परन्तु गोदावरी उसका विरोध करते हुए कहती है—**"सरकार ने इनसे कब कहा कि देशी चीजें न खरीदो। सरकारी टिकटों तक पर ये शब्द लिखे होते हैं–स्वदेशी चीजें खरीदो। इससे विदित है कि सरकार देशी चीजों का निषेध नहीं करती। फिर भी ये महाशय सुर्खरू बनने की फिक्र में सरकार से भी दो ऊँगल आगे बढ़ना चाहते हैं। यह सब होने पर भी दीनानाथ ने अपनी पत्नी को यह अनुमति नहीं दी कि वह स्वदेशी वस्तुओं को अपनाए और विदेशी का बहिष्कार करें। उसकी दशा का वर्णन करते हुए लेखक कहता है—"होली का दिन था, आठ बजे रात का समय, स्वदेश के नाम पर बिके हुए अनुरागियों का जुलूस आकर मिस्टर सेठ के मकान के सामने रुका और उसी चौड़े मैदान में विलायती कपड़ों की होलियाँ जलाने**

की तैयारियाँ होने लगीं। गोदावरी अपने कमरे में खिड़की पर खड़ी यह समारोह देखती थी और दिल मसोसकर रह जाती थी। एक वह हैं, जो यों खुश-खुश, आजादी के नशे में मतवाले, गर्व से सिर उठाए होली गा रहे हैं, और एक मैं हूँ कि पिंजरे में बंद पक्षी की तरह फड़फड़ा रही हूँ।"

5. खादी आन्दोलन का आरम्भ—भारी-भरकम मशीनों के द्वारा जो विशाल स्तर पर वस्तुओं का उत्पादन हो रहा था, उससे आर्थिक शोषण, हिंसा और अनीति आदि का प्रसार होने लगा। दूसरा अंग्रेज सरकार रूई भारत से सस्ते दामों पर खरीद रही थी और अपने देश में मशीनों से कपड़े बनाकर महंगे दामों पर भारतवासियों को बेच रही थी। इससे किसानों और मजदूरों का शोषण बढ़ने लगा। अतः गांधी जी ने यह निर्णय लिया कि वे खादी तथा अन्य ग्रामोद्योगों का पुनरुद्धार करेंगे ताकि देश की गरीबी और बेकारी का निर्मूलन हो सके। प्रेमचन्द जी भी गांधी जी के इस प्रस्ताव से अत्यधिक प्रभावित हुए। फलस्वरूप देश में खादी आन्दोलन जोर पकड़ने लगा। 'आहुति' नामक कहानी की रूपमणि अपने स्वास्थ्य लाभ के लिए पढ़ाई छोड़ देती है और स्वराज्य आन्दोलन में भाग लेने लगती है। वह रेशमी साड़ियों को त्यागकर गाढ़े की साड़ियाँ पहनने लगती है। साथ ही वह चरखे पर सूत भी कातती है। 'शान्ति' नामक कहानी की श्यामा अपने पति से प्रेरणा प्राप्त करके आधुनिक वेशभूषा को त्याग देती है और उसके व्यक्तित्व तथा कृतित्व में बड़ा परिवर्तन आ जाता है। एक स्थल पर वह कहती भी है—"चरखा अब पहले से अधिक चलाती हूँ क्योंकि इसी बीच चरखे ने खूब प्रचार पा लिया है।" प्रेमचन्द की शान्ति नामक कहानी सबसे पहले भारतीय पत्रिका के फरवरी 1934 अंक में प्रकाशित हुई थी। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि 1930 से लेकर 1934 तक चरखे का खूब प्रचार होने लग गया था।

दूसरी ओर कांग्रेसी कार्यकर्ता भी घर-घर जाकर स्वदेशी और खादी का प्रचार करने लगे थे। 'शराब की दुकान' कहानी की नारी पात्र मिसेज सक्सेना शरीफ घराने में जाकर स्वदेशी और खद्दर का प्रचार करती है। 'सुहाग की साड़ी' नामक कहानी में भी इस ओर संकेत किया गया है। इस कहानी के पात्र कुंवर रत्न सिंह और उसकी पत्नी गोरा स्वदेशी बाजार में जाते हैं। वहाँ जाकर उन्हें पता चलता है कि यह स्वदेशी बाजार दिन-प्रतिदिन उन्नति करता जा रहा है। लोगों ने यहाँ अपनी दुकानें खोल ली हैं और स्वदेशी आन्दोलन के फलस्वरूप जुलाहों और कोरियों की बेरोजगारी दूर हो गई है। स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार के लिए कुँवर और गोरा का वार्तालाप देखिए—

गौरा – यह जमीन लेकर एक स्थायी बाजार बनवा दो। स्वदेशी कपड़ों की दुकानें हों और किसी से किराया न लिया जाए।

रतन – बहुत खर्च पड़ेगा।

गौरा – मकान बेच दो, रुपये ही रुपये हो जाएंगे।

रतन – सोचूंगा।

गौरा – (जरा देर में) इलाके भर में खूब कपास की खेती कराओ, जो कपास बोये, उसकी बेगार माफ कर दो।

रतन – हाँ, तदबीर अच्छी है, उपज हो जाएगी।

गौरा – (कुछ देर सोचने के बाद) लकड़ी बिना दाम हो तो कैसा हो? जो चाहे चरखे बनवाने के लिए काट ले जाए।

रतन – लूट मच जाएगी।

गौरा – ऐसी बेईमानी कोई न करेगा।

प्रेमचन्द ने स्वयं सरकारी नौकरी से इस्तीफा देकर स्वदेशी वस्त्र तथा चरखा चलाने के प्रचार में भाग लिया था। इस सन्दर्भ में उन्होंने मुंशी दयानारायण निगम को गोरखपुर से 23 फरवरी, 1921 को एक पत्र भी लिखा था। वे पत्र में लिखते हैं—"यहाँ मैंने फिलहाल एक कपड़े का कारखाना खोल रखा है, जिसमें आठ करघे चल रहे हैं। कुछ चरखे वगैरह भी बनवाए जा रहे हैं। एक मैनेजर पचीस रुपए महावार पर रख लिया है। गो उससे मुझे माहवार कुछ-न-कुछ नफा जरूर होगा, लेकिन इतना नहीं कि मैं उस पर तकिया कर सकूँ। बावजूद नन-कोऑपेरशन करने के अभी तक मैं दौलत की तरफ से बिल्कुल मुस्तगनी (विरक्त) नहीं हूँ और मैं जाति तौर पर हो भी जाऊँ लेकिन मेरी बीबी को यकीन हो जाएँ कि अब इसी तरह उसकी जिंदगी बसर होगी तो वह मुझे हरगिज न माफ करेगी।"

प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में स्वदेशी आंदोलन में भाग लेने वाले कार्यकर्त्ताओं पर अंग्रेजी सरकार द्वारा किए गए अत्याचारों का भी वर्णन किया है। उदाहरण के रूप में 'आहुति' नामक कहानी के विरवम्भर को रानीगंज में स्वदेशी का प्रचार करने के लिए गिरफ्तार कर लिया गया। 'चकमा' कहानी में विदेशी वस्त्र विक्रेता सेठ चन्दू मल की दुकान पर धरना देने वालों पर पुलिस ने लाठियाँ चलाई लेकिन फिर भी स्वयं सेवक धैर्यपूर्वक पीक्टिंग करते थे। इसी प्रकार तावान नामक कहानी में छकौड़ी लाल सेठ से स्वयं सेविका कहती भी है—"क्यों लाला, तुमने सीट तोड़ डाली ना, अच्छी बात है, देखें तुम कैसे एक गिरह कपड़ा भी बेच

चाहिए। औरतें तक घरों से निकल पड़ी हैं फिर भी तुम्हें लज्जा नहीं आती। तुम जैसे कायर इस देश में न होते तो उसकी यह दुर्गति न होती।" इसी प्रकार 'होली का उपहार' नामक कहानी में भी स्वदेशी आन्दोलन में भाग लेने वालों की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। उस समय स्वदेशी का प्रचार करने वालों को गिरफ्तार कर लिया जाता। विदेशी वस्त्रों का विरोध करने वाले स्वयंसेवकों पर डंडे बरसाए जाते थे। यह सब वर्णन प्रेमचन्द की कहानियों में देखा जा सकता है।

6. लगानबन्दी आन्दोलन—स्वाधीनता संग्राम आन्दोलन में लगान बन्दी आन्दोलन को भी विशेष महत्व दिया गया था। प्रेमचन्द ने अपनी कुछ कहानियों और उपन्यासों में कुछ संकेत दिए हैं। प्रेमाश्रम, कायाकल्प और कर्मभूमि के छोटे किसान तथा मजदूर, लगान वृद्धि, बेगारी तथा फसलें न होने पर लगान वसूली का विरोध करते हुए वर्णित किए गए हैं। इस संघर्ष में जहाँ जमींदार सरकार के साथ खड़े थे, वहीं। दूसरी ओर किसान तथा कृषक-मजदूर गाँधीवादी विचारधारा का समर्थन कर रहे थे लेकिन किसान बीच-बीच में हिंसा पर भी उतारू हो उठते थे। इसी प्रकार रंगभूमि, कायाकल्प तथा कर्मभूमि में स्वदेशी आंदोलन, असहयोग, सविनय अवज्ञा, शराबबन्दी आदि आन्दोलनों का भी चित्रण किया गया है। प्रेमचन्द ने जहाँ एक ओर सरकारी दमन का प्रभावशाली वर्णन किया है। वहाँ दूसरी ओर सेवा समितियों द्वारा सामाजिक सुधार के प्रचार-प्रसार का भी वर्णन किया है। प्रेमचन्द ने समाज के शिक्षित वर्ग की इसलिए आलोचना की है क्योंकि यह वर्ग स्वार्थ के लिए सरकार का समर्थन कर रहा था और जन साधारण का शोषण कर रहा था। लगभग सारी सरकारी संस्थाएँ—अदालतें, पुलिस, शिक्षण-संस्थाएं तथा सरकारी कार्यालय आदि सभी प्रेमचन्द की आलोचना के विषय बने हैं। लेकिन गोदान तक आते-आते प्रेमचन्द ने यह अनुभव किया कि जब तक किसानों का संगठन नहीं होगा तब तक सरकारी और जमींदारी शोषण चलता रहेगा। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों और कहानियों में देशी राजाओं, महाजनों, पूंजीपतियों, सरकारी अमलों, अंग्रेज भक्त बुद्धिजीवियों का डटकर विरोध किया है। साथ ही उन्होंने शोषित एवं दलित मजदूरों, किसानों, स्त्रियों, वेश्याओं आदि के प्रति अपनी गहरी सहानुभूति दिखाई है।

❖ ❖ ❖

10. प्रेमचन्द की प्रासंगिकता

प्रश्न 10. प्रेमचन्द का साहित्य वर्तमान युग में भी प्रासंगिक है—विवेचना कीजिए।

अथवा

वर्तमान सदर्भों में प्रेमचन्द की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

अथवा

प्रेमचन्द के कथा साहित्य तथा निबन्ध साहित्य में व्यक्त विचार, समस्याएं तथा आदर्श आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने की उनके युग में थे। इस कथन पर अपने तर्कपूर्ण विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर—प्रासंगिकता का अर्थ—प्रासंगिकता का अर्थ होता है—आधुनिक सन्दर्भ में किसी पूर्ववर्ती रचनाकार या उसकी रचना का विवेचन करना। कहने का तात्पर्य यह है कि पूर्ववर्ती रचनाकार ने अपनी रचनाओं में जिन समस्याओं तथा मूल्यों की चर्चा की है, आज के युग में उनका क्या महत्त्व है? कारण यह है कि आज मानवीय मूल्य बदलते जा रहे हैं। असंख्य साहित्य कृतियाँ पाठकों के समक्ष आ रही हैं। अतः यह सोचना जरूरी हो जाता है कि प्रेमचन्द ने जिस कथा साहित्य की रचना की अथवा जो लेख या निबन्ध लिखे, उनमें वर्णित समस्याओं और प्रश्नों का आज के युग में क्या महत्त्व है। साहित्यकार प्रायः शोषित मूल्यों की चर्चा करता है इसलिए आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रेमचन्द के साहित्य की विवेचना करना प्रासंगिकता कहलाएगा। हम इस तथ्य से भली प्रकार परिचित हैं कि आधुनिक समाज प्रेमचन्द युगीन समाज से सर्वथा भिन्न है। प्रेमचन्द युग का आरंभ और अंत पराधीनता काल में हुआ। आज स्वतंत्रता प्राप्त किए हुए हमें 72 वर्ष हो चुके हैं। देश की नदियों में अत्यधिक पानी प्रवाहित हो चुका है। युगीन वातावरण प्रेमचन्द के वातावरण से मेल नहीं खाता। फिर भी हम भली प्रकार जानते हैं कि प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में जिन समस्याओं को उठाया था, आज भी वे हमारे सामने मुँह फैलाएं खड़ी हैं। इसलिए हम एक-एक करके उन समस्याओं का विवेचन करेंगे जिन्हें प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में स्थान दिया और आधुनिक युग के सन्दर्भ में उनका मूल्यांकन करेंगे—

1. विधवा विवाह की समस्या—प्रेमचन्द युग में विधवाओं का जीवन नरक-तुल्य था। उस समय शारदा एक्ट लागू नहीं हुआ था। अतः प्रेमचन्द ने अपने अनेक उपन्यासों गबन, निर्मला तथा अलगोज्या आदि कहानियों में विधवाओं की स्थिति पर प्रकाश डाला है। उस समय परिवार में विधवा की स्थिति दासी से अधिक न थी। 'गबन' उपन्यास में विधवा रत्न के कष्टों का विस्तृत

वर्णन किया गया है। एक स्थल पर विधवा रत्न कहती भी है—**"अगर ईश्वर कहीं है और उसके यहाँ कोई न्याय होता है, तो ... दिन उसी के सामने उस पापी से पूछूंगी, क्या तेरे घर में माँ-बहनें न थीं? तुझे उनका अपमान करते लज्जा न आयी? अगर मेरी जुबान में इतनी ताकत होती कि सारे देश में उसकी आवाज पहुँचती तो मैं सब स्त्रियों से कहती-बहनों किसी सम्मिलित परिवार में विवाह मत करना।"**

चाहे आज देश में विधवाओं को अपने पति की सम्पत्ति प्राप्त करने का अधिकार मिला गया है, लेकिन आज भी वे वैसा ही नारकीय जीवन व्यतीत कर रही हैं जैसे पहले करती थीं। यदि कोई युवा औरत विधवा हो जाती है तो उसके सामने तो सबसे बड़ी चुनौती अपने सतीत्व की रक्षा करना होता है। प्रेमचन्द काल में भी युवती विधवाओं का शारीरिक शोषण अपने सगे-संबंधियों द्वारा ही किया जाता था और आज के युग में भी युवती विधवा को सबसे ज्यादा डर अपने सगे-सम्बन्धियों से ही लगा रहता है। महानगरों में भी इस प्रकार की घटनाएं कुछ सामने आती थीं लेकिन गाँवों में युवती विधवा की चीख-पुकार को सुनने वाला कोई नहीं है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि गाँव की अधिकांश युवतियाँ आज भी अनपढ़ हैं और स्वावलंबी भी नहीं हैं। यहाँ तक कि सैनिकों की विधवाओं के साथ भी अत्यधिक अत्याचार हो रहा है।

प्रेमचन्द युग में विधवा विवाह न के बराबर था। आज भी लोग विधवाओं से विवाह करने में संकोच करते हैं। यह समस्या जैसे प्रेमचन्द युग में भयावह बनी हुई थी, वैसे ही भयावह भले आज न हो परन्तु इस समस्या का समाधान आज तक नहीं हो पाया। प्रेमचन्द ने विधवा समस्या को हल करने के उपाय न केवल अपनी रचनाओं में बताएँ बल्कि स्वयं भी विधवा शिवरानी देवी से विवाह किया। 'प्रतिज्ञा' नामक उपन्यास में इस समस्या के समाधान के लिए 'वनिता-भवन, की स्थापना करते हैं। उपन्यास का प्रमुख पात्र अमृतराय यह प्रतिज्ञा करता है कि क्योंकि वह स्वयं विधुर है। अतः वह किसी विधवा से ही विवाह करेगा। इसी प्रकार 'सेवा सदन' उपन्यास में भी प्रेमचन्द ने विधवा आश्रम का उल्लेख किया है। आज भी गाँव में विधवाओं की दुर्गति देखी जा सकती है। विशेषकर वृन्दावन, हरिद्वार, बनारस आदि धार्मिक स्थलों पर विधवाओं की जो दुर्गति हो रही है, वह किसी से छिपी हुई नहीं है। भले ही कुछ राज्य सरकारों ने थोड़ी बहुत पेंशन भी लगा दी है, लेकिन इससे विधवा समस्या का पूर्ण समाधान नहीं हो सकता। हमारे समाज और सामाजिक संस्थाओं का भी कुछ दायित्व बनता है। उन्हें भी आगे बढ़कर इस समस्या के बारे में कुछ सोचना होगा और विधवाओं को उनका हक दिलवाना होगा।

2. दहेज प्रथा रूपी दानव का वर्णन—दहेज प्रथा दिन-प्रतिदिन दानवीय रूप धारण करती जा रही है। प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं में यह स्पष्ट किया है कि हमारे समाज में इस समस्या के कारण असंख्य अन्य समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। प्रेमचन्द का 'निर्मला' नामक उपन्यास दहेज प्रथा को लेकर पाठकों की आँखें खोल देता है। निर्मला का विवाह डॉक्टर भुवन मोहन सिन्हा के साथ इसलिए नहीं हो पाया, क्योंकि उसके पिता के पास दहेज देने की व्यवस्था नहीं थी। फलस्वरूप उसे चालीस वर्षीय विधुर तथा तीन पुत्रों के पिता मुंशी तोताराम से शादी करनी पड़ती है। फलस्वरूप दहेज प्रथा से अनमेल विवाह की प्रथा का विकास हो जाता है। इसी प्रकार 'प्रेमाश्रम' उपन्यास में भी प्रेमचन्द ने इस समस्या को उठाया है। इस उपन्यास का पात्र ज्ञान शंकर एक लोभी और स्वार्थी युवक है। उसका विवाह विद्यावती से हुआ। उसके विवाह को हुए चार-पांच वर्ष हो गए हैं, फिर भी वह अपनी पत्नी को बार-बार यह कहता रहता है कि वह अपने पिता के घर से धन ले आए। एक स्थल पर वह अपनी पत्नी से कहता है—**"तुम जब ऐसी बड़ी-बड़ी बातें करती हो तो मालूम होता है कि धनासेठ की बेटी हो, तुम्हारे बाप के पास तो लाखों की सम्पत्ति है। क्यों नहीं उसमें से थोड़ा-सा हमें दे देते। वह कभी बात नहीं पूछते और तुम्हारे पैरों तले गंगा बहती है।"**

इसी प्रकार निर्मला और सेवासदन प्रेमचन्द के ऐसे दो उल्लेखनीय उपन्यास हैं जिनमें दहेज प्रथा के दुष्परिणामों का उल्लेख किया गया है। सेवा सदन उपन्यास की सुमन का विवाह एक मजदूर तथा विधुर गंगाधर के साथ इसलिए कर दिया जाता है, क्योंकि उसकी माँ के पास दहेज देने की शक्ति नहीं है। अच्छे संस्कारों में पली और पढ़ी-लिखी सुमन दौलत के लालच में वेश्यावृत्ति को अपना लेती है। वस्तुतः यहाँ लेखक ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि दहेज प्रथा भी वेश्यावृत्ति का प्रमुख कारण है। आधुनिक युग में भी जो विवाह हो रहे हैं, उनमें कन्या के पिता को भारी-भरकम खर्च करना पड़ता है। यदि घर में कन्या उत्पन्न हो जाती है तो माता-पिता के मन में निराशा छा जाती है। दूसरी ओर दहेज लोभी माता-पिता इस प्रकार के परिवार की तलाश में रहते हैं जहाँ से उन्हें दहेज के रूप में मोटी रकम प्राप्त हो सके। वे यह भी नहीं सोचते कि कन्या उनके लड़के के अनुकूल है अथवा नहीं। यही कारण है कि दहेज प्रथा के कारण ही तलाक की नौबत आ जाती है और फिर कोर्ट-कचहरी के चक्कर लगने शुरू हो जाते हैं। यदि गहराई से देखा जाए तो यह स्वतः स्पष्ट हो जाएगा कि आधुनिक युग में दहेज प्रथा पूर्ववर्ती युग की अपेक्षा

धिक गंभीर और दानवीय रूप धारण कर चुकी है। अमीर अपनी बेटी का विवाह दहेज में एक मोटी रकम देकर बड़ी धूमधाम करता है। मध्यवर्गीय और निम्न मध्यवर्गीय लोग उसी का अनुकरण करने लगते हैं। लोग कर्जा लेकर भी बेटी को अच्छा दहेज ते हैं और फिर बचा हुआ जीवन कर्जा चुकाने में व्यतीत करते हैं। अतः जहाँ दहेज प्रथा का प्रश्न है, उसके बारे में कहा जा कता है कि यह प्रथा आज भी प्रासंगिक है।

'कर्मभूमि' प्रेमचन्द का एक अन्य उपन्यास है। इसमें लाला समरकान्त दहेज के लालच के कारण अपने पुत्र अमरकान्त का दाम्पत्य जीवन अशान्त बना देते हैं और आजीवन पति-पत्नी में तारतम्य नहीं बन पाता। स्वयं प्रेमचन्द ने इस प्रथा को त्यधिक गंभीर समस्या कहा है। इसलिए उन्होंने अपने उपन्यासों तथा कहानियों में इस समस्या का उन्मूलन करने के लिए ुवक-युवती का प्रेम विवाह अथवा युवकों-युवतियों के दहेज विरोधी संकल्प की भी चर्चा की है। उदाहरण के रूप में गोदान उपन्यास में होरी की बड़ी लड़की अपने पिता की आर्थिक स्थिति से पूर्णतया परिचित है। वह जानती है कि यदि उसके पिता को ी रुपए उधार लेकर उसका विवाह करेगा तो वह आजीवन कर्जा ही चुकाता रहेगा। अतः वह अपने भावी पति मथुरा को यह ंदिशा भेजती है कि वह अपने पिता को बिना दहेज के विवाह करने के लिए मना ले। पिता-पुत्र में कहासुनी हो जाने के बाद भी मथुरा बिना दहेज के विवाह करने को तैयार हो जाता है। अतः प्रेमचन्द ने दहेज प्रथा के बारे में एक छोटा समाधान प्रस्तुत किया है। आधुनिक युग में दहेज प्रथा का एक और दुष्परिणाम सामने आया है। पढ़े-लिखे लोग भी नहीं चाहते कि उनके घर में लड़की का जन्म हो। अतः वे अल्ट्रासाउंड द्वारा यह पता लगाने का प्रयास करते हैं कि वधू के गर्भ में लड़का है या लड़की। यदि लड़की की संभावना है तो तत्काल गर्भपात करवा दिया जाता है। अब इसका भी एक दुष्परिणाम समाज के सामने मुँह बाए खड़ा है। आज लड़के और लड़कियों के अनुपात में बहुत बड़ा अन्तर आ चुका है। लड़कों की संख्या अधिक है और लड़कियों की कम है इसलिए हरियाणा सरकार ने **'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'** की योजना आरंभ कर दी है। इसके साथ-साथ सरकार गरीब कन्याओं के विवाह के लिए कुछ धन राशि भी उपलब्ध करवा रही है।

3. रिश्वतखोरी एवं भ्रष्टाचार की समस्या—प्रेमचन्द भली प्रकार से समझते थे कि उनके काल में समाज किन समस्याओं से ग्रस्त है। उन्होंने प्रत्येक समस्या को बड़ी गहराई से देखा और समझा और फिर उसे अपने साहित्य में स्थान दिया। प्रेमचन्द का युग भारतीय परतन्त्रता का युग था। उस समय ब्रिटिश सरकार भारतवासियों पर तरह-तरह के अत्याचार कर रही थी। भले ही उस समय अंग्रेजी सरकार थी, लेकिन सरकारी दफ्तरों में ऊपर से लेकर नीचे तक रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार का आलम छाया हुआ था। कमीशन और दस्तूरी तो रिश्वत के पर्यायवाची बन चुके थे। उन्हें कोई भी हेय दृष्टि से नहीं देखता था। देश में रिश्वतखोरी का कुप्रचलन था। रिश्वत दिए बिना दफ्तरों में किसी का भी काम नहीं होता था। प्रेमचन्द की सुप्रसिद्ध कहानी 'नमक का दारोगा' में इसी समस्या को रेखांकित किया गया है। मुंशी वंशीधर शिक्षा प्राप्त करने के लिए जब नौकरी की तलाश में घर से बाहर निकलता है तो उसका पिता उसे उपदेश देता हुआ रिश्वत की महिमा का गान करता है। इस सन्दर्भ में मुंशी प्रेमचन्द लिखते भी हैं—**"उनके पिता एक अनुभवी पुरुष थे। समझाने लगे बेटा अब तुम्हीं घर के मालिक मुख्तार हो। नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर की मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूंढना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी बरकत होती है।"**

आधुनिक सन्दर्भ में मुंशी वंशीधर के पिता का यह कथन आज भी इतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उस समय में था। शिक्षा प्राप्ति के बाद लोग कोई ऐसी सरकारी नौकरी खोजते हैं जहाँ ऊपर की आमदनी काफी मात्रा में हो। ऐसे पदों पर नियुक्ति पाने के लिए लोग लाखों रुपए रिश्वत के रूप में देने को तैयार होते हैं। हमारे देश की वर्तमान पुलिस व्यवस्था पूर्णतया रिश्वत पर टिकी हुई है। इसी प्रकार गृह मंत्रालय, वित्त मंत्रालय, आयकर विभाग, भवन निर्माण विभाग, बिजली बोर्ड आदि सभी सरकारी कार्यालयों में बिना रिश्वत दिए लोगों का काम नहीं हो सकता। प्रत्येक कार्यालय के बाहर रिश्वत देने वालों के दलाल किसी न किसी रूप में खड़े दिखाई देंगे। छोटे अधिकारी से लेकर बड़े अधिकारी और मंत्री तक मिल-बांटकर रिश्वत लेते हैं। प्रेमचन्द ने 'सेवा-सदन' में दारोगा कृष्ण चन्द्र के माध्यम से यह स्पष्ट करना का प्रयास किया है कि रिश्वत न लेने के कारण उसकी बेटियों की शादी नहीं हो पाती। जब शादियों का बोझ कृष्णचन्द्र के सिर पर आ जाता है तब वह किसी केस में 3000 रुपए की रिश्वत लेने के लिए मजबूर हो जाता है क्योंकि उसने अकेले ही रिश्वत लेने का प्रयास किया था तो उसके सहकर्मियों ने उसकी शिकायत कर दी और चार साल तक उसे जेल की यातना सहन करनी पड़ी। इसी प्रकार गबन उपन्यास में रमानाथ चुंगी का क्लर्क लगता है और वह प्रत्येक सामान के लिए अपनी कमीशन तय कर लेता है। उसे दलाली दिए बिना कोई भी आदमी मंडी में अपना माल नहीं बेच सकता। लेकिन वह अपने साथियों को भी रिश्वत का कुछ हिस्सा देता है। गोदान उपन्यास में पटेश्वरी लाल पटवारी बेगार में अपने खेत जुतवाता है।

प्रेमचन्द ने बार-बार घूसखोरी के दुष्परिणामों पर भी समुचित प्रकाश डाला है। इसलिए उन्होंने घूसखोरों को सजा दिलाकर इस समस्या के समाधान की ओर भी संकेत किया है परन्तु प्रेमचन्द युग में रिश्वत की समस्या इतनी गंभीर नहीं थी जितनी आज होती जा रही है। आज तो हर आदमी अपने जीवन में कभी न कभी रिश्वत लेने के लिए मजबूर होते हैं। सभी राजनीतिक दल भ्रष्टाचार और रिश्वत को समाप्त करने की लंबी-लंबी घोषणाएं करते हैं परन्तु सत्ता प्राप्त करते ही उनकी पार्टी के लोग मोटी-मोटी रिश्वतें लेने लग जाते हैं। आज तो आलम यह है कि रिश्वत लेना और देना बुरा नहीं माना जाता। क्योंकि लोग यदि रिश्वत लेते हुए पकड़े जाते हैं तो रिश्वत देकर छूट भी जाते हैं। जब एक उच्च अधिकारी तीस-पैंतीस साल की सरकारी सेवा से निवृत्त होता है तो उसके पास करोड़ों की सम्पत्ति इकट्ठी हो जाती है जिसे आय से अधिक सम्पत्ति भी कहा जाता है। परन्तु रिश्वत और भ्रष्टाचार के कारण उस पर भी न्याय की तलवार नहीं चलती। कर्मभूमि उपन्यास में प्रोफेसर शान्ति कुमार, सुखदा, सलीम, अमरकान्त आदि अनेक पात्र चित्रित किए गए हैं जो रिश्वत और भ्रष्टाचार का विरोध करते हैं। जब प्रोफेसर शान्ति कुमार सुखदा को रिश्वत देने की सलाह देते हैं तो वह कहती है—**"नहीं हमें रिश्वत देना मंजूर नहीं हम न्याय के लिए खड़े हैं। हमारे पास न्याय का बल है हम उसी से विजय पाएंगे।"** इस प्रकार हम देखते हैं कि भ्रष्टाचार और घूसखोरी प्रेमचन्द के जमाने में भी थी परन्तु आज यह भयावह रूप धारण कर चुकी है।

हड़ताल और आंदोलन की प्रासंगिकता—जब प्रेमचन्द ने साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश किया तो उस समय भारतीय राजनीति के रंगमंच पर महात्मा गांधी सक्रिय हो चुके थे। उन्होंने स्वराज्य प्राप्ति के लिए हड़ताल, आन्दोलन, सत्याग्रह आदि उपायों को अपनाया। प्रेमचन्द भी लगभग स्वीकार कर चुके थे कि स्वराज्य प्राप्ति के लिए भारतवासियों के पास हड़ताल और सत्याग्रह के सिवाय तीसरा कोई रास्ता नहीं है, लेकिन प्रेमचन्द यह भी जानते थे कि इन उपायों का दुरुपयोग भी किया जा सकता है। आज हमारे देश में विभिन्न राजनीतिक दल अपनी जायज-नाजायज मांगें मंगवाने के लिए इन्हीं उपायों को अपना रहे हैं। जिससे देश के विकास में बहुत बड़ी बाधा उपस्थित हो रही है। देश की राजधानी में इस प्रकार की हड़तालें और आन्दोलन निरन्तर होते रहते हैं। ऐसी हड़तालों में सैंकड़ों लोग मर जाते हैं और करोड़ों रुपयों की राष्ट्रीय सम्पत्ति की हानि हो जाती है। प्रेमचन्द ने यदि कर्मभूमि में गरीबों की आवाज के लिए, हरिजनों के मन्दिर में प्रवेश के लिए और गरीब किसानों द्वारा लगान माफी के लिए जो आन्दोलन चलाए गए हैं, उन्हें सफल दिखाया है। इसी प्रकार गबन में देवी जी जग्गु के दो बेटों का स्वदेशी आन्दोलन में बलिदान दिखाकर उन दोनों को लोकप्रिय बनाया गया है। परन्तु गोदान में शक्कर मिल के मजदूरों की हड़ताल के सन्दर्भ में पंडित ओंकार है नाथ जैसे लोगों द्वारा स्वार्थपूर्ति करते हुए भी दिखाया। प्रेमचन्द ने अपनी एक कहानी सत्याग्रह में व्यक्ति की स्वार्थपूर्ण नीति के फलस्वरूप सत्याग्रह को दुराग्रह में परिवर्तित करते हुए दिखाया है। इस कहानी में वायसराय के बनारस आने के अवसर पर सरकारी कर्मचारी उनका स्वागत करने के लिए तैयारियों में लगे हुए थे। दूसरी ओर कांग्रेस के कार्यकर्ता नगर में हड़ताल करवाने पर अड़े हुए थो। सरकारी कर्मचारियों के डराने-धमकाने पर भी सत्याग्राही नहीं हटे। उस समय सरकार के तीन पिट्ठू राजा साहब, राय साहब तथा खाँ बहादुर ने पंडित मोटेराम शास्त्री को लालच देकर अनशन पर बिठा दिया और यह मांग रख दी कि जब तक दुकानदार अपनी दुकानें नहीं खोलेंगे तब तक वे अनशन पर बैठे रहेंगे। इसी प्रकार कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओं ने भी कूटनीति अपनाते हुए मोटेराम का अनशन तुड़वा दिया।

यहाँ विवेचनीय प्रश्न यह है कि महात्मा गांधी ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के महान उद्देश्य से भूख हड़ताल, अनशन, आन्दोलन तथा सत्याग्रह का सहारा लिया था और यह प्रत्येक दृष्टि से उचित भी था क्योंकि हम भारतवासी अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त होना चाहते थे परन्तु आज हमारे नेता छोटी-छोटी बात को लेकर हड़ताल और अनशन करने लग जाते हैं। चाहे पी. एम. सिटी हो या सी. एम. सिटी पुलिस वालों के विशेष दस्ते हड़तालों को कंट्रोल करने में ही लगे रहते हैं। जिसके फलस्वरूप जन-जीवन अस्त-व्यस्त होने लगता है।

5. शिक्षा नीति की समस्या—लार्ड मैकाले ने केवल क्लर्क उत्पन्न करने के लिए एक अंग्रेजी शिक्षा नीति का आरंभ किया था क्योंकि उन्हें अपनी सरकार चलाने के लिए भारतीय क्लर्क चाहिए थे। प्रेमचन्द ने उस शिक्षा पद्धति के अनेक अवगुणों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया था। कर्मभूमि उपन्यास में प्रेमचन्द ने स्कूलों में फीस वसूल करने के एक निराले ढंग पर व्यंग्य किया और स्कूलों को जुर्मानालय की संज्ञा दी थी—**"कचहरी में पैसे का राज है, हमारे स्कूलों में भी पैसे का राज है, उससे कहीं कठोर कहीं निर्दय। देर से आइए तो जुर्माना, न आए तो जुर्माना, सबक न याद हो तो जुर्माना, किताब न खरीद सके तो जुर्माना, कोई अपराध हो जाए तो जुर्माना, शिक्षालय क्या जुर्मानालय है। यही हमारी पश्चिमी शिक्षा का आदर्श है, जिसकी तारीफों के पुल बाँधे जाते हैं। यदि ऐसे शिक्षालयों से पैसे पर जान देने वाले, पैसे के लिए गरीबों का गला काटने वाले, पैसे के लिए अपनी आत्मा बेच देने वाले छात्र निकलते हैं तो क्या आश्चर्य है?"**

प्रेमचन्द के शिक्षा संबंधी विचार पूर्णतया मौलिक थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में ऐसे अनेक पात्रों का चित्रण किया है शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी शिक्षा के नाम पर कलंक थे। उस समय के शिक्षित लोग भी शिक्षा के मूलभूत सिद्धांतों से अव नहीं थे। शिक्षित समाज के लोग भी गली-सड़ी परम्पराओं और रूढ़ियों से चिपके हुए थे। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास प्रेमाश्रम एक शिक्षित युवक के कर्म को स्पष्ट करते हुए लिखा है—**"शिक्षा का फल यह होना चाहिए कि तुम बिरादरी के सूत्रधार बन उसको सुधारने का प्रयास करो, न यह कि उसके दबाव में अपने सिद्धान्तों का बलिदान कर दो।"** प्रेमचन्द एक ऐसा शिक्षा प्रणा चाहते थे जिससे मानव के बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास हो। वे शिक्षा को केवल रोजी-रोटी कमाने का हथियार नहीं समझते थे कर्मभूमि उपन्यास के प्रमुख पात्र प्रोफेसर शान्ति कुमार द्वारा सेवाश्रम की स्थापना की गई थी। उन्होंने भारतीय विद्यालय और महाविद्यालय का पाठ्यक्रम बनाने का भी आदर्श प्रस्तुत किया । उन्होंने कहा—"छोटे-छोटे, भोले-भाले निष्कपट बालकों का कै स्वाभाविक विकास हो, कैसे वे साहसी, सन्तोषी, सेवाशील नागरिक बन सकें, यही मुख्य उद्देश्य था। सौन्दर्य बोध जो मानव प्रकृ का प्रधान अंग है, कैसे दूषित वातावरण से अलग रहकर अपनी पूर्णता पाये, संघर्ष की जगह सहानुभूति का विकास कैसे हो, दोन मित्र यही सोचते रहते थे। उनके पास शिक्षा की कोई बनी-बनाई प्रणाली न थी। उद्देश्यों को ही सामने रखकर ही वह साधन की व्यवस्था करते हैं।"

वर्तमान शिक्षा प्रणाली उपरोक्त कथन के सर्वथा विपरीत दिखाई देती है। आज की शिक्षा प्रणाली न केवल विद्यार्थियों प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करती है, बल्कि उन्हें भौतिकवादी भी बनाती है। प्रेमाश्रम के प्रमुख पात्र कमलाप्रसाद का निम्नलिखित कथन आज भी शिक्षा पद्धति पर सर्वथा सटीक दिखाई देता है—**"यह तुम्हारा दोष नहीं, तुम्हारी धर्मविहीन शिक्षा का दोष है। तुम्हें आदि से ही भौतिक शिक्षा मिली। हृदय के भाव दब गए। तुम्हारे गुरूजन स्वयं स्वार्थ के पुतले थे। उन्होंने कभी सरल, सन्तोषमय जीवन का आदर्श तुम्हारे सामने नहीं रखा। तुम जो कुछ हो, अपनी शिक्षा-प्रणाली के बनाए हुए हो।"**

प्रेमचन्द द्वारा व्यक्त किए गए शिक्षा संबंधी विचार वर्तमान शिक्षा पद्धति से ही जुड़े हुए हैं बल्कि आज उनके विचारों का अधिक महत्व दिखाई देता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति यूरोपीय शिक्षा पद्धति की नकल मात्र है। जो अध्यापक स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ाते हैं उन्हें रुपए कमाने की मशीन समझा जाता है। आज के अध्यापकों को अपने विद्यार्थियों से कोई सहानुभूति नहीं है और न ही उनके भविष्य की चिन्ता है। विद्यालय और महाविद्यालय में तो वे केवल दिखावे के लिए पढ़ाते हैं। घर पर उन्होंने ट्यूशन का व्यवसाय खोला हुआ है। नर्सरी के बच्चे को भी ट्यूशन दी जाती है। अब तो स्थान-स्थान पर कोचिंग सेंटर खुल गए है। प्रत्येक विद्यार्थी कोचिंग सेंटर से शिक्षा प्राप्त करके डॉक्टर अथवा इंजीनियर बनना चाहता है। परिणाम यह हुआ कि आज देश में अक्षरशः इंजीनियर कॉलेज, बी. एड. कॉलेज, जे. बी. टी. कॉलेज तथा पोलटैक्निक खुल चुके हैं। इन संस्थानों में थोड़े वेतन पर अयोग्य शिक्षकों को भर्ती कर लिया जाता है। कुछ संस्थानों में तो बच्चों से साल भर की फीस पहले ही ले लेते हैं। इन संस्थानों में न तो अनुशासन है और न ही नियमित कक्षाएँ लगती हैं। विद्यार्थी साल के अन्त में संस्थान की सहायता से नकल मारकर पास हो जाते हैं। देश में इस प्रकार के संस्थानों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। हमारी राज्य सरकारें आँखें बन्द करके बैठी हुई हैं क्योंकि शिक्षा मंत्रालय के अधिकारियों को इन संस्थाओं से रिश्वत के रूप में मोटी रकम मिल जाती है। हाल ही में शिक्षाविदों ने यह घोषणा कर दी है कि हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था निम्न स्तर तक पहुंच चुकी है। अतः प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों, कहानियों तथा निबन्धों में अनेक स्थलों पर शिक्षण व्यवस्था की ओर उचित ध्यान देने की सलाह दी थी।

इन समस्याओं के अतिरिक्त प्रेमचन्द ने अपने युग की असंख्य विसंगतियों और विषमताओं की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। उस समय के समाज में आडम्बर, धार्मिक पाखंड, अंधविश्वास, नैतिक मूल्यों में गिरावट, भ्रष्टाचार, अनमेल विवाह, छुआछूत, नारी शोषण आदि व्याप्त थे। इसके साथ-साथ पूंजीवादी व्यवस्था के कारण समाज में अन्याय और अत्याचार बढ़ रहा था। संयुक्त परिवार टूटकर बिखर रहे थे और राजनीतिक षड्यंत्र सक्रिय थे। प्रेमचन्द ने इन सभी समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। वर्तमान समाज में भी ये समस्याएँ जस की तस बनी हुई हैं। धार्मिक जगत में तो इतनी गंदगी व्याप्त हो चुकी है कि साधारण व्यक्ति उसे देखकर शर्म से सिर झुका लेता है। न्यायालय पूंजीपतियों का ही समर्थन करते हुए दिखाई देते हैं। भ्रष्ट लोग करोड़ों रुपए खर्च करके चुनाव जीत लेते हैं और फिर पाँच साल तक लगातार सरकार और जनता का शोषण करते हैं। यदि हम प्रेमचन्द साहित्य का समुचित अध्ययन करें तो उससे हमारी असंख्य समस्याओं का समाधान हो सकता है। साहित्य समाज का दर्पण होता है और हमें इस दर्पण में अपनी व्यवस्था को भी देखना चाहिए। तभी हम वर्तमान समस्याओं का हल निकाल सकेंगे। अतः यह कहना अनुचित न होगा कि प्रेमचन्द का साहित्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना प्रेमचन्द युग में था।

❖❖❖

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. बड़े भाई साहब

1. बड़े भाई साहब के आरम्भ में लेखक किस कक्षा में पढ़ता था?

उत्तर– पाँचवीं कक्षा में।

2. जब लेखक पाँचवीं कक्षा में पढ़ रहा था तब बड़े भाई साहब किस कक्षा में पढ़ते थे?

उत्तर– नौवीं कक्षा में।

3. लेखक के बाहर से लौटकर आते ही भाई साहब पहला प्रश्न क्या पूछते थे?

उत्तर– कहाँ थे?

4. बड़े भाई साहब किस कला में निपुण थे?

उत्तर– उपदेश कला में।

5. वार्षिक परीक्षा में लेखक का परिणाम कैसा रहा?

उत्तर– कक्षा में अव्वल।

6. सालाना परीक्षा में बड़े भाई साहब का परिणाम कैसा था?

उत्तर– वे अनुत्तीर्ण हो गए थे।

7. अन्ततः लेखक और बड़े भाई साहब के बीच कितने दर्जे का अन्तर रह गया था?

उत्तर– एक दर्जे का।

8. 'बड़े भाई साहब' कहानी किस वर्ष प्रकाशित हुई?

उत्तर– सन् 1934 में।

9. 'बड़े भाई साहब' कहानी किस शैली में लिखी गई है?

उत्तर– आत्मकथात्मक शैली में।

10. लेखक द्वारा अपनी उम्र कितनी बताई गई है?

उत्तर– 9 साल।

11. लेखक ने बड़े भाई साहब की उम्र कितनी बताई है?

उत्तर– 14 साल।

12. लेखक और बड़े भाई साहब की उम्र में कितना अन्तर था?

उत्तर– 5 साल का।

13. 'बड़े भाई साहब' कहानी के दोनों भाई कहाँ रहते थे?

उत्तर– छात्रावास में।

14. बड़े भाई साहब कहानी का लेखक शाम को एक दिन किसलिए भागा जा रहा था?

उत्तर– कनकौआ लूटने के लिए।

15. कनकौआ लूटते समय लेखक की मुलाकात किससे हुई?

उत्तर– अपने बड़े भाई से।

16. बड़े भाई साहब ने लेखक के सामने अपनी कौन सी इच्छा रखी?

उत्तर– कनकौआ उड़ाने की।

17. लेखक ने अपने बड़े भाई से छिपकर किस प्रतियोगिता की तैयारी की?

उत्तर– पतंग प्रतियोगिता की।

18. जब बड़े भाई साहब ने लेखक को कनकौआ लूटते देखा तब उसने उसे क्या कहा?

उत्तर– तुम्हें अपनी पॉजीशन का ध्यान रखना चाहिए।

19. बड़े भाई साहब के लगातार दूसरी बार फेल होने से उनमें किस गुण का विकास हुआ?

उत्तर– सहिष्णुता का।

20. 'बड़े भाई साहब' कहानी के लेखक का नाम क्या है?

उत्तर– मुंशी प्रेमचन्द।

❖ ❖ ❖

2. नशा

1. 'नशा' कहानी के लेखक का नाम क्या है?

उत्तर– मुंशी प्रेमचन्द।

2. 'नशा' कहानी के दो प्रमुख पात्र कौन-कौन से हैं?

उत्तर– ईश्वरी और बीर।

3. 'नशा' कहानी में प्रयाग स्टेशन पर रिफ्रेशमेंट रूम में लेखक के आग्रहों की बार-बार किसने उपेक्षा की?

उत्तर– खानसामों ने।

4. 'नशा' कहानी में लेखक और ईश्वरी जिस गाड़ी पर यात्रा कर रहे थे, उसका नाम क्या था?

उत्तर– डाक गाड़ी।

5. 'नशा' कहानी में अपने परिचितों के सामने ईश्वरी ने लेखक को किसका भक्त बताया?

उत्तर– गाँधी जी का।

6. 'नशा' कहानी में ईश्वरी द्वारा लेखक की गाँधी भक्ति की प्रशंसा सुनकर रियासत अली ने किसकी उदारता से लेखक की तुलना की?

उत्तर– महाराज चांगली से।

7. 'नशा' कहानी में ईश्वरी के घर में रात को लैम्प किसने जलाया?

उत्तर– रियासत अली ने।

8. 'नशा' कहानी में ठाकुर ने लेखक से आश्वासन पाने के बाद क्या किया?

उत्तर– उसने खूब भांग पी, पत्नी को पीटा और महाजन से लड़ने को तैयार हो गया।

9. 'नशा' कहानी में इलाहाबाद लौटते समय गट्ठर लादे युवक को पीटने पर लेखक से ईश्वरी ने अंग्रेजी में क्या कहा।

उत्तर– What an idot you are Bir.

10. 'नशा' कहानी में लेखक के पिता किस पद पर काम करते थे?

उत्तर– क्लर्क के पद पर।

11. ईश्वरी कैसा लड़का था?

उत्तर– मेहनती और जुझीम।

12. गाँव जाते समय ईश्वरी ने खानसामों को कितने पैसे टिप में दिए?

उत्तर– अठन्नी।

13. जमींदार का बेटा होते हुए भी ईश्वरी का गरीब लेखक के प्रति कैसा व्यवहार था?

उत्तर– सौहार्द और नम्रतापूर्ण।

14. ईश्वरी कहाँ का रहने वाला था?

उत्तर– मुरादाबाद के पास किसी गाँव का।

15. स्टेशन पर ईश्वरी और लेखक का स्वागत करने के लिए कितने बेगार आए थे?

उत्तर– पाँच।

16. 'नशा' कहानी में स्टेशन पर स्वागत के लिए आने वाले मुसलमान का क्या नाम था?

उत्तर– रियासत अली।

17. स्टेशन पर स्वागत के लिए आने वाले दो भद्र पुरुषों में से रामहरक किस जाति का था?

उत्तर– ब्राह्मण।

18. 'नशा' कहानी में किस अवसर पर लेखक ने घर न जाने का निर्णय किया?

उत्तर– दशहरे के अवसर पर।

19. 'नशा' कहानी के ईश्वरी ने अपने परिचितों के सामने लेखक का किन कपड़ों से लगाव बताया?

उत्तर– खद्दर के कपड़ों से।

20. 'नशा' कहानी में महाराज चांगली ने कॉलेज खोलने के लिए कितने रुपए दान में दिए?

उत्तर– दस लाख।

21. 'नशा' कहानी में ईश्वरी के परिवार के लोग लेखक को किस नाम से पुकारते थे?

उत्तर– कुँवर साहब।

22. 'नशा' कहानी में ईश्वरी के गाँव में गाँधी जी का परम भक्त कौन था?

उत्तर– ठाकुर।

23. 'नशा' कहानी में लेखक ने ठाकुर को अपने यहाँ कौन सा काम देने का वादा किया?

उत्तर– ड्राइवर का काम।

24. 'नशा' कहानी में गाँव से वापिस लौटते समय लेखक और ईश्वरी किस दर्जे की गाड़ी में बैठे?

उत्तर– तीसरे दर्जे।

25. 'नशा' कहानी में जब लेखक और ईश्वरी गाड़ी के तीसरे दर्जे में बैठकर लौट रहे थे तो उस समय पीठ पर गट्ठर लादे हुए यात्री को कहाँ जाना था?

उत्तर– कलकत्ता।

26. 'नशा' कहानी किस शैली में लिखी हुई है?

उत्तर– आत्मकथात्मक शैली में।

27. 'नशा' कहानी में बड़े जमींदार के लड़के का नाम क्या है?

उत्तर– ईश्वरी।

28. 'नशा' कहानी में लेखक ने जमींदारों की तुलना किससे की है?

उत्तर– हिंसक पशु, खून चूसने वाली जोंक और वृक्षों की चोटी पर फूलने वाला बंझा।

29. 'नशा' कहानी में लेखक ने किसकी बुराई की?

उत्तर– जमींदारों की।

30. 'नशा' कहानी में लेखक और ईश्वरी ने दशहरे की छुट्टियाँ कहाँ बिताने का निश्चय किया?
उत्तर– ईश्वरी के गाँव में।
31. 'नशा' कहानी में ईश्वरी और लेखक ने गाँव जाते समय रेल के किस दर्जे में यात्रा की?
उत्तर– सेकंड क्लास में।
32. प्रयाग स्टेशन पर लेखक और ईश्वरी ने कहाँ भोजन किया?
उत्तर– रिफ्रेशमेंट रूम में।
33. 'नशा' कहानी में लेखक और ईश्वरी ट्रेन से यात्रा कर रहे थे वह कहाँ जाकर रुकी?
उत्तर– प्रतापगढ़।
34. लेखक और ईश्वरी द्वारा जो ट्रेन पकड़ी थी उसका प्रयाग से चलते समय क्या समय था?
उत्तर– रात नौ बजे।
35. 'नशा' कहानी में लेखक और ईश्वरी मुरादाबाद कब पहुँचे।
उत्तर– अगले दिन भोर होने पर।
36. 'नशा' कहानी में ईश्वरी ने अर्जेंट तार की कितनी फीस बताई?
उत्तर– चार आने प्रति शब्द।
37. 'नशा' कहानी में अपने परिचितों के सामने ईश्वरी ने लेखक के परिवार की वार्षिक आय कितनी बताई?
उत्तर– ढाई लाख रुपए।
38. ''अगर इतने नाजुक मिजाज हो तो अव्वल दर्जे में क्यों नही बैठते।'' यह पंक्ति किस कहानी की है?
उत्तर– 'नशा' कहानी की।

❖ ❖ ❖

3. ईदगाह

1. 'ईदगाह' कहानी के कहानीकार का नाम क्या है?
उत्तर– मुंशी प्रेमचन्द।
2. अनाथ हामिद को उसकी बूढ़ी दादी उसके पिता के बारे में क्या आश्वासन देती थी?
उत्तर– वे कहती थी कि वे रुपए कमाने गए हैं।
3. 'ईदगाह' कहानी में अनाथ हामिद को बूढ़ी दादी उसकी अम्मी जान के बारे में क्या आश्वासन देती थी?
उत्तर– वह अल्लाह मियाँ के घर से अच्छी-अच्छी चीजें लाने गई है।
4. 'ईदगाह' कहानी में किस बच्चे के मामु कांस्टेबल थे?
उत्तर– मौसिन के।
5. ईद के मेले में हिंडौले पर झूलने के लिए कितने पैसे देने पड़ते थे?
उत्तर– एक पैसा।
6. 'ईदगाह' कहानी में कौन सा बच्चा झूले पर नहीं झूला?
उत्तर– हामिद।
7. 'ईदगाह' कहानी में महमूद ने कौन सा खिलौना खरीदा?
उत्तर– सिपाही।
8. 'ईदगाह' कहानी में हामिद ने क्या खरीदा?
उत्तर– लोहे का चिमटा।
9. 'ईदगाह' कहानी में मौसिन ने क्या खरीदा?
उत्तर– बिश्नी।
10. महमूद के पास कितने पैसे थे?
उत्तर– बारह पैसे।
11. मौसिम के पास कितने पैसे थे?
उत्तर– 15 पैसे।
12. हामिद की बूढ़ी दादी का क्या नाम था?
उत्तर– अमीना।
13. अमीना के बटुए में कितने पैसे थे?
उत्तर– पाँच आने।
14. अमीना ने हामिद को मेले के लिए कितने पैसे दिए?
उत्तर– तीन पैसे।
15. 'ईदगाह' कहानी में नूरे ने कौन सा खिलौना खरीदा?
उत्तर– वकील।
16. 'ईदगाह' कहानी में सम्मी ने कौन सा खिलौना खरीदा?
उत्तर– धोबिन।
17. 'ईदगाह' कहानी में मौसिम ने कौन सी मिठाई खरीदी?
उत्तर– रेवड़ी।
18. 'ईदगाह' कहानी किस शैली में लिखी गई है?
उत्तर– वर्णनात्मक शैली।
19. 'ईदगाह' कहानी में हामिद किस दुकान पर रुका?
उत्तर– लोहार की दुकान पर।
20. 'ईदगाह' कहानी में हामिद ने लुहार से कितने पैसों में चिमटा खरीदा?
उत्तर– तीन पैसों में।
21. हामिद ने अपने चिमटे को क्या कहा?
उत्तर– रुस्त में हिन्द।
22. 'ईदगाह' कहानी में बच्चे शहर से कितने बजे गाँव वापिस लौटे?
उत्तर– ग्यारह बजे।

6. सवा सेर गेहूँ

1. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी किस वर्ष प्रकाशित हुई?
उत्तर– सन् 1924 में।
2. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी का नायक कौन है?
उत्तर– शंकर।
3. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी में विप्र महाराज वर्ष भर में कितनी बार खलिहानी लेते थे?
उत्तर– दो बार।
4. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी में शंकर ने सवा सेर गेहूँ के बदले उधार उतारने के लिए विप्र महाजन को कितना गेहूँ दिया?
उत्तर– डेढ़ पंसेरी।
5. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी में शंकर ने विप्र महाराज को सवा सेर गेहूँ किस महीने चुकाया था?
उत्तर– चैत के महीने में।
6. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी में विप्र महाराज कितने वर्षों में महाजन बन गए?
उत्तर– सात वर्ष में।
7. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी में शंकर ने विप्र जी के उधार दिए गए गेहूँ को वापिस लौटाते समय क्या व्यवहार अपनाया?
उत्तर– उसने बिना कुछ कहे-सुने उनको डेढ़ पंसेरी गेहूँ तौलकर दे दिया।
8. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी में शंकर के छोटे भाई का नाम क्या था?
उत्तर– मंगल।
9. भाई से अलग होकर शंकर किसान से क्या बना?
उत्तर– मजदूर।
10. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी में भाई से अलग होने के बाद शंकर कितने दिनों तक भूखा रहा?
उत्तर– सात दिनों तक।
11. सात साल के बाद सवा सेर गेहूँ के बदले विप्र महाजन ने शंकर से कितना गेहूँ माँगा?
उत्तर– साढ़े पाँच मन।
12. विप्र महाजन ने उधार के रूप में गेहूँ चुकाने के लिए शंकर को कितने दिनों की मोहलत दी?
उत्तर– एक दिन की भी नहीं।
13. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी में शंकर ने किस मूल्य पर गेहूँ देना स्वीकार कर लिया?
उत्तर– एक रुपए का पाँच सेर।
14. जब विप्र महाजन ने यह देखा कि शंकर गेहूँ चुकाने में असमर्थ है तो उसने क्या किया?
उत्तर– उसने शंकर से दस्तावेज लिखवाना लिया।
15. विप्र महाजन ने दस्तावेज लिखते समय गेहूँ का मूल्य कितने रुपए लिखवाया?
उत्तर– 60 रुपए।
16. विप्र महाजन ने दस्तावेज लिखते समय सूद की दर क्या रखी?
उत्तर– तीन रुपए सैकड़ा।
17. विप्र महाजन ने साल भर सूद न देने की दशा में सूद की कितनी और वृद्धि की?
उत्तर– दो रुपए प्रति सैकड़ा।
18. स्टाम्प के नाम पर विप्र महाजन ने शंकर के नाम पर कितने रुपए लिखे?
उत्तर– दो रुपए।
19. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी में दस्तावेज लिखते समय विप्र महाजन ने तहरीर के नाम पर कितने रुपए लिखे?
उत्तर– एक रुपया।
20. विप्र का कर्जा चुकाने के लिए शंकर ने अपने किस व्यसन को त्याग दिया?
उत्तर– तम्बाकू खाने का व्यसन।
21. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी में वर्ष भर कठिन परिश्रम करने के बाद शंकर ने कितने रुपए जमा किए?
उत्तर– साठ रुपए।
22. जब शंकर ने विप्र महाजन के पास साठ रुपए जमा करवाए तब उस विप्र ने कितने रुपए और अधिक माँगे?
उत्तर– 15 रुपए।
23. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी में विप्र के 15 रुपए चुकाने के लिए क्या उसे गाँव के किसी व्यक्ति से ऋण मिला?
उत्तर– नहीं।
24. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी में अपनी शेष धन राशि वसूल माँगने के लिए विप्र ने शंकर को अपने पास कितने वर्ष बाद बुलाया?
उत्तर– तीन वर्ष बाद।
25. तीन वर्ष बाद विप्र महाजन ने 15 रुपए शेष बचे ऋण को सूद लगाकर कितना बताया?
उत्तर– 120 रुपए।
26. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी में 120 रुपए वसूल करने के लिए महाजन ने शंकर के साथ क्या किया?
उत्तर– उसने शंकर को अपने यहाँ मजदूर बनाकर रख लिया।

27. विप्र महाजन ने शंकर को अपने यहाँ मजदूरी करने पर भोजन के रूप में क्या देने का वादा किया?

उत्तर– आधा सेर जौ।

28. विप्र महाजन ने शंकर को अपने यहाँ मजदूरी करते समय ओढ़ने के लिए प्रतिवर्ष क्या देने का वादा किया?

उत्तर– एक कम्बल और एक मिर्जई।

29. विप्र महाजन का ऋण चुकाने के लिए शंकर ने उसके यहाँ कितने वर्षों तक की गुलामी की?

उत्तर– 20 वर्षों तक।

30. प्रस्तुत कहानी में शंकर की मौत के बाद विप्र महाजन ने अपने ऋण का सूद वसूल करने के लिए किसे मजदूर बनाया?

उत्तर– शंकर के पुत्र को।

31. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी में प्रेमचन्द ने अपने किस दृष्टिकोण को व्यक्त किया है?

उत्तर– यथार्थवादी दृष्टिकोण।

32. 'सवा सेर गेहूँ' में शंकर मूलतः किस व्यवसाय से सम्बन्धित था?

उत्तर– कृषि से।

33. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी में शंकर के घर में कौन सा आटा खाने के लिए प्रयुक्त होता था?

उत्तर– जौ का आटा।

34. शंकर के घर में अतिथि के रूप में कौन आया था?

उत्तर– एक साधु महाराज।

35. साधु महाराज को गेहूँ की रोटियाँ खिलाने के लिए शंकर ने किससे सवा सेर गेहूँ उधार के रूप में लिया था?

उत्तर– विप्र महाजन से।

36. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी में किस समस्या का वर्णन किया गया है?

उत्तर– महाजनी व्यवस्था के शोषण की समस्या का।

37. शंकर किस जाति से सम्बन्धित था?

उत्तर– कुरमी जाति से।

❖❖❖

7. बड़े घर की बेटी

1. 'बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं' यह वाक्य बड़े घर की बेटी का आरम्भिक वाक्य है या अन्तिम।

उत्तर– अन्तिम।

2. 'बड़े घर की बेटी' कहानी का किस वर्ष प्रकाशन हुआ?

उत्तर– सन् 1910 ई. में।

3. 'बड़े घर की बेटी' किस प्रकार की कहानी कही जा सकती है?

उत्तर– सामाजिक।

4. 'बड़े घर की बेटी' कहानी में बेनी माधव सिंह के बड़े पुत्र का नाम क्या था?

उत्तर– श्रीकण्ठ।

5. बेनी माधव सिंह किस गाँव में रहता था?

उत्तर– गौरीपुर।

6. श्रीकण्ठ के छोटे भाई का नाम क्या था?

उत्तर– लाल बिहारी।

7. 'बड़े घर की बेटी' कहानी में किसको बड़े घर की बेटी कहा गया है?

उत्तर– आनन्दी को

8. 'बड़े घर की बेटी' कहानी में आनन्दी के पिता का नाम क्या था?

उत्तर– भूप सिंह।

9. 'बड़े घर की बेटी' कहानी में आनन्दी का किसके साथ विवाह हुआ था?

उत्तर– श्रीकण्ठ के साथ।

10. 'बड़े घर की बेटी' कहानी में आनन्दी की कितनी बहनें थीं?

उत्तर– सात।

11. 'बड़े घर की बेटी' कहानी में आनन्दी से बड़ी कितनी बहनें थीं?

उत्तर– तीन।

12. 'बड़े घर की बेटी' में श्रीकण्ठ ने कहाँ तक शिक्षा प्राप्त की थी?

उत्तर– बी.ए. तक।

13. 'बड़े घर की बेटियाँ' ऐसी ही होती हैं' यह कथन किस पात्र का है?

उत्तर– बेनी माधव सिंह का।

14. 'बड़े घर की बेटी' कहानी में कौन सा पात्र अपनी बीमारी के उपचार के लिए वैद्यों से पत्राचार करता है?

उत्तर– श्रीकण्ठ।

15. बेनी माधव सिंह की वर्तमान आय कितने रुपए वार्षिक से अधिक न थी?

उत्तर– 1000 रुपए।

16. 'बड़े घर की बेटी' में लाल बिहारी ने अपनी भाभी से कितनी चिड़ियों का मांस पकाने के लिए कहाँ?

उत्तर– दो चिड़ियों का।

17. आनन्दी ने लाल बिहारी को भोजन परोसते समय किसमें घी नहीं डाला था?

उत्तर– दाल में।

18. 'बड़े घर की बेटी' कहानी में दाल में घी न देखकर लाल बिहारी भाभी की तरफ क्या फेंककर मारा?

उत्तर– खड़ाऊँ।

19. दाल में घी न देखकर लाल बिहारी ने आनन्दी को किस बात का उलाहना दिया?

उत्तर– उसके मायके का।

20. मायके में तो जैसे घी की नदी बहती हो 'बड़े घर की बेटी' में यह कथन किसका है?

उत्तर– लाल बिहारी का।

21. हाथी मरा भी तो नौ लाख का, वहाँ इतना घी नित्य नाई-कहार खा जाते हैं। यह कथन किसका है?

उत्तर– आनन्दी का।

22. 'बड़े घर की बेटी' कहानी में श्रीकण्ठ किस दिन शहर से अपने घर वापिस आता था?

उत्तर– शनिवार को।

23. जिस दिन लाल बिहारी ने भाभी पर खड़ाऊँ फेंककर मारी भी, उस दिन कौन सा वार था?

उत्तर– बृहस्पतिवार।

24. देवर लाल बिहारी के हाथों खड़ाऊँ से मार खाने के बाद आनन्दी कितने दिनों तक बिना कुछ खाए-पीए कोप भवन में बन्द रही?

उत्तर– दो दिन तक।

25. श्रीकण्ठ ने बी.ए. की शिक्षा कहाँ से प्राप्त की थी?

उत्तर– इलाहाबाद से।

26. पत्नी आनन्दी के आँसू देखकर और खड़ाऊँ फेंकने की घटना को सुनकर श्रीकण्ठ ने पिता के सामने क्या निर्णय सुनाया?

उत्तर– घर से अलग होने का।

27. लाल बिहार को बड़े भाई श्रीकण्ठ की कौन सी बात सुनकर गहरा धक्का लगा?

उत्तर– लाल बिहारी का मुँह न देखने की बात का।

28. 'बड़े घर की बेटी' कहानी में घर छोड़कर जाने वाले लाल बिहारी को किसने पकड़कर रोका?

उत्तर– आनन्दी ने।

29. 'जिस के गमान पर फूली हुई हो, उसे भी दाँव लूँगा और तुम्हें भी।' बड़े घर के बेटी कहानी में यह कथन किस का है?

उत्तर– लाल बिहारी का।

30. 'बड़े घर की बेटी' कहानी में कौन अनपढ़ और गंवार था?

उत्तर– लाल बिहारी।

❖ ❖ ❖

8. शतरंज के खिलाड़ी

1. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी का प्रकाशन किस वर्ष हुआ?

उत्तर– सन् 1924 ई. में।

2. 'शतरंज के खिलाड़ी' किस प्रकार की पृष्ठभूमि पर लिखी गई है?

उत्तर– ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर।

3. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में किस नगर के शासक तथा उसके कर्मचारियों की विलासिता का वर्णन हुआ है?

उत्तर– लखनऊ के वाजिद अली शाह तथा उसके कर्मचारियों का।

4. 'शतरंज के खिलाड़ी' में मिर्जा सज्जाद अली और रोशन अली की शतरंज के बारे में क्या दलील थी?

उत्तर– शतरंज खेलने से बुद्धि तीव्र होती है।

5. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में किस पात्र के घर में रोक-टोक करने वाला कोई बड़ा नहीं था?

उत्तर– मिर्जा सज्जाद अली के घर में।

6. प्रस्तुत कहानी में किस पात्र की पत्नी सवेरे देर से उठती और दिन भर पति के आदेशों की अवहेलना करती थी?

उत्तर– मिर्जा सज्जाद अली की।

7. आरम्भ में किसके घर में बैठकर मिर्जा सज्जाद अली और मीर रोशन अली शतरंज खेलते थे?

उत्तर– मिर्जा सज्जाद अली के घर में।

8. कहानी में मिर्जा सज्जाद अली की बेगम ने मीर रोशन अली का क्या नाम रखा हुआ था?

उत्तर– मीर बिगाडु।

9. प्रस्तुत कहानी में किसने कमरे में जाकर शतरंज की मोहरों को उठाकर इधर-उधर बिखेर दिया था?

उत्तर– मिस्टर सज्जाद अली की बेगम ने।

10. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में किसकी पत्नी अपने पति की उपेक्षा करती थी और उससे दूर रहती थी?

उत्तर– मीर रोशन अली की बेगम।

11. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में किसके घर में बादशाही फौज के अफसर ने बादशाही फरमान सुनाया था?

उत्तर– मीर रोशन अली के।

12. बादशाही फौज के अफसर ने क्या फरमान सुनाया था?

उत्तर– मीर रोशन अली से कुछ सिपाही माँगे गए थे।

13. शाही आदेश से बचने के लिए मिर्जा रोशन अली और मिर्जा सज्जाद अली ने कहाँ छिपकर शतरंज खेलने का फैसला लिया?

उत्तर– गोमती नदी के किनारे पुरानी मस्जिद में।

14. नवाब वाजिद अली शाह को गिरफ्तार करने के लिए लखनऊ नगर में कम्पनी के कितने सैनिक आए थे?

उत्तर– पाँच हजार सैनिक।

15. मीर रोशन अली के पूर्वजों का क्या व्यवसाय था?

उत्तर– घास छीलना।

16. मीर रोशन अली के पूर्वज कौन सा व्यवसाय करते थे?

उत्तर– बावर्ची का।

17. 'शतरंज के खिलाड़ी कहानी में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग हुआ है।?

उत्तर– उर्दू मिश्रित सामान्य खड़ी बोली का।

18. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में किस की पत्नी के सिर में दर्द हुआ था?

उत्तर– मिर्जा सज्जाद अली की बेगम के ।

❖ ❖ ❖

9. रामलीला

1. 'रामलीला' कहानी का प्रकाशन किस वर्ष हुआ?

उत्तर– सन् 1926 ई. में।

2. 'रामलीला' कहानी के लेखक का नाम क्या है?

उत्तर– मुंशी प्रेमचन्द।

3. 'रामलीला' कहानी का लेखक अपने बचपन से जुड़ी यादों को किस प्रसंग से जोड़कर प्रस्तुत करता है?

उत्तर– रामलीला के प्रसंग सें।

4. गुल्ली-डण्डा खेलने के लालच में कहानी के लेखक ने किस दिन राम के साथ बैठने का मौका खो दिया?

उत्तर– निषाद नौका लीला के दिन।

5. 'रामलीला' कहानी के लेखक के पिता किस विभाग में नौकरी करते थे?

उत्तर– पुलिस विभाग में।

6. 'रामलीला' कहानी में राम की भूमिका निभाने वाला युवक जब अपने साथियों के साथ चलने लगा तो लेखक ने उसे अपनी ओर से कितने पैसे भेंट किए?

उत्तर– दो आने।

7. 'रामलीला' कहानी में राजगद्दी के दिन थाली में पैसे डाले बिना किसने आरती ली थी?

उत्तर– लेखक के पिता ने।

8. राजगद्दी के दिन लेखक ने कितने पैसे थाली में डालकर आरती ग्रहण की?

उत्तर– 1 रुपया।

9. लेखक को यह एक रुपया किसने दिया था?

उत्तर– उसके मामा ने।

10. 'रामलीला' कहानी में चौधरी ने और रुपए वसूल करने के लिए किससे आग्रह किया?

उत्तर– आबादी जान से।

11. 'रामलीला' कहानी में वेश्या आबादी जान ने महफिल में वसूल होने वाले रुपयों का कितना हिस्सा मांगा?

उत्तर– आधा।

12. वेश्या आबादी जान की भाव-भंगिमा देखकर लेखक के पिता ने उसे क्या दिया?

उत्तर– एक अशर्फी।

13. वेश्या आबादी जान ने रामलीला में नाच के लिए कितने रुपए चौधरी से लिए?

उत्तर– सौ रुपए।

14. रामलीला समाप्त होने के बाद राम, लक्ष्मण, सीता आदि पात्रों को विदाई के समय क्या दिया?

उत्तर– एक रुपया भी नहीं दिया।

15. 'रामलीला' कहानी का उद्देश्य क्या है?

उत्तर– हिन्दू समाज में व्याप्त आडम्बरों का चित्रण।

16. 'रामलीला' कहानी में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग हुआ है?

उत्तर– सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली का।

❖ ❖ ❖

10. आत्माराम

1. आत्माराम कहानी का किस वर्ष प्रकाशन हुआ?

उत्तर– सन् 1920 ई. में।

2. 'आत्माराम' कहानी के लेखक का नाम क्या है?

उत्तर– मुंशी प्रेमचन्द।

3. 'आत्माराम' कहानी के मुख्य पात्र का नाम क्या है?

उत्तर– महादेव।

4. 'महादेव 'किस जाति से सम्बन्धित था'?

उत्तर– सुनार जाति से।

5. 'आत्माराम' कहानी में महादेव को सर्वाधिक लगाव किससे था?

उत्तर– अपने तोते से।

6. 'आत्माराम' कहानी में तोता सवेरे-सवेरे क्या उच्चारण करता था?

उत्तर– सत् गुरूदत्त शिवदत्त दाता।

7. 'आत्माराम' कहानी में महादेव ने अपने तोते का क्या नाम रखा हुआ था?

उत्तर– आत्माराम।

8. 'आत्माराम' कहानी में महादेव अपने बेटों से प्रेम क्यों नहीं करता था?

उत्तर– क्योंकि वे निठ्ठले और निकम्मे थे।

9. तोते का पिंजरा किसने खोला था?

उत्तर– किसी एक लड़के ने।

10. महादेव को अपने पड़ोसियों से क्या चिढ़ थी?

उत्तर– पड़ोसी उसकी अंगीठी से आग निकालकर लेकर जाते थे?

11. 'आत्माराम' कहानी में रात के अंधेरे में महादेव की दृष्टि किस पर पड़ी?

उत्तर– चोरों पर।

12. 'आत्माराम' कहानी में महादेव ने पुरोहित के पचास रुपए के नुकसान के बदले कितना धन उसे दिया?

उत्तर– 2 अशरफियाँ।

13. 'आत्माराम' कहानी में महादेव के हाथ चोरों द्वारा छोड़ी गई कौन सी सम्पत्ति लगी?

उत्तर– अशरफियों से भरा हुआ कलश।

14. 'आत्माराम' कहानी में जब सवेरे महादेव घर पहुँचा तो उसे एक ही प्राणी मिला वह कौन सा प्राणी था?

उत्तर– कुत्ता।

15. घर पहुँचते ही महादेव ने अशरफी भरा कलश कहाँ पर छिपाया?

उत्तर– नाँद में।

16. 'आत्माराम' कहानी में अचानक धन मिलने के बाद महादेव ने पहला काम क्या किया?

उत्तर– अपने घर में सत्यनारायण की कथा करवाई।

17. 'आत्माराम' कहानी में महादेव ने उपस्थित लोगों को कितने दिनों में अपना कर्जा ले जाने की घोषणा की?

उत्तर– एक महीने के अन्दर।

18. 'आत्माराम' कहानी में सत्यनारायण कहानी के समय उपस्थित लोगों मे से धन लेने के लिए किसने झूठ बोला?

उत्तर– पुरोहित ने।

19. पुरोहित ने महादेव से कितने रुपए का नुकसान मांगा?

उत्तर– पचास रुपए का।

20. जब महादेव प्रातःकाल [illegible] में तोता आत्माराम क्या बोलता था?

उत्तर– सतगुरूदत्त दाता, राम के चरन में चित्तलागा।

21. 'आत्माराम' कहानी में प्रेमचन्द ने किस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया है?

उत्तर– सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली का।

❖ ❖ ❖

11. ठाकुर का कुआँ

1. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी किस वर्ष प्रकाशित हुई?

उत्तर– सन् 1932 ई. में।

2. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी के लेखक का नाम क्या है?

उत्तर– मुंशी प्रेमचन्द।

3. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में किस वर्ग की दीन दशा का वर्णन किया है?

उत्तर– दलित वर्ग की।

4. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में किस सामाजिक समस्या की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर– अस्पृश्यता की समस्या।

5. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में गंगी के पति का नाम क्या है?

उत्तर– जोखू।

6. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में गंगी को दूसरे कुएँ से पानी लेने की आवश्यकता क्यों पड़ गई?

उत्तर– दलितों के कुएँ में एक जानवर गिरकर मर गया था जिससे उसका पानी दूषित हो गया था।

7. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में किसके घर में बारह महीने जुआ खेला जाता था?

उत्तर– पण्डित जी के घर में।

8. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में मैंगू को क्यों बुरी तरह पीटा गया था?

उत्तर– उसने बेगार देने से मना किया था।

9. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में रात के नौ बजे किसके कुएं से दो औरतें पानी भरने आई थी?

उत्तर– ठाकुर क घर के कुएँ से।

10. गंगी के घर में कौन कई दिनों से बीमार पड़ा था?

उत्तर– उसका पति जोखू।

11. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में किसने गड़रिए की भेड़ चुराई और बाद में मारकर खा ली?

उत्तर– ठाकुर ने।

12. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में कौन घी में तेल मिलाकर बेचता था?

उत्तर– साहू जी।

13. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में किसके अचानक आ जाने पर गंगी बिना पानी लिए अपने घर भाग आई?

उत्तर– ठाकुर के आने पर।

14. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में किस दलित दम्पत्ति की दुर्दशा का वर्णन किया गया है?

उत्तर– जोखू और गंगी की।

15. जोखू की पत्नी का नाम क्या है?

उत्तर– गंगी।

16. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी के गाँव में कुल कितने कुएँ है?

उत्तर– तीन।

17. गंगी रात को कुएँ से कितने बजे पानी लेने गई?

उत्तर– नौ बजे।

18. 'ठाकुर का कुआँ' प्रकार की कहानी है?

उत्तर– यथार्थवादी कहानी।

19. बीमार जोखू ने जब लोटे को मुँह लगाया तो उस में कैसी गंध आ रही थी?

उत्तर– बदबू।

20. 'ठाकुर का कुआँ' कहानी में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग हुआ है?

उत्तर– खड़ी बोली का।

❖❖❖

12. दो बैलों की कथा

1. 'दो बैलों की कथा' का प्रकाशन किस वर्ष हुआ?

उत्तर– सन् 1931 ई. में।

2. 'दो बैलों की कथा' के लेखक का नाम क्या है?

उत्तर– मुंशी प्रेमचन्द।

3. 'दो बैलों की कथा' कहानी में लेखक ने किस जानवर को सर्वाधिक सहिष्णु बताया है?

उत्तर– गधे को।

4. झूरी काछी के दो बैलों का नाम क्या था?

उत्तर– हीरा और मोती।

5. 'दो बैलों की कथा' कहानी में झूरी काछी के साले का नाम क्या था?

उत्तर– गया।

6. गया झूरी काछी के घर में किस काम से आया था?

उत्तर– हीरा मोती बैलों को ले जाने के लिए।

7. गया ने दो बैलों को अपने घर पर कैसा चारा दिया?

उत्तर– रूखा-सूखा।

8. 'दो बैलों की कथा' नामक कहानी में प्रेमचन्द ने किसे गधे का छोटा भाई कहा है?

उत्तर– बैल को।

9. 'दो बैलों की कथा' में हीरा मोती किस प्रकार गया के घर से निकलकर भागे थे?

उत्तर– पगही तुड़वाकर।

10. 'दो बैलों की कथा' नामक कहानी में अपने घर वापस आए हीरा मोती के सामने किसने सूखा चारा डालने का हठ किया?

उत्तर– झूरी काछी की पत्नी ने।

11. दोनों बैलों में से कौन सा बैल अधिक सहनशील था?

उत्तर– मोती।

12. दोनो बैलों में से कौन सा बैल उग्र और हिंसक था?

उत्तर– हीरा।

13. गया के घर से दूसरी बार भागने के बाद दोनों बैलों ने सबसे पहले क्या किया?

उत्तर– मटर के खेत में पेट भरकर मटर खाए।

14. 'दो बैलों की कथा' में किसानों ने दोनों बैलों को पकड़कर कहाँ बन्द कर दिया?

उत्तर– कॉजी हौंस में।

15. 'दो बैलों की कथा' कहानी में कौन सा जानवर कॉजी हौस से मौका मिलने पर भी नहीं भागा?

उत्तर– गधा।

16. किसने गधों को मार-मारकर कॉजीहौंस से बाहर भगा दिया?

उत्तर– मोती ने।

17. 'दो बैलों की कथा' कहानी के अन्त में दोनों बैल किसके चंगुल से मुक्त हो गए?

उत्तर– कसाई के चंगुल से।

18. 'दो बैलों की कथा' कहानी में हीरा और मोती गया के घर से निकलकर कहाँ पहुँचे थे?

उत्तर– झूरी काछी के घर।

19. 'दो बैलों की कथा' कहानी में गया के घर से भागकर जब दोनों बैल पहली बार घर वापस आए तो उन्हें देखकर कौन प्रसन्न नहीं हुआ?

उत्तर– झूरी की पत्नी।

20. 'दो बैलों की कथा' कहानी में किस बैल ने गाड़ी को गड्ढे में गिराना चाहा?

उत्तर– मोती ने।

21. 'दो बैलों की कथा' कहानी में बैलों को किसने प्रेम से रोटियाँ खिलाई?

उत्तर– भैरों की बेटी ने।

22. बैलों पर अत्याचार होते देख किसने उन्हें खोलकर घर से भगा दिया?

उत्तर– भैरों की लड़की ने।

23. गया के घर से दूसरी बार निकलने के बाद हीरा और मोती की मुठभेड़ किससे हुई?

उत्तर– सांड से।

24. दोनों बैल कॉजीहैंस में कैद से किस प्रकार मुक्त हुए?

उत्तर– दीवार तोड़कर।

25. कॉजीहौस में हीरा को किसने मोटी रस्सियों से बाँधा था?

उत्तर– कॉजीहौस के चौकीदार ने।

26. कॉजीहौस में बैलों को कितने दिनों तक भूखा रखा गया?

उत्तर– सात दिनों तक।

27. कॉजीहौस में बन्द दोनों बैंलों को नीलामी में किसने खरीदा?

उत्तर– एक कसाई ने।

28. 'दो बैलों की कथा' कहानी के अन्त में किसने दोनो बैलों का माथा चूमा?

उत्तर– झूरी की पत्नी ने।

❖ ❖ ❖

13. सद्‌गति

1. 'सद्‌गति' कहानी का प्रकाशन किस वर्ष में हुआ?

उत्तर– सन् 1931 ई. में।

2. 'सद्‌गति' कहानी में पंडित जी को भोजन परोसने के लिए दुखी चर्मकार ने अपनी पत्नी को क्या उपाय बताया?

उत्तर– मोगरे के पत्ते तोड़कर पत्तल बनाया जाए।

3. 'सद्‌गति' कहानी में दुखी ने पंडित जी को सीधा देने के साथ कितने नकद पैसे देने का सुझाव अपनी पत्नी को दिया?

उत्तर– चार आने।

4. 'सद्‌गति' कहानी में दुखी ... ?

उत्तर– झुरिया।

5. 'सद्‌गति' कहानी में झुरिया ने पंडित जी को बैठाने के लिए किस वस्तु को गाँव से लाने के लिए अपने पति से कहा?

उत्तर– खटिया।

6. 'सद्‌गति' कहानी में दुखी ने पंडित जी को सीधा देने के लिए किसके माध्यम से आवश्यक सामग्री खरीदने का सुझाव दिया?

उत्तर– झूरी गौंड की लड़की के माध्यम से।

7. 'सद्‌गति' कहानी में सीधा में कितना आटा देने के लिए दुखी ने अपनी पत्नी से कहा?

उत्तर– सेर भर आटा।

8. 'सद्‌गति' कहानी में दुखी ने अपनी पत्नी को कितने चावल देने के लिए कहा?

उत्तर– आधा सेर।

9. 'सद्‌गति' कहानी में दुखी ने पंडित जी को सीधा में कितनी दाल देने के लिए कहा?

उत्तर– पाव भर।

10. 'सद्‌गति' कहानी में दुखी ने अपने किस काम के लिए पंडित जी को घर बुलाना चाहा?

उत्तर– अपनी बेटी की सगाई का शुभ मुहुर्त निकालने के लिए।

11. 'सद्‌गति' कहानी में दुखी किस पंडित को बुलाने के लिए गया था?

उत्तर– पंडित घासीराम को।

12. 'सद्‌गति' कहानी में पंडित घासीराम को उपहार में भेंट देने के लिए क्या लाया था?

उत्तर– हरी घास का गट्ठा।

13. पंडित घासीराम प्रातः कितने बजे तक अपनी दिनचर्या से निवृत्त होते थे?

उत्तर– प्रातः 10 बजे तक।

14. 'सद्‌गति' कहानी में पंडित घासीराम ने साथ चलने से पूर्व दुखी को कितने काम करने के लिए कहा?

उत्तर– चार काम।

15. पंडित घासीराम ने दुखी को सबसे पहले कौन सा काम करने को कहा?

उत्तर– झाडू से द्वार साफ करना।

16. घासीराम ने दुखी को दूसरा कौन सा काम सौंपा?

उत्तर– बैठक के आंगन को गोबर से लीपना।

17. घासीराम ने दुखी को तीसरा कौन सा काम करने को कहा?

उत्तर– लकड़ी चीरना।

18. घासीराम ने दुखी को चौथा कौन सा काम करने को कहा?

उत्तर– खलिहान से चार खांची भूसा उठाकर भूसोली में रखना।

19. 'सद्गति' में दुखी और उसकी पत्नी झुरिया किस जाति से सम्बन्धित थे?

उत्तर– चमार जाति से।

20. दुखी का घर पंडित घासीराम के घर से कितना दूर था?

उत्तर– लगभग 1 मील।

21. दुखी ने ब्राह्मणों के मोहल्ले में किससे तम्बाकू और चिलम माँगी?

उत्तर– गौंड के घर से।

22. तम्बाकू की चिलम पीने के लिए दुखी ने किससे आग माँगी?

उत्तर– पंडित घासीराम की पत्नी से।

23. 'सद्गति' कहानी में लकड़ी चीरने के कठिन काम में किसने दुखी की सहायता करने की असफल कोशिश की?

उत्तर– चिखुरी ने।

24. पंडित घासीराम के खलिहान और घर में कितनी दूरी थी?

उत्तर– लगभग फर्लांग।

25. दुखी ने पंडित घासीराम का कौन सा काम अधूरा छोड़ दिया?

उत्तर– लकड़ी चीरने का।

26. दुखी चमार की किस कारण से मृत्यु हुई?

उत्तर– भूखा-प्यासा रहने तथा कठोर लकड़ी को चीरने के कारण।

27. दुखी चमार की लाश को कौन घसीट कर गाँव से बाहर ले गया?

उत्तर– पंडित घासीराम।

28. पंडित घासीराम किस समय दुखी की लाश गाँव से बाहर ले गया?

उत्तर– सायं काल को।

29. 'सद्गति' कहानी में प्रेमचन्द में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया है?

उत्तर– सहज और सरल खड़ी बोली का।

❖❖❖

14. पंच परमेश्वर

1. 'पंच परमेश्वर' कहानी का किस वर्ष प्रकाशन हुआ?

उत्तर– सन् 1916 ई. में।

2. 'पंच परमेश्वर' कहानी के दोनों मित्रों के नाम क्या है?

उत्तर– अलगू चौधरी और जुम्मन शेख।

3. अलगू चौधरी ने किससे शिक्षा प्राप्त की थी?

उत्तर– जुम्मन के पिता से।

4. जुम्मन शेख ने किसकी मलकियत अपने नाम करवाई थी?

उत्तर– अपनी खाला की।

5. 'पंच परमेश्वर' कहानी में किसने पहली बार पचांयत बुलवाई थी?

उत्तर– जुम्मन की खाला ने।

6. 'क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे' पंच परमेश्वर में यह कथन किसने किसको कहा है?

उत्तर– जुम्मन शेख की खाला ने अलगू चौधरी को कहा है।

7. पहली पंचायत के लिए जलपान का प्रबन्ध किसने किया था?

उत्तर– जुम्मन शेख ने।

8. 'पंच परमेश्वर' कहानी में पंचायत में उपस्थित किस व्यक्ति के आसामियों को जुम्मन ने अपने गाँव में बसाया था?

उत्तर– रामधन मिश्र के।

9. जुम्मन शेख ने किसको अपना सरंपच चुना था?

उत्तर– अलगू चौधरी को।

10. सरपंच के रूप में अलगू चौधरी ने क्या फैसला सुनाया?

उत्तर– जुम्मन शेख अपनी खाला को माहवार खर्चा दे अन्यथा हिब्बा नामा रद्द माना जाए।

11. 'पंच परमेश्वर' कहानी में अलगू चौधरी ने किससे बैल खरीदे थे?

उत्तर– चौधरी बटेसर से।

12. एक बैल मर जाने के बाद अलगू चौधरी का अकेला बैल किसने खरीदा था?

उत्तर– समझू साहू ने।

13. अलगू चौधरी के बैल का दाम चुकाने के लिए समझू साहू ने कितना समय मांगा था?

उत्तर– एक महीना।

14. समझू साहू बैल से दिन में कितनी खेप लादकर ले जाने लगा?

उत्तर– तीन-चार खेप।

15. समझू साहू ने अलगू चौधरी के बैल का कितना मूल्य चुकाने का वादा किया था?

उत्तर– डेढ़ सौ रुपए।

16. 'पंच परमेश्वर' कहानी में बुलाई गई दूसरी पंचायत में समझू साहू ने किसे सरपंच चुना?

उत्तर– जुम्मन शेख को।

17. जुम्मन शेख ने सरपंच के रूप में क्या फैसला सुनाया?

उत्तर– समझू साहू बैल की पूरी कीमत चुकाए।

18. 'पंच परमेश्वर' कहानी में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग हुआ है?

उत्तर– उर्दू मिश्रित खड़ी बोली का।

19. अलगू और समझू साहू के झगड़े के लिए पंचायत कहाँ बैठी?

उत्तर– वृक्ष के नीचे।

❖❖❖

15. परीक्षा

1. 'परीक्षा' कहानी का प्रकाशन किस वर्ष हुआ?

उत्तर– सन् 1923 ई. में।

2. किस पत्रिका में परीक्षा कहानी प्रकाशित हुई थी?

उत्तर– चाँद पत्रिका में।

3. 'परीक्षा' कहानी किस प्रकार की कहानी है?

उत्तर– आदर्शोन्मुख यथार्थवादी।

4. परीक्षा कहानी में किस रियासत के सुजान सिंह दीवान थे?

उत्तर– देवगढ़ रियासत के।

5. 'परीक्षा' कहानी में नए दीवान की आवश्यकता क्यों हुई?

उत्तर– क्योंकि दीवान सुजान सिंह बूढ़े हो चुके थे।

6. 'परीक्षा' कहानी के दीवान पद का विज्ञापन किसमें दिया गया?

उत्तर– एक समाचार पत्र में।

7. दीवान पद के उम्मीदवार घर में कितने बजे सोकर उठा करते थे?

उत्तर– नौ बजे।

8. दीवान पद के उम्मीदवारों ने किस दुर्व्यसन का त्याग करके अच्छा आचरण सिद्ध करने का प्रयास किया?

उत्तर– हुक्का पीना त्यागकर।

9. दीवान पद के उम्मीदवारों को किस वस्तु से घृणा थी?

उत्तर– पुस्तक पढ़ने से।

10. दीवान पद के उम्मीदवारों ने कौन सा खेल खेलने का निर्णय लिया?

उत्तर– हॉकी।

11. उम्मीदवारों की परीक्षा लेने के लिए दीवान सुजान सिंह ने किसका वेष धारण किया?

उत्तर– किसान का।

12. किसान के रूप में सुजान सिंह किस मुसीबत में फँसा हुआ था?

उत्तर– कीचड़ में धंसी अनाज की गाड़ी की मुसीबत में।

13. सुजान सिंह ने देवगढ़ रियासत की सेवा कितने वर्षों तक की थी?

उत्तर– चालीस वर्षों तक।

14. किस युवा उम्मीदवार ने वृद्ध किसान की अनाज से भरी गाड़ी को कीचड़ से बाहर निकालने में सहायता की?

उत्तर– पंडित जानकीनाथ।

15. युवा उम्मीदवार एक टाँग से लंगड़ाकर क्यों चल रहा था?

उत्तर– खेल के मैदान में उसे टाँग पर चोट लग गई थी।

16. चुने गए उम्मीदवार पंडित जानकीनाथ के नाम की घोषणा किसने की?

उत्तर– देवगढ़ रियासत के दीवान सुजान सिंह ने।

17. 'परीक्षा' कहानी में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग हुआ है?

उत्तर– साहित्यिक खड़ी बोली का।

18. हॉकी खेलते समय किसे चोट लगी थी?

उत्तर– पण्डित जानकीनाथ को।

❖❖❖

16. कफन

1. प्रेमचन्द द्वारा लिखित 'कफन' कहानी किस प्रकार की कहानी है?

उत्तर– यथार्थवादी कहानी।

2. 'कफन' कहानी में घीसू और माधव किस जाति से सम्बन्धित थे?

उत्तर– चमार जाति से।

3. 'कफन' कहानी में घीसू के पुत्र का नाम क्या था?

उत्तर– माधव।

4. माधव की पत्नी का नाम क्या था?

उत्तर– बुधिया।

5. माधव और बुधिया का विवाह हुए कितने वर्ष बीत चुके थे?

उत्तर– 1 वर्ष।

6. 'कफन' कहानी में घीसू किस प्रकार काम करता था?

उत्तर– एक दिन काम करके दो दिन आराम करना।

7. 'कफन' कहानी में माधव के काम करने का तरीका क्या था?

उत्तर– आधा घंटे काम करके 1 घंटा चिलम पीना।

8. गाँव के किसान घीसू और माधव को मजदूरी के लिए क्यों नहीं बुलाते थे?

उत्तर– क्योंकि दोनों आलसी और कामचोर थे।

9. 'कफन' कहानी में लकड़ी तोड़कर कौन लाता था?

उत्तर– घीसू।

10. घीसू द्वारा तोड़ी गई लकड़ियाँ बेचने कौन जाता था?

उत्तर– माधव।

11. 'कफन' कहानी में घीसू की आयु कितनी बताई गई है?

उत्तर– 60 वर्ष।

12. 'कफन' कहानी में घीसू के कुल कितने लड़के उत्पन्न हुई?

उत्तर– नौ।

13. बुधिया किस प्रकार घीसू और माधव के भोजन का प्रबन्ध करती थी?

उत्तर– लोगों के घरों में काम करके।

14. घीसू को जीवन में पहली बार अच्छा खाने का अवसर कितने वर्ष पहले मिला था?

उत्तर– 40 वर्ष पहले।

15. घीसू को पहली बार अच्छा भोजन खाने का मौका कहाँ प्राप्त हुआ?

उत्तर– ठाकुर की बारात में जाने पर।

16. ठाकुर की बारात में जाने पर घीसू ने लगभग कितनी पुरियाँ खाईं?

उत्तर– पचास।

17. बुधिया की मृत्यु कैसे हुई?

उत्तर– प्रसव पीड़ा के कारण।

18. माधव प्रसव पीड़ा से तड़पती हुई अपनी पत्नी के पास क्यों नहीं गया?

उत्तर– क्योंकि उसे डर था कि सारे भुने हुए आलू उसका पिता घीसू खा जाएगा।

19. घीसू और माधव किसानों के खेत से क्या चुराकर लाते थे?

उत्तर– आलू और मटर।

20. 'कफन' कहानी में बुधिया की मौत के बाद लकड़ी तथा 'कफन' के लिए पैसा मांगने घीसू और माधव सर्वप्रथम किसके पास गए?

उत्तर– जमींदार के पास।

21. जमींदार ने बुधिया के क्रिया-कर्म के लिए घीसू-माधव को कितने रुपए दिए?

उत्तर– दो रुपए।

22. बुधिया के दाह संस्कार के लिए गाँव के लोगों से कितने रुपए मांगकर इकट्ठे कर लिए थे?

उत्तर– पाँच रुपए।

23. घीसू और माधव ने पाँच रुपए कितनी देर में एकत्र कर लिए?

उत्तर– एक घंटे में।

24. बुधिया के लिए नगर से कफन लेने गए घीसू और माधव ने 'कफन' न लेकर क्या-क्या खाया?

उत्तर– मछली, पूरियाँ, चिखोना, अचार, कलेजी, शराब आदि।

25. खाने-पीने पर घीसू-माधव का कितना खर्चा आया?

उत्तर– डेढ़ रुपया।

26. खाना-पीना करने के बाद दोनों ने कौन सा गीत गया?

उत्तर– ठगिनी क्यों नैना झमकावे।

27. घीसू और मधु शाला क्यों गिर पड़े?

उत्तर– नशे में बदमस्त होने से।

28. 'कफन' किस प्रकार की कहानी है?

उत्तर– यथार्थवादी कहानी।

29. 'कफन' कहानी में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग हुआ है?

उत्तर– सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली का।

❖ ❖ ❖

निबन्ध

1. पुराना जमाना: नया जमाना

1. 'पुराना जमाना: नया जमाना' के निबन्ध के लेखक का नाम क्या है?

उत्तर– मुंशी प्रेमचन्द।

2. प्रेमचन्द ने यह निबन्ध किस नाम से उर्दू भाषा में लिखा था?

उत्तर– दौरे जदीद: दौरे कदीम।

3. 'दौरे जदीद: दौरे कदीम' का हिन्दी अनुवाद किसने किया?

उत्तर– प्रेमचन्द के पुत्र अमृतराय ने।

4. 'दौरे जदीदः दौरे कदीम' मूलतः कब प्रकाशित हुआ था?

उत्तर– फरवरी 1919 में।

5. यह निबन्ध उर्दू में लिखित किस पत्रिका में प्रकाशित हुआ?

उत्तर– 'जमाना' पत्रिका में।

6. पुराने जमाने में सभ्यता का अर्थ क्या माना जाता था?

उत्तर– आत्मा और आचार की सभ्यता।

7. प्रेमचन्द के अनुसार वर्तमान सभ्यता का अर्थ क्या है?

उत्तर– स्वार्थ और आडम्बर।

8. पुरानी सभ्यता का क्या लक्ष्य नहीं होता था?

उत्तर– भोग विलास के सामान एकत्रित करना।

9. पुराने लोग किसे घृणा की दृष्टि से देखते थे?

उत्तर– सजावट और बनावट को।

10. पुरानी सभ्यता किस प्रकार की थी?

उत्तर– सर्वजन सुलभ और प्रजातांत्रिक।

11. आधुनिक सभ्यता ने किसमें दीवार खड़ी कर दी है?

उत्तर– विशेष और साधारण में, छोटे और बड़े में तथा धनवान और निर्धन में।

12. आधुनिक सभ्यता की आत्मा क्या है?

उत्तर– भौतिकता और स्वार्थपरता।

13. आधुनिक सभ्यता का प्रधान गुण क्या है?

उत्तर– जनतांत्रिक व्यवस्था।

14. आधुनिक सभ्यता का सबसे अच्छा पहलू क्या है?

उत्तर– राष्ट्रीयता की भावना का विकास होना।

15. किसने संसार में एक रक्तारक्त जीवन संघर्ष छोड़ दिया है?

उत्तर– आधुनिक राष्ट्र ने।

16. प्राचीन युग को किस प्रकार का युग कहा जा सकता है?

उत्तर– अन्धकार युग।

17. प्राचीन युग में सैनिक सेवा किसकी इच्छा पर निर्भर थी?

उत्तर– व्यक्ति की इच्छा पर।

18. निबन्ध में लन्दन और कलकत्ते में कितनी वेश्याएँ होने की बात की गई है?

उत्तर– लन्दन में 40 हजार से अधिक तथा कलक्तो में सोलह हजार से अधिक।

19. मानवीय सद्गुणों का मनमाना विभाजन किसने कर दिया है?

उत्तर– नए जमाने ने।

20. पुराने जमाने में किसका कोई भेद नहीं होता था?

उत्तर– नैतिक सिद्धान्तों में विशेष और साधारण का तथा विजेता और विजित का।

21. पुराने जमाने में लोग किन गुणों का आदर करते थे?

उत्तर– नम्रता, सहिष्णुता, लज्जा, दया, सदाचार और मुख्वत का।

22. नए जमाने में नम्रता किसकी सूचक मानी गई है?

उत्तर– निर्बलता की।

23. नए जमाने का रोशन पहलू क्या है?

उत्तर– बेजुबानों की ताकत का जाहिर होना।

24. राष्ट्र संघ की किसने प्रस्तावित योजना बनाई?

उत्तर– प्रेसीडेंट विल्सन ने।

25. प्रेमचन्द के अनुसार देश में 90 फीसदी आबादी किसकी है?

उत्तर– किसानों की।

26. प्रेमचन्द के अनुसार आने वाला जमाना किसका है?

उत्तर– किसानों और मजदूरों का।

❖ ❖ ❖

2. महाजनी सभ्यता

1. 'महाजनी सभ्यता' निबन्ध के लेखक का नाम क्या है?

उत्तर– मुंशी प्रेमचन्द।

2. किस सभ्यता में बलवान भुजाएँ और मजबूत कलेजा जीवन की आवश्यकताओं में गिना गया था?

उत्तर– जमींदारी सभ्यता में।

3. किस सभ्यता में सारे कामों की गरज केवल पैसा होती है?

उत्तर– महाजनी सभ्यता में।

4. 'महाजनी सभ्यता' निबन्ध के अनुसार किसने मानवीय भावों को अपने अधीन कर लिया है?

उत्तर– धन के लोभ ने।

5. जिसके पास पैसा होता है उसे क्या समझा जाता है?

उत्तर– देवता।

6. किसकी देहली पर साहित्य, संगीत और कला माथा टेकते हैं?

उत्तर– धन की देहली पर।

7. महाजनी सभ्यता का मुख्य नियम क्या है?

उत्तर– समय ही धन है।

8. महाजनी सभ्यता से पहले समय को क्या मानते थे?

उत्तर– जीवन।

9. महाजनी सभ्यता में समय का सर्वोत्तम उपयोग किसे कहा गया है?

उत्तर- धन कमाने को।

10. महाजनी सभ्यता से पहले समय का उचित उपयोग क्या था?

उत्तर- विद्या तथा कला का अर्जन करना अथवा दीन-दुखियों की सहायता करना।

11. महाजनी सभ्यता में डॉक्टर का एक-एक मिनट क्या है?

उत्तर- अशर्फी।

12. महाजनी सभ्यता में डॉक्टर की निगाह किस पर रहती है?

उत्तर- मरीज की फीस पर।

13. महाजनी सभ्यता निबन्ध के अनुसार धन के लोभ ने किसका नाम समाप्त कर दिया है?

उत्तर- मनुष्यता और मित्रता का।

14. किस सभ्यता में कुछ कमा लेना ही जीवन की सार्थकता है?

उत्तर- महाजनी सभ्यता में।

15. **Business is Business** किस सभ्यता का दूसरा सिद्धान्त है?

उत्तर- महाजनी सभ्यता का।

16. महाजनी सभ्यता में भावुकता की क्या कीमत है?

उत्तर- कुछ नहीं।

17. प्रेमचन्द ने महाजनी सभ्यता निबन्ध में किस सिद्धान्त को सबसे अधिक रक्त पिपासु सिद्धान्त कहा है?

उत्तर- व्यवसाय वाले सिद्धान्त को।

18. किस सभ्यता में लड़की एक खास उम्र के बाद घर की लौंडी और भाइयों की मजदूरनी बन जाती है?

उत्तर- महाजनी सभ्यता में।

19. महाजनी सभ्यता की आत्मा किसे कहा गया है?

उत्तर- व्यक्तिवाद को।

20. पश्चिम में उदय हो रही नई सभ्यता के सूर्य ने किसकी जड़ें खोदकर फेंक दी है?

उत्तर- महाजनी सभ्यता की।

21. ईसाई धर्म का पौधा कहाँ पर उगा?

उत्तर- यहूदिस्तान में।

❖ ❖ ❖

3. साम्प्रदायिकता और संस्कृति

1. 'साम्प्रदायिकता और संस्कृति' निबन्ध के लेखक का नाम क्या है?

उत्तर- मुंशी प्रेमचन्द।

2. 'साम्प्रदायिकता और संस्कृति' निबन्ध किस वर्ष प्रकाशित हुआ?

उत्तर- सन् 1934 ई. में।

3. साम्प्रदायिकता हमेशा किसकी दुहाई देती है?

उत्तर- संस्कृति की।

4. साम्प्रदायिकता किसकी खाल ओढ़कर पनपती है?

उत्तर- संस्कृति की।

5. प्रेमचन्द के कथनानुसार वर्तमान संसार में कौन सी संस्कृति स्वीकार की गई है?

उत्तर- आर्थिक संस्कृति।

6. संस्कृति का किससे कोई सम्बन्ध नहीं है?

उत्तर- धर्म से।

7. प्रेमचन्द के अनुसार संसार में ऐसी कौन सी जाति है जो गोमांस को अखाद्य और अपवित्र मानती है?

उत्तर- हिन्दू जाति।

8. प्रेमचन्द के अनुसार संस्कृति की पुकार वास्तव में क्या है?

उत्तर- केवल ढोंग और पाखण्ड।

9. सीधे-सादे लोगों को साम्प्रदायिकता की ओर घसीट कर लाने वाला मन्त्र किसे कहा गया है?

उत्तर- संस्कृति को।

10. किसे आजकल संस्कृतियों की रक्षा करने का न तो अवकाश है और न ही आवश्यकता?

उत्तर- जनता को।

11. संस्कृति किसका व्यसन है?

उत्तर- अमीरों, पेटभरों तथा बेफिक्रों का।

12. प्रेमचन्द के अनुसार जब जनता मूर्छित थी तब उस पर किसका मोह छाया हुआ था?

उत्तर- धर्म और संस्कृति का।

13. प्रेमचन्द के अनुसार गरीबों की सबसे बड़ी समस्या क्या है?

उत्तर- प्राण रक्षा।

14. प्रेमचन्द ने प्रस्तुत निबन्ध में किन दो समुदायों की संस्कृति की चर्चा की है?

उत्तर- हिन्दुओं और मुसलमानों की।

15. प्रेमचन्द के अनुसार साम्प्रदायिक संस्थाएँ किन की हैं?

उत्तर– मध्य वर्ग के व्यापारियों, जमींदारों तथा तालुकेदारों की।

16. साम्प्रदायिकता जनता की आर्थिक समस्याओं को हल करने की बजाय क्या करती है?

उत्तर– जनता को चिरस्थायी रूप से परतन्त्र बनाती है।

17. साम्प्रदायिकता हमेशा किस की दुहाई दिया करती है?

उत्तर– संस्कृति की।

❖ ❖ ❖

4. साहित्य का उद्देश्य

1. 'साहित्य का उद्देश्य' के लेखक का नाम क्या है?

उत्तर– मुंशी प्रेमचन्द।

2. 'साहित्य का उद्देश्य' लेखक का भाषण है या निबन्ध?

उत्तर– भाषण।

3. यह भाषण लेखक ने कब और कहाँ दिया था?

उत्तर– 'प्रगतिशील लेखक संघ' के लखनऊ अधिवेशन में 1936 ई. में दिया था।

4. इस अधिवेशन के सभापति कौन बने थे?

उत्तर– मुंशी प्रेमचन्द।

5. प्रेमचन्द के अनुसार साहित्य का उद्देश्य क्या है?

उत्तर– पाठकों में सौन्दर्य-प्रेम जगाना और उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत कराना।

6. प्रेमचन्द के अनुसार साहित्य की सर्वोत्तम परिभाषा क्या है?

उत्तर– साहित्य जीवन की आलोचना है।

7. प्रेमचन्द से पूर्व युग के साहित्यकार क्या–क्या करते थे?

उत्तर– वे कल्पना की सृष्टि करके मनमाने तिलिस्म बांधा करते थे।

8. लेखक के अनुसार किसका उद्देश्य हमारी अनुभूतियों को जगाना और उन्हें तीव्रता प्रदान करना है?

उत्तर– काव्य और साहित्य को।

9. नीति शास्त्र किस प्रकार हमारे मन और बुद्धि को प्रभावित करने का प्रयास करता है?

उत्तर– तर्कों तथा उपदेश द्वारा।

10. भले ही नीतिशास्त्र और साहित्य का लक्ष्य एक ही है, फिर भी इन दोनों में अन्तर क्या है?

उत्तर– उपदेश देने की विधि का।

11. लेखक के अनुसार कौन-सा साहित्य चिरायु हो सकता है?

उत्तर– मानव की मौलिक प्रवृत्तियों पर आधारित साहित्य।

12. लेखक के अनुसार कौन-से भाव मानव के लिए निरर्थक हैं?

उत्तर– वे भाव जो संसार की नश्वरता की सोच हमारे मन और हृदय को प्रभावित करते हैं।

13. मुंशी प्रेमचन्द ने प्रगतिशील लेखक संघ के नाम को गलत क्यों कहा है?

उत्तर– क्योंकि प्रत्येक साहित्यकार स्वभाव से ही प्रगतिशील होता है।

14. पुराने समय में समाज किसका गुलाम था?

उत्तर– धर्म का।

15. प्रेमचन्द के अनुसार आधुनिक साहित्य में कौन-सी प्रवृत्ति अधिक बढ़ रही है?

उत्तर– चरित्र चित्रण निर्माण की।

16. लेखक के अनुसार साहित्य के कौन-से तत्व अनिवार्य हैं?

उत्तर– सौन्दर्य और प्रेम।

17. प्रेमचन्द के अनुसार साहित्यकारों को किस शक्ति का अभाव है?

उत्तर– कर्मशक्ति का।

18. पुराने जमाने में आध्यात्मिक और नैतिकता का आधार क्या था?

उत्तर– केवल धार्मिक उपदेश।

19. प्रेमचन्द के अनुसार साहित्य के मंदिर में किन के लिए स्थान नहीं है?

उत्तर– धन-वैंभव से प्यार रखने वालों के लिए।

20. कलाकार अपनी कला से सौन्दर्य की सृष्टि करके परिस्थितियों को किस के लिए उपयोगी बनाता है?

उत्तर– विकास के लिए।

21. भारतवर्ष में किन को विशेष सम्मान नहीं दिया जाता?

उत्तर– साहित्यकारों को।

22. समाज से अलग होकर साहित्य कार का क्या मूल्य रह जाता है?

उत्तर– शून्य।

23. साहित्य का मूल लक्ष्य क्या है?

उत्तर– व्यक्ति को कर्त्तव्यों के प्रति सचेत करना और अधिकारों प्रति जागरुक करना।

❖ ❖ ❖

5. जीवन और साहित्य में घृणा का स्थान

1. "जीवन और साहित्य में घृणा का स्थान" निबंध के लेखक का नाम क्या है?

उत्तर– मुंशी प्रेमचन्द।

2. "जीवन और साहित्य में घृणा का स्थान" किस वर्ष प्रकाशित हुआ?

उत्तर– सन् 1933 ई. में

3. लेखक के अनुसार वे कौन-से दुर्गुण हैं जिनको मानव से निकाल देने पर यह संसार नरक बन जाएगा?

उत्तर– निंदा, क्रोध एवं घृणा।

4. दुराचारियों पर अंकुश कौन लगाता है?

उत्तर– निंदा का भय।

5. प्रेमचन्द के अनुसार न्याय और सत्य की रक्षा कौन करता है?

उत्तर– क्रोध।

6. पाखंड और धूर्तता का दमन किसके द्वारा होता है?

उत्तर– घृणा द्वारा।

7. प्रेमचन्द के अनुसार निन्दा, क्रोध और घृणा कब दुर्गुण बन जाते हैं?

उत्तर– जब हम इन का दुरुपयोग करते हैं।

8. दया, करुणा, प्रशंसा और भक्ति कब दुर्गुण बन जाते हैं?

उत्तर– जब इनका दुरुपयोग किया जाता है।

9. अन्धी दया अपने पात्र को क्या बना देती है?

उत्तर– पुरुषार्थ हीन।

10. अन्धी करुणा हमें क्या बना देती है?

उत्तर– कायर।

11. अन्धी प्रशंसा हमें क्या बना देती है?

उत्तर– घमण्डी।

12. अन्धी भक्ति हमें क्या बना देती है?

उत्तर– धूर्त।

13. घृणा किस प्रकार की प्रवृत्ति है?

उत्तर– घृणा एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है जो प्रकृति द्वारा आत्म रक्षा के लिए दी गई है।

14. यदि मानव-स्वभाव से घृणा समाप्त हो जाएगी तो मानव का क्या होगा?

उत्तर– उसका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।

15. मानव-हृदय सुन्दर को किस रूप में देखता है?

उत्तर– कल्याणकारी रूप में।

16. मानव-हृदय कुरूप को किस दृष्टि से देखता है?

उत्तर– घृणा की दृष्टि से।

17. महात्मा गांधी किन लोगों से प्यार करते थे?

उत्तर– अछूतों से।

18. लेखक की दृष्टि से कौन सा संग्राम साहित्य कहलाता है?

उत्तर– सुन्दर और कुरूप का संग्राम।

19. प्रेमचन्द की दृष्टि में ब्राह्मण क्या है?

उत्तर– ब्राह्मण कोई समुदाय नहीं है। यह एक महान पद है जिसे पाने के लिए त्याग, सेवा और सदाचारण करना पड़ता है।

20. लेखक ने इस निबन्ध में किस मुकुट की चर्चा की है?

उत्तर– उपन्यास-सम्राट का मुकुट।

21. किस जमाने में मुकुट कोई लुभावनी वस्तु नहीं है?

उत्तर– डिक्टेटरशिप के जमाने में।

❖ ❖ ❖

6. कहानी कला-1

1. "कहानी कला-1" के लेखक का नाम क्या है?

उत्तर– मुंशी प्रेमचन्द।

2. गल्प, आख्यायिक लघु कथा लिखने की परम्परा भारत में कब से चली आ रही है?

उत्तर– प्राचीन काल से।

3. लघु कथाओं में ऋषि-मुनि किन तत्वों का निरूपण करते थे?

उत्तर– आध्यात्मिक एवं नैतिक तत्वों का।

4. कौन सी कहानी असफल मानी गई है?

उत्तर– उपदेशात्मक शैली में लिखी गई कहानी।

5. लेखक के अनुसार धर्म ग्रन्थों में जनशिक्षा का उचित साधन किसे समझा जाता था?

उत्तर– कहानियों को।

6. लेखक के अनुसार आजकल आख्यायिका के अन्तर्गत क्या-क्या शामिल है?

उत्तर– प्रेमकथाएँ, यात्रा वृत्तान्त, जासूसी-तिलिस्मी किस्से, अद्घटनाएँ तथा विज्ञान की बातें।

7. लेखक ने किस ग्रन्थ द्वारा यह सिद्ध किया है कि आख्याचिकाओं द्वारा उपदेश दिया जाता था?

उत्तर– कथासरित्सागर द्वारा।

8. "बेताल पचीसी और सिहासन बत्तीसी" किए प्रकार की रचनाएँ हैं?

उत्तर– कहानियों को शृंखला में बांधने की।

9. मध्यकाल में किस विधा की रचनाएँ लिखी गईं?
उत्तर– काव्य और नाटक।
10. किसके द्वारा गुलिस्ताँ बोस्ता की रचना की गई?
उत्तर– शेखसादी द्वारा।
11. लेखक के अनुसार किन देशों में उच्च कोटि की गल्पें रची गईं?
उत्तर– फ्रांस और यूरोप में।
12. अंग्रेजी आलोचक के अनुसार गल्प पढ़ने में कितना समय लगना चाहिए?
उत्तर– पन्द्रह मिनट।
13. प्रेमचन्द के अनुसार कौन-सी कहानी अनुपयोगी समझी जाती है?
उत्तर– जिसमें उपदेश की छाया पड़ जाय।
14. फ्रांसीसी की प्रमुख विशेषता क्या है?
उत्तर– उनमें सरलता की मात्रा अधिक होती है।
15. रूस के किस साहित्यकार की कहानियाँ सर्वोत्तम मानी गई हैं?
उत्तर– काउंट टालस्टाय की।
16. प्रेमचन्द के अनुसार किसकी कहानियों में केवल विलासप्रिय समाज का चित्रण हुआ है?
उत्तर– चेकाफ की कहानियों में।
17. प्रेमचन्द के अनुसार किसकी कहानियों में मनोभावों की दुर्बलता अधिक दिखाई गई है?
उत्तर– डास्टावेस्की की कहानियों में।
18. प्रेमचन्द के अनुसार उपन्यास और कहानी में क्या अन्तर है?
उत्तर– उपन्यास घटनाओं, पात्रों और चरित्रों का समूह है कहानी में एक ही घटना होती है जिसमें अन्य बातें भी रहती हैं।
19. लेखक के अनुसार कहानी की भाषा कैसी होनी चाहिए?
उत्तर– सरल और सुबोध।
20. लेखक ने कहानी की तुलना किसके साथ की है?
उत्तर– ध्रुपद की तान के साथ।
21. लेखक ने उपन्यास की संक्षिप्त परिभाषा क्या दी है?
उत्तर– उपन्यास मानव चरित्र का चित्र है।
22. यथार्थवादियों ने नेकी और बदी के बारे में क्या कहा है?
उत्तर– नेकी का फल बुरा होता है और बदी का फल अच्छा।
23. यूरोपीय विद्वान कहानी का उद्देश्य क्या मानते हैं?
उत्तर– मनोरंजन।
24. मुंशी प्रेमचन्द के अनुसार उपन्यास कौन अधिक पढ़ते हैं?
उत्तर– वे लोग जिनके पास धन और समय दोनों होते हैं।
25. मुंशी प्रेमचन्द के अनुसार कहानियाँ किस के लिए लिखी जाती हैं?
उत्तर– आम जनता के लिए।
26. यदि साहित्य दीपक है तो वह कार्य करता है?
उत्तर– साहित्य का कार्य प्रकाश देना है, समाज का मार्ग-दर्शन करना है।
27. प्रेमचन्द के अनुसार कहाँ के समालोचक कहानियों के अन्त को आवश्यक नहीं मानते?
उत्तर– यूरोप के विद्वान समालोचक।
28. प्रेमचन्द ने अपने किस निबन्ध में उपन्यास और कहानी के अन्तर को स्पष्ट किया है?
उत्तर– कहानी कला-1 में।
29. लेखक कहानी में आदर्श और यथार्थ के बारे में क्या लिखता है?
उत्तर– कहानियों में आदर्श और यथार्थ का मिश्रण हो, ताकि सत्य का उद्घाटन हो सके।

❖ ❖ ❖

7. कहानी कला-2

1. कहानी कला-2 के लेखक का नाम क्या है?
उत्तर– मुंशी प्रेमचन्द।
2. किस के बिना कहानी उत्तम नहीं हो सकती?
उत्तर– परिवर्तन और नवीनता के बिना।
3. हिन्दी कहानी में पहले की तुलना में परिवर्तन और नवीनता किस के प्रभाव से आई है?
उत्तर– पश्चिम के प्रभाव से।
4. पुरानी कहानी की क्या विशेषताएँ थीं?
उत्तर– बहुरूपता, वैचित्रय, रोमांस और कुतूहल।
5. आज की कहानी के विषय क्या हैं?
उत्तर– जीवन की समस्याएँ, मनोविज्ञान तथा अनुभूतियों की बहुलता।
6. पुरानी कहानियाँ किससे सम्बन्धित थीं?
उत्तर– परियों और भूत-प्रेतों से।
7. प्रेमचन्द के अनुसार सत्य किसमें होता है?
उत्तर– आनन्द और सौन्दर्य में।
8. प्रेमचन्द के अनुसार कहानी से कब आनन्द प्राप्त किया जा सकता है?
उत्तर– जब कहानी के पात्रों में तालमेल बिठाया जाता है।
9. कहानी सफलता की कसौटी क्या है?
उत्तर– कहानी के पात्रों के साथ पाठकों का हँसना-रोना।

10. **लेखक के अनुसार साहित्य का प्रमुख गुण क्या है?**
उत्तर– पाठकों को आनन्द प्रदान करना।
11. **प्रेमचन्द के अनुसार मानव जाति की सर्वाधिक विकट पहेली कौन है?**
उत्तर– स्वयं मानव।
12. **प्रेमचन्द के अनुसार कौन-सी वस्तु सत्य नहीं हो सकती?**
उत्तर– वह वस्तु जो आनन्द प्रदान करने में असमर्थ है।
13. **किसलिए मानव संस्कृति का विकास हुआ?**
उत्तर– मानव-संस्कृति का विकास इसलिए हुआ कि मानव स्वयं को समझ सके।
14. **प्रेमचन्द के अनुसार पुरानी आख्यायिका किस प्रकार की होती थी?**
उत्तर– कुतूहल-प्रधान या अध्यात्म-प्रधान।
15. **कहानी के विषय में क्या समझना भूल है?**
उत्तर– यही कि कहानी में यथार्थ जीवन का चित्रण होता है।
16. **ऐसा कौन-सा कारण है कि हम कहानी के पात्रों के साथ हँसने-रोने लगते हैं?**
उत्तर– निजत्व के कारण।
17. **कहानी के पात्रों से हमारा कितने समय में निजत्व हो जाता है?**
उत्तर– एक-दो मिनट में।
18. **किन तत्वों की पूर्ति के लिए कहानी का उदय हुआ?**
उत्तर– जीवन-सत्य, मानवीय अनुभूतियों की गहराई तथा मनोवैज्ञानिकता के उद्‌घाटन के लिए।
19. **लेखक के अनुसार कौन-सी कहानी उत्तम मानी जाती है?**
उत्तर– मनोवैज्ञानिक यथार्थ या सत्य का उद्‌घाटन करने वाली कहानी।
20. **लेखक ने कहानी के लिए घटनाओं की अपेक्षा किसे अधिक महत्त्व दिया है?**
उत्तर– अनुभूति को।
21. **लेखक के अनुसार कहानी का लक्ष्य क्या है?**
उत्तर– पूर्ण चरित्र का चित्रण करना।
22. **लेखक के अनुसार कहानी की शैली कैसी होनी चाहिए?**
उत्तर– विषय के अनुसार।
23. **किन गुणों से कहानी में गध्यात्मकता आती है?**
उत्तर– एक-रूपता, प्रभावात्मकता, तीव्रता तथा संवेदनीयता से।
24. **लेखक के अनुसार कला की खूबी क्या है?**
उत्तर– यही कि वह यथार्थ न होते भी यथार्थ लगे।
25. **किस कहानी से मनोरंजन तो होता है, पर मानसिक तृप्ति नहीं होती?**
उत्तर– तत्व हीन कहानी से।
26. **कहानी को आकर्षक बनाने का उत्तम साधन क्या हो सकता है?**
उत्तर– कहानी में समस्या का समावेश करना।
27. **पाठक कहानी के चरित्रों की अन्तरात्मा में क्या ढूँढता है?**
उत्तर– स्वयं की आन्तरिक भावनाओं को।

❖❖❖

8. कहानी कला-3

1. **'कहानी कला-3' के रचयिता का नाम क्या है?**
उत्तर– मुंशी प्रेमचन्द।
2. **प्रेमचन्द ने अपने बालजीवन की मधुर स्मृतियों में सर्वाधिक मधुर किसे बताया है?**
उत्तर– कहानी को।
3. **लेखक के अनुसार प्राचीन काल से साहित्य की कौन-सी विधा प्रमुख रही है?**
उत्तर– कहानी।
4. **प्राचीन काल में वैचित्र्य और कौतूहल किस रचना में अधिक होते थे?**
उत्तर– कहानियों में।
5. **वर्तमान कहानी में कौन-सी बातों के लिए कोई स्थान नहीं है?**
उत्तर– अस्वाभाविक और काल्पनिक बातों का।
6. **आज का पाठक कहानी के चरित्रों में क्या ढूँढता है?**
उत्तर– चरित्रों की अन्तरात्मा में स्वयं की भावनाओं को।
7. **लेखक के अनुसार कहानियों का जन्म कब हुआ?**
उत्तर– जब मानव ने बोलना सीखा।
8. **प्रेमचन्द के अनुसार मानव की सबसे बड़ी लालसा क्या है?**
उत्तर– कि वह स्वयं कहानी बन जाए और उस का यह सब की जुबान पर हो।
9. **लेखक के अनुसार मानव किनकी कहानियाँ सुनकर प्रसन्न होता था?**
उत्तर– कुत्ते और बिल्लियों की कहानियाँ सुनकर।
10. **लेखक के अनुसार कहानी में कौन-सी विशेषता होती है?**
उत्तर– मनोरंजन प्रदान करने की।
11. **प्राचीन कथा-साहित्य के अन्तर्गत किन पुस्तकों को लिया जा सकता है?**
उत्तर– कथा-सरित् सागर, ईसप की कहानियाँ तथा आलिफ लैला।

12. "वॉर एण्ड पीस" उपन्यास के रचयिता नाम क्या है?
उत्तर– काउंट टालस्टॉय।
13. "ला मिजरे बुल" के लेखक का नाम क्या है?
उत्तर– ह्यूगो।
14. कौन-सी कला मनुष्य को मोहित करती है?
उत्तर– वह कला जिस पर मानव-आत्मा की छाप हो और जो गीली मिट्टी के समान मानव-हृदय के साँचे में पड़कर संस्कृत हो गई हो।
15. प्राचीन कहानियों में किस रस की कमी होती थी?
उत्तर– शिक्षित रुचि की।
16. आधुनिक कहानियों का मुख्य आधार क्या है?
उत्तर– मनोवैज्ञानिक सत्य।
17. वर्तमान कहानियों का किस से प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है?
उत्तर– मनोभावों से।
18. कहानियों में मनोरंजन कैसा होना चाहिए?
उत्तर– साहित्यिक मनोरंजन।
19. कहानी कला का प्रमुख लक्ष्य क्या है?
उत्तर– पाठक की कोमल एवं पावन भावनाओं को प्रोत्साहन करना।
20. कहानी ने लोगों की किस भावना को विकसित किया है?
उत्तर– एकता की भावना को।
21. किस विद्वान ने यह कहा कि प्रत्येक काल्पनिक रचना में मौलिक सत्य विद्यमान होता है?
उत्तर– अफलातूँ ने।

❖❖❖

विविध

1. प्रेमचन्द का जन्म कब हुआ?
उत्तर– 31 जुलाई, 1888 ई. में।
2. प्रेमचन्द का जन्म कहाँ हुआ?
उत्तर– बनारस के पास लमही नामक गाँव में।
3. प्रेमचन्द का बचपन में क्या नाम था?
उत्तर– धनपत राय।
4. प्रेमचन्द के पिता का नाम क्या था?
उत्तर– अजायबराय।
5. प्रेमचन्द की माता का नाम क्या था?
उत्तर– आनन्दी देवी।
6. प्रेमचन्द के चाचा ने प्रेमचन्द का क्या नाम रखा था?
उत्तर– नवाब राय।
7. प्रेमचन्द को तेतर क्यों कहते थे?
उत्तर– क्योंकि उनका जन्म तीन बहनों के बाद हुआ था।
8. प्रेमचन्द के माता-पिता किस रोग से ग्रस्त थे?
उत्तर– संग्रहणी रोग से।
9. प्रेमचन्द के पिता कहाँ नौकरी करते थे?
उत्तर– डाकखाने में डाक मुंशी के पद पर।
10. जब प्रेमचन्द के पिता का देहांत हुआ तब प्रेमचन्द की आयु कितनी थी?
उत्तर– 17 वर्ष।
11. प्रेमचन्द की पहली माता के देहान्त के समय प्रेमचन्द की आयु कितने वर्ष थी?
उत्तर– 8 वर्ष।
12. प्रेमचन्द की विधिवत् पढ़ाई उनकी कितनी आयु में आरम्भ हुई?
उत्तर– पाँच वर्ष की आयु में।
13. प्रेमचन्द ने किस वर्ष मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की?
उत्तर– 1898 ई. में।
14. प्रेमचन्द ने किस स्कूल से आठवाँ दर्जा उत्तीर्ण किया?
उत्तर– गोरखपुर के मिशन स्कूल से।
15. प्रेमचंद ने किस वर्ष इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण की?
उत्तर– 1910 ई. में।
16. प्रेमचन्द ने बी.ए की परीक्षा कब उत्तीर्ण की?
उत्तर– वर्ष 1919 में।
17. कितनी आयु में प्रेमचन्द का पहला विवाह हुआ?
उत्तर– पन्द्रह की आयु में, 1895 ई. को।
18. प्रेमचन्द ने पहली पत्नी का त्याग क्यों कर दिया?
उत्तर– क्योंकि वह बदसूरत और जबान की कड़वी थी।
19. प्रेमचन्द ने दूसरा विवाह किस से किया?
उत्तर– बालविधवा शिवरानी देवी से।
20. प्रेमचन्द ने दूसरा विवाह किस वर्ष किया?
उत्तर– सन् 1906 ई. में।
21. शिवरानी देवी ने 'प्रेमचन्द की जीवनी' किस शीर्षक से लिखी?
उत्तर– प्रेमचन्द घर में।
22. प्रेमचन्द की संतानों के नाम क्या हैं?

उत्तर– श्रीपत राय तथा अमृतराय (दो पुत्र), कमला देवी श्रीवास्तव (बेटी)।

23. प्रेमचन्द ने सर्वप्रथम किस पत्रिका के लिए लिखना आरम्भ किया?

उत्तर– 'जमाना' पत्रिका के लिए।

24. 'जमाना' पत्रिका किस भाषा में प्रकशित होती थी?

उत्तर– उर्दू भाषा में।

25. प्रेमचन्द का कहानी-संग्रह 'सोज़े वतन' किस वर्ष प्रकाशित हुआ?

उत्तर– सन् 1907-1908 में।

26. सोजे वतन किस भाषा में लिखा गया था?

उत्तर– उर्दू भाषा में।

27. 'सोजे वतन' ब्रिटिश सकार द्वारा क्यों जब्त कर लिया गया?

उत्तर– सरकार को इस संग्रह में राजद्रोह की झलक दिखाई दी।

28. प्रेमचन्द रचित उर्दू के उपन्यास बाजारे हुस्न का हिन्दी रूपान्तर किस नाम से हुआ?

उत्तर– सेवासदन (1918 ई.)।

29. प्रेमचन्द रचित 'गोशए आफियत' उर्दू के उपन्यास का हिन्दी में किस नाम से रूपान्तर हुआ?

उत्तर– प्रेमाश्रम (1922 ई.) में।

30. प्रेमचन्द ने बनारस में कब 'सरस्वती प्रेस' की स्थापना की?

उत्तर– सन् 1923 ई. में।

31. प्रेमचन्द की प्रथम कहानी कौन सी मानी जाती है?

उत्तर– सौत।

32. हिन्दी भाषा में रचित प्रेमचन्द का प्रथम उपन्यास कौन-सा है?

उत्तर– कायाकाल्प (1926 ई. में)।

33. प्रेमचन्द रचित 'रंगभूमि' उपन्यास किस वर्ष प्रकाशित हुआ?

उत्तर– 1925 ई. में।

34. प्रेमचन्द द्वारा रचित 'जलवए ईसार' का हिन्दी रूपान्तर वरदान का कब प्रकाशन हुआ?

उत्तर– सन् 1921 में।

35. 'हमखुर्मा व हम सवाब' का हिन्दी रूपान्तर प्रेमचन्द ने किस शीर्षक से 1907 में किया?

उत्तर– प्रेमा अर्थात् दो सखियों का विवाह।

36. प्रेमचन्द का प्रथम उपन्यास किसे माना गया है?

उत्तर– सेवासदन को।

37. प्रेमचन्द द्वारा रचित उपन्यास निर्मला का प्रकाशन कब हुआ?

उत्तर– सन् 1927 में।

38. 'गबन' उपन्यास किस वर्ष प्रकाशित हुआ?

उत्तर– सन् 1931 में।

39. 'प्रतिज्ञा' उपन्यास का प्रकाशन किस वर्ष हुआ?

उत्तर– सन् 1929 में।

40. 'गोदान' उपन्यास किस वर्ष प्रकाशित हुआ?

उत्तर– सन् 1936 ई. में।

41. प्रेमचन्द के अधूरे उपन्यास 'मंगलसूत्र' को किसने पूरा किया?

उत्तर– प्रेमचन्द के पुत्र अमृतराय ने।

42. प्रेमचन्द का अधूरा उपन्यास किस वर्ष प्रकाशित हुआ?

उत्तर– सन् 1948 ई. में।

43. अमृतराय द्वारा अपने पिता प्रेमचन्द पर लिखी जीवनी का नाम क्या है?

उत्तर– कलम का सिपाही।

44. प्रेमचन्द ने सरकारी नौकरी से इस्तीफा कब दिया?

उत्तर– सन् 1921 ई. में

45. प्रेमचन्द ने कौन-कौन से तीन नाटक लिखे?

उत्तर– संग्राम (1923), कर्बला (1924) तथा प्रेम की वेदी (1934)।

46. प्रेमचन्द के किस उपन्यास को ग्रामीण जीवन और कृषि संस्कृति का महाकाव्य कहा जाता है?

उत्तर– गोदान को।

47. जवाहर लाल नेहरू द्वारा लिखित पुस्तक फादर्स लेटार्स टु द डॉटर का हिन्दी अनुवाद प्रेमचन्द ने किस शीर्षक से किया?

उत्तर– पिता के पत्र पुत्री के नाम।

48. प्रेमचन्द के किस उपन्यास में शांता नामक नारी पात्र है?

उत्तर– सेवासदन।

49. प्रेमचन्द के किस उपन्यास में सूरदास और जॉन सेवक दो पात्र है?

उत्तर– रंगभूमि।

50. किस महाराजा ने प्रेमचन्द को सन् 1924 में 400 रुपये मासिक वेतन, मोटर तथा बंगला मुफ्त देने के वादे पर अपने यहाँ बुलाया, लेकिन वे नहीं गए?

उत्तर– अलवर के महाराजा ने।

51. किस वर्ष फिल्म की पटकथा लिखने के लिए प्रेमचन्द बंबई गए थे?

उत्तर– सन् 1934 में।

उत्तर– सन् 1936 को।

53. सन् 1936 में किन दो अन्य महान साहित्यकारों का निधन हुआ?

उत्तर– मैक्सिम गोर्की और शरत्चन्द्र का।

54. 'जागरण' का प्रकाशन किस वर्ष हुआ?

उत्तर सन् 1932 को।

55. प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास 'प्रतिज्ञा' में किस प्रमुख समस्या को उठाया था?

उत्तर– विधवा विवाह की समस्या को।

56. प्रेमचन्द उर्दू में किस नाम से लिखते थे?

उत्तर– नवाबराय के नाम से।

57. प्रेमचन्द ने कुल कितनी कहानियाँ लिखी हैं?

उत्तर– लगभग तीन सौ कहानियाँ।

58. मध्यम वर्ग की कुंठाओं का सफल वर्णन प्रेमचन्द के किस उपन्यास में हुआ है?

उत्तर– गबन एवं निर्मला में।

59. प्रेमचन्द ने अपने किस उपन्यास में हरिजनों की समस्याओं का वर्णन किया है?

उत्तर– कर्म भूमि में।

60. आकार की दृष्टि से प्रेमचन्द का सबसे बड़ा उपन्यास कौन-सा है?

उत्तर– रंगभूमि।

61. प्रेमचन्द ने अपने किस उपन्यास में गांधीवादी विचारों का वर्णन किया है?

उत्तर– कर्मभूमि उपन्यास में।

62. प्रेमचन्द ने 1921-22 ई. में मर्यादा पत्रिका का सम्पादन क्यों किया?

उत्तर– क्योंकि मर्यादा के सम्पादक संपूर्णानन्द जेल चले गए थे।

63. ईश्वरी प्रेमचन्द की किस कहानी का पात्र है?

उत्तर– "नशा" कहानी का।

64. हामिद किस कहानी का पात्र है?

उत्तर– ईदगाह का।

65. ईदगाह कहानी में हामिद की बूढ़ी दादी का नाम क्या है?

उत्तर– अमीना।

66. हल्कू प्रेमचन्द की किस कहानी का पात्र है?

उत्तर– पूस की रात का।

67. हल्कू किस महाजन का कर्जदार था?

उत्तर– सहना का।

68. हल्कू का ...

उत्तर– मुन्नी।

69. अलोपीदीन प्रेमचन्द की किस कहानी का पात्र है?

उत्तर– नमक का दारोगा।

70. नमक का दारोगा के नायक का क्या नाम है?

उत्तर– मुंशी वंशीधर।

71. शंकर किस कहानी का प्रमुख पात्र है?

उत्तर– सवा सेर गेहूँ का।

72. शंकर ने किससे सवा सेर गेहूँ उधार में लिया था?

उत्तर– विप्र महाजन से।

73. आनन्दी किस कहानी की प्रमुख नारी पात्र है?

उत्तर– 'बड़े घर की बेटी' की।

74. आनन्दी के पति का नाम क्या है?

उत्तर– श्रीकंठ।

75. शतरंज के खिलाड़ी किस नवाब के शासन काल की कहानी है?

उत्तर– वाजिद अलीशाह के।

76. किन दो रईसों का सारा समय शतरंज खेलने में व्यतीत होता था?

उत्तर– मिर्जा सज्जाद अली और मिर्जा रोशन अली का।

77. 'रामलीला' के आयोजक का नाम क्या था?

उत्तर– चौधरी साहब।

78. 'आत्माराम' कहानी के प्रमुख पात्र का नाम क्या है?

उत्तर– महादेव।

79. गोदावरी और गोमती प्रेमचन्द के किस उपन्यास के नारी पात्र हैं?

उत्तर– सौत के।

80. प्रेमचन्द द्वारा लिखित लेख दौरे-कदीमः दौरे जदीद का हिन्दी रूपान्तरण अमृतराय द्वारा किस शीर्षक से किया गया?

उत्तर– पुराना जमाना : नया जमाना।

81. प्रेमचन्द टालस्टॉय के साहित्य से कब सम्पर्क में आए?

उत्तर– वर्ष 1914 के आसपास।

82. 'ठाकुर का कुआँ' की प्रमुख नारी पात्र का नाम क्या है?

उत्तर– गंगी।

83. गंगी के पति का नाम क्या है?

उत्तर– जोखू।

84. दो बैलों के मालिक का नाम क्या है?

उत्तर– झूरी काच्छी।

85. 'सद्गति' कहानी में पुजारी का नाम क्या है?

उत्तर– पण्डित घासीराम।

❖ ❖ ❖